

उत्तर (पाठ्यपुस्तक)

पाठ

1

ग्राम श्री

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 11 से 14

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) खेतों में फैली हरियाली में लिपटी रवि की किरणों को 'चाँदी की जाली' कहा गया है।
(ख) हरियाली खेतों में दूर तलक फैली हुई है।
(ग) तिनकों के हरे-हरे तन पर हिल हरित रुधिर झलक रहा है।
(घ) 'तैलाक्त गंध' से तात्पर्य तेल के गंध वाली पौधों से है।
(ङ) जब हमारी दृष्टि दूर आकाश पर पड़ता है, तो मानो ऐसा प्रतीत होता है कि वह हमारे साँवले पृथ्वी की सतह पर झुका हुआ है।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | |
|--------------------------------|-------------------------------------|
| (क) (i) मखमल जैसी | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ख) (ii) चाँदी की सफेद जाली-सी | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (iii) रोमांचित-सी | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (घ) (i) पीली सरसों से | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ङ) (ii) मंजरियों से | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय-

- (क) खेतों में फैली सूर्य की किरणें मानों ऐसी लग रही हैं जैसे चाँदी की कोई चमकदार जाली बिछी हुई हो और ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि गाँव के खेतों में चारों ओर मखमल रूपी हरियाली फैली हुई है।
(ख) प्रस्तुत कविता में 'हरित रुधिर' का प्रयोग नाजुक फसलों के तने में दौड़ता-हिलता हुआ हरे रंग के रक्त के लिए किया गया है।
(ग) जौ और गेहूँ में नई बालियों के आ जाने से हमारी वसुधा रोमांचित प्रतीत हो रही है।
(घ) खेतों में चारों ओर 'तैलाक्त गंध' फैल रही है मानो सरसों पर पीले-पीले फूल आ गए हैं।
(ङ) आमों की मंजरी कवि को स्वर्ण और रजत अर्थात् सुनहरी और चाँदनी रंग जैसी दिखाई पड़ती है।
(च) पतझड़ के कारण पीपल और दूसरे पेड़ के पत्ते झड़ रहे हैं इसलिए कोयल मतवाली होकर अपनी मधुर ध्वनि का रसपान करा रही है।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) प्रस्तुत कविता में खेतों की हरियाली को मखमल-सी कहा गया है अर्थात् यह हरियाली खेतों में उग रहे फसलों का एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करते हैं जिसमें सूर्य की किरणें एक अलग अंदाज में अपनी छटाओं को बिखरेती हैं। ये फसलें जब अपने नाजुक अवस्था से आगे बढ़ती हैं, तो खेतों में कई तरह के विहंगम दृश्य देखने को मिलते हैं और उसी में सरसों के पीली-पीली फूलों की उड़ती भीनी महक संपूर्ण वातावरण को सुगंधित कर देती है।
- (ख) प्रस्तुत कविता में वसंत ऋतु के सौंदर्य का वर्णन किया गया है। इस ऋतु के आगमन के साथ स्वर्ण और रजत रंग के मंजरियों से आम के पेड़ की डालियाँ लद गई हैं। पीपल और अन्य पेड़ के पत्ते झड़ रहे हैं जिससे कोयल मतवाली होकर अपनी मधुर ध्वनि का रसपान करा रही है। कटहल की महक महसूस होने लगी है और जामुन भी पेड़ों पर लद गए हैं। वनों में झरबेरी का अस्तित्व आ गया है। खेतों में अनेक हरी-हरी सब्जियाँ उग आई हैं।
- (ग) कवि ने गाँव को 'हरता जन मन' इसलिए कहा है क्योंकि शरद ऋतु के अंतिम ऋणों में गाँव के मासूम वातावरण में अनुपम शांति का अनुभव हो रहा है, पूरा गाँव शोभायुक्त हो गया है, जिसे देखकर और अहसास करके गाँव के सभी लोग प्रफुल्लित हैं और उनका मन बहुत खिला-खिला सा है।
- (घ) प्रस्तुत कविता में गाँव की हरियाली और प्राकृतिक सौंदर्य व दृश्य का सुंदर चित्रण किया गया है। जब सरदी का आगमन होता है, तो लोग आलसी बनकर सुख से सोए रहते हैं। तारों को देखकर ऐसा आभास हो रहा है, मानो वे सपनों की दुनिया में खोये हैं। इस आकर्षक और मनोहर वातावरण में पूरा गाँव 'मरकत डिब्बे-सा खुला' अर्थात् पन्ना नामक रत्न के जैसा प्रतीत हो रहा है, जो मानो नीला आकाश से आच्छादित है।

व्याकरण-बोध

- (क) श् + य् + आ + म् + अ + ल् + अ
(ख) त् + ऐ + ल् + आ + क् + त् + अ
(ग) स् + व् + अ + र् + ण् + अ
(घ) म् + उ + क् + उ + ल् + इ + त् + अ
(ङ) आ + च् + छ् + आ + द् + अ + न् + अ
- (क) पास (ख) मलिन
(ग) अंबर (घ) स्वर्ण
(ङ) दुर्गंध (च) नगर
- चिह्न** **नाम**
(क) , अल्प विराम
— । योजक, पूर्ण विराम
(ख) — , योजक, अल्प विराम
— । योजक, पूर्ण विराम
(ग) — , योजक, अल्प विराम
— । योजक, पूर्ण विराम

लेखन-अभिव्यक्ति

यह जगत या सृष्टि कर्म प्रधान है। बिना कर्म के कुछ भी संभव नहीं है। कर्म का अर्थ ऐसे कार्यों से है जो परोपकार के उद्देश्य से संपन्न किए जाएँ। परोपकारी कार्यों का अपना अलग ही महत्व है, जो मनुष्य को इस जगत में अलग पहचान दिलवाता है। सृष्टि की सर्वोत्कृष्ट रचना है—मनुष्य। इस दृष्टि से सृष्टि या जगत का महत्व हमारे लिए महत्वपूर्ण है। सृष्टि ने हमारे लिए अनेकों चीजें गढ़ी हैं। जिसका उपयोग हम अपने दैनिक जीवन में करते हैं। इसी रूप में मनुष्य का महत्व सृष्टि के लिए बढ़ जाता है क्योंकि सृष्टि ने जिन चीजों की रचना एक सभ्य समाज के लिए की है, तो मनुष्यों का यह दायित्व है कि उन्हें सँभालकर रखें और उनका उपयोग अपने स्वार्थ के लिए न करके परमार्थ हेतु करें क्योंकि यह बात तो चरितार्थ है कि हम मनुष्यों को सिर्फ अपने कर्म पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए न कि फल पर क्योंकि यदि हमारा कर्म बेहतर है तो फल अवश्य मिलेगा। इसलिए मनुष्यों का परम कर्तव्य है फल की कामना किए बिना कर्म करना।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से सुमित्रानंदन पंत के जीवन, साहित्यिक कृतियों, समाज सेवा, असहाय, निर्बल, दरिद्र लोगों के प्रति सेवा-भावना आदि के विषय में पर्याप्त जानकारी एकत्र करवाएँ और उस जानकारी को उनकी परियोजना पुस्तिका में लिखवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका के सहयोग से सभी छात्र मिलकर छायावाद के प्रमुख स्तंभ कवियों—जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानंदन पंत की कविताएँ संकलित करें और कक्षा में कवि-सम्मेलन का आयोजन करें।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. 'प्रकृति के सान्निध्य में ही जीवन का आनंद है।'— विषय पर अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में आशु संभाषण का आयोजन करवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
4. अध्यापक/अध्यापिका कक्षा के छात्रों को पास के किसी गाँव में जाकर ग्रामीण जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करने को कहें और उस पर आधारित एक प्रस्तुति तैयार करवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
5. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को पुस्तकालय से 'हे! ग्राम देवता नमस्कार' कविता ढूँढ़कर उसे एक चार्ट पर सुंदर अक्षरों में लिखवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 20 से 25

पाठ-बोध

1. मौखिक

(क) तानसेन एक प्रसिद्ध गवैया था।

- (ख) शंकरानंद ने बैजू को राग-विद्या सिखाई।
 (ग) संगीत शिक्षा समाप्त होने पर शंकरानंद ने बैजू से प्रतिज्ञा करवाई कि “राग-विद्या से कभी किसी को हानि नहीं होनी चाहिए।”
 (घ) तानसेन और बैजू में गान युद्ध नगर के बाहर वन में हुआ।
 (ङ) बैजू ने जैसे ही सितार के तारों को हिलाया, हिरन आ गए।
 (च) जैसे ही बैजू ने दूसरी बार अपने संगीत की लहर छोड़ी तो हिरन, जिनके गले में मालाएँ पड़ी थी, वापस आ गए और तानसेन शर्त हार गया।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | | | |
|---------------------------------------|-------------------------------------|----------------------------|-------------------------------------|
| (क) (ii) आगरा | <input checked="" type="checkbox"/> | (ख) (i) बैजू बावरा की | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (iii) बैजू बावरा और तानसेन के बीच | <input checked="" type="checkbox"/> | (घ) (ii) बैजू बावरा के लिए | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय-

- (क) तानसेन की शर्त यह थी कि जो मनुष्य गान-विद्या में मेरी बराबरी न कर सके, वह आगरे की सीमा के अंदर न जाए; और यदि उसने ऐसा किया, तो वह मृत्युदंड का पात्र समझा जाएगा।
 (ख) गीत गाने वाले साधुओं को मृत्युदंड इसलिए दिया गया क्योंकि वे तानसेन के द्वारा गान-विद्या से जुड़े सवालियों का जवाब देने में असमर्थ रहे।
 (ग) बालक बैजू ने रोते हुए बाबा शंकरानंद से कहा, “महाराज! मेरे साथ अनर्थ हुआ है, मुझ पर वज्र गिरा है।”
 (घ) बैजू बावरा तानसेन से बदला इसलिए लेना चाहता था क्योंकि तानसेन के शर्त के कारण ही उसके बाबा को मृत्युदंड की सजा हुई थी।
 (ङ) बैजू बावरा को दरबार की ओर से शर्तें सुनाई गई कि कल प्रातः काल नगर के बाहर वन में तानसेन के साथ तुम्हारा गान-युद्ध होगा। यदि तुम हार गए, तो तुम्हें मृत्युदंड देने का तानसेन को पूर्ण अधिकार होगा और यदि तुमने उसे पराजित किया, तो उसका जीवन तुम्हारे हाथ में होगा।

दीर्घ उत्तरीय-

- (क) बैजू ने तानसेन से बदला लेने के लिए बाबा शंकरानंद के कथनानुसार दस वर्ष तक घोर तपस्या की क्योंकि शंकरानंद ने बैजू से यह वायदा किया कि दस वर्ष तक तपस्या करने के बाद उसे वह शस्त्र मिलेगा, जिससे वह अपने पिता का बदला ले सकता है।
 (ख) बैजू ने अपनी संगीत विद्या से वन में मौजूद सभी प्राणियों को मस्त कर दिया और इस तरह उसने वहाँ पर मौजूद कुछ हिरन के गले में माला डाल दिया। हिरन माला के स्पर्श से सुधि पाते हुए भागकर वन में पेड़ों के पीछे छिप गए और बैजू ने तानसेन के सामने यह शर्त रखी कि वह अपने संगीत से हिरन को वापस बुलाए लेकिन ऐसा करने में तानसेन असमर्थ रहे। पुनः बैजू माला पहने उन हिरन को संगीत के दम पर वापस बुलाने में समर्थ रहे और इस प्रकार तानसेन परास्त हुए।

- (ग) जब बैजू बावरा गाते हुए आगरा के बाजारों में निकला तो पहले दुकानदारों और राहगीरों ने समझा कि मृत्यु इसके सिर पर मँडरा रही है। उन्होंने सोचा कि तानसेन की शर्त की सूचना उसे दे दें, परंतु निकट पहुँचने से पूर्व ही मुग्ध होकर वे सभी अपने आपको भूल गए। बस फिर बैजू आगे-आगे और श्रोताओं का जन सैलाब उसके पीछे-पीछे मुग्ध होकर चलता जा रहा था। यहाँ तक कि जो सिपाही हथकड़ी लेकर बैजू को पकड़ने आए थे वो भी मुग्ध हो गए।
- (घ) गान युद्ध में विजयी होने पर बैजू बावरा ने अकबर से अनुरोध किया कि, जहाँपनाह! मुझे प्राण लेने की इच्छा नहीं है। आप इस निष्ठुर नियम को हटा दीजिए कि जो आगरा की सीमाओं के अंदर गाएगा, यदि वह तानसेन से हार गया, तो मरवा दिया जाएगा।” अकबर ने उस नियम को तत्काल प्रभाव से ही हटा दिया।
- (ङ) बैजू बावरा के बदले को लेखक ने ‘आदर्श बदला’ इसलिए कहा है क्योंकि बैजू का बदला उस पुरानी शर्तों को तोड़कर एक नए प्रतिमान को स्थापित कर रहा था। जहाँ एक ओर तानसेन के शर्त ने बैजू के बाबा की जान ली थी, तो वहीं दूसरी ओर बैजू ने उस शर्त को बदलते हुए तानसेन को जीवनदान दिया था और इस बात से तानसेन आत्मग्लानि के भाव से भर गया था। बैजू के इसी गुण से प्रभावित होकर लेखक ने उसके बदले को ‘आदर्श बदला’ कहा।

व्याकरण-बोध

- (क) बिलख-बिलखकर — भूख से वह बच्चा बिलख-बिलखकर रो रहा है।

(ख) सोचे-विचारे — बिना सोचे-विचारे किसी भी काम को करना व्यर्थ है।

(ग) रात-दिन — तुमने सफलता पाने के लिए रात-दिन पढ़ाई की।

(घ) जीवन-मृत्यु — अपनी तेज रफ़्तार से बाज न आने पर ही आज राकेश जीवन-मृत्यु के बीच झूल रहा है।
- (क) भाववाचक संज्ञा

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(घ) समूहवाचक संज्ञा

(ङ) जातिवाचक संज्ञा

(च) भाववाचक संज्ञा
- (क) (i) उद्देश्य — बैजू बावरा की उँगलियाँ

(ii) विधेय — सितार पर दौड़ रही थी।

(ख) (i) उद्देश्य — साधु की विद्वता की धाक

(ii) विधेय — दूर-दूर तक फैल चुकी थी।

(ग) (i) उद्देश्य — तानसेन ने

(ii) विधेय — मुझे तबाह कर दिया।

(घ) (i) उद्देश्य — बैजू

(ii) विधेय — घबराकर उठा और रोने लगा।
- (क) सरल/साधारण वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य

(घ) संयुक्त वाक्य

(ङ) सरल/साधारण वाक्य

लेखन-अभिव्यक्ति

सुदर्शन प्रेमचंद परंपरा के कहानीकार है। प्रेमचंद की भाँति सुदर्शन भी मूलतः उर्दू में लेखन करते थे व उर्दू से हिंदी में आए थे। जहाँ एक ओर, प्रेमचंद की कहानियों की कथावस्तु सुसंगठित, सोद्देश्यपूर्ण, पात्र जीवंत और व्यावहारिक, संवाद सटीक और सार्थक, आवरण कल्याणकारी व मानवतावादी जान पड़ता है। वस्तुतः प्रेमचंद की कहानियों में व्यक्त विचारों के साथ उनके कला पक्ष में एक चिरंतन आत्म तत्व विद्यमान रहता है जबकि दूसरी ओर, सुदर्शन की कहानियों का मुख्य लक्ष्य समाज व राष्ट्र को स्वच्छ व सुदृढ़ बनाना रहा है। इनकी कहानियों की भाषा में सहजता, स्वाभाविकता, प्रभावपूर्ण और मुहावरों का प्रयोग उल्लेखनीय रहता है।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को इंटरनेट की सहायता से 'सुदर्शन' की अन्य कहानियों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को लियो टॉलस्टॉय की कहानी 'कितनी ज़मीन' और अलिफ लैला की कहानी 'लालच बुरी बला है' पढ़वाएँ साथ ही कितनी ज़मीन के नायक 'दीना' और 'लालच बुरी बला है' कहानी के नायक 'बाबा अब्दुल्ला' के चरित्रों का तुलनात्मक अध्ययन करवाते हुए कक्षा में एक सामूहिक चर्चा का आयोजन करवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों को बचपन में सुनी कहानियों में से किसी एक को कक्षा में सुनाने के लिए प्रेरित करें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
4. यदि बैजू बावरा की मुलाकात बाबा शंकरानंद से न हुई होती, तो शायद जिस कहानी के अंत को आप पढ़ रहे हैं, स्थिति उससे विपरीत होती। बैजू की उम्र महज दस वर्ष की थी जब उसने अपने पिता को खोया था। शायद वह बदले की क्रोधाग्नि में जलता रहता और कुछ गलत फैसले कर बैठता। शायद हम महान संगीतज्ञ बैजू बावरा को उस रूप में न देख पाते जिस रूप में कहानी में दिखाया गया है और शायद तानसेन की मृत्यु के साथ यह कहानी खत्म होती अगर बाबा शंकरानंद ने बैजू से प्रतिज्ञा न करवाई होती। (यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

जीवन-कौशल

- यदि आप अपने मित्र के बड़े भाई की शादी में माता-पिता के साथ सादर आमंत्रित हैं तो वहाँ आपको बड़ों के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना चाहिए तथा छोटों के साथ स्नेहपूर्वक। विवाह के घर में कई तरह के काम होते हैं, तो आप यथासंभव उन कामों में अपना हाथ बटाएँ। हमेशा इस बात का ध्यान रखे कि आपके आचरण से आपके माता-पिता को शर्मिंदा न होना पड़े। शादी वाले घर में कई तरह के व्यंजन परोसे जाते हैं, तो अपनी थाली में उतना ही लें, जितना खा सकें। व्यर्थ का खाना लेकर और उसे बर्बाद कर अन्न का अपमान न करें। इस तरह के कामों और व्यवहार से लोग अपनी प्रशंसा जरूर करेंगे।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

- | | |
|----------|--------|
| • 1. (✗) | 2. (✓) |
| 3. (✓) | 4. (✓) |
| 5. (✗) | 6. (✓) |

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 34 से 37

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) लेखक ने पाठ में गधा, कुत्ता, गाय, बैल, साँड़, घोड़ा, भैंस, बकरियाँ जैसे जानवरों का उल्लेख किया है।
- (ख) गधा को कभी क्रोध करते नहीं सुना गया।
- (ग) झूरी ने अपने बैलों को गया के साथ अपनी ससुराल भेजा।
- (घ) गया के घर से बैलों को उस छोटी लड़की ने आज्ञाद किया जो उन्हें रोटी डाला करती थी।
- (ङ) काँजीहौस से बैलों को एक अत्यंत कठोर मुद्रावाले दड़ियल ने खरीदा।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- (क) (i) मोती ने, हीरा से ☒
- (ख) (ii) हीरा ने, मोती से ☒
- (ग) (iii) दड़ियल ने, झूरी से ☒
- (घ) (ii) दोनो बैलों, ने सोचा ☒
- (ङ) (ii) पत्नी ने, झूरी से ☒

सही उत्तर के सामने 'हाँ' और गलत उत्तर के सामने 'नहीं' लिखना

- (क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं (घ) हाँ (ङ) हाँ

3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) दोनों बैल मूक भाषा में बात कर रहे थे।
- (ख) छोटी लड़की को बैलों के साथ आत्मीयता इसलिए हो गई थी, क्योंकि उसकी सौतेली माँ उसे मारती थी।
- (ग) गया के घर में बैलों की रस्सी उसी छोटी लड़की ने खोली थी, जो उन्हें रोटी खिलाती थी क्योंकि उसे उन बैलों से आत्मीयता हो गई थी।
- (घ) हीरा और मोती ने काँजीहौस की दीवार को अपने सींग से लगातार वार करते हुए गिरा दिया और इस तरह से कई जानवरों को मुक्त किया।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) यदि ईश्वर ने बैलों को वाणी दी होती, तो वे झूरी से पूछते कि हमसे ऐसी कौन-सी गलती हो गई जो तुम हमें खुद से दूर कर रहे हो। तुमने जो कहा, हमने वो किया, अगर इतने से नहीं होता तो हमसे और काम ले लो। हमने कभी चारे-दाने की शिकायत तक नहीं की, जो दिया सिर झुकाकर खा लिया। फिर तुमने हमें इस जालिम के हाथों क्यों बेच दिया।

- (ख) हीरा और मोती पछाँई जाति के सुंदर, काम में चौकस और डील-डौल में ऊँचे बैल थे। दोनों का आचरण और व्यवहार भाईचारा वाला था। वे काफी दिनों से एक-दूसरे के साथ रह रहे थे इसीलिए दोनों एक-दूसरे के मन की बात को समझ जाते थे। दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँधकर अपना प्रेम प्रकट करते थे। दोनों बैल अपनी मित्रता का परिचय देते हुए ज्यादा से ज्यादा बोझ अपने कंधे पर उठाना चाहते थे।
- (ग) दोनों बैलों ने संगठित होकर एक योजना बनाकर साँड़ को भगाया। इस योजना में हीरा ने बताया कि वह साँड़ को सामने से रोकेगा और मोती से कहा कि तुम उस पर पीछे से सींग से वार करना। दोहरी मार पड़ने पर साँड़ भाग खड़ा होगा। साँड़ को भी संगठित शक्ति से लड़ने का अनुभव कम था इसलिए जब दोनों बैलों ने उस पर दो तरफा वार किया तो वह भाग खड़ा हुआ।
- (घ) काँजीहौस में हीरा और मोती के आने से पहले कई भैंसे, बकरियाँ, घोड़े और गधे बंद थे, लेकिन इन सबके सामने चारा का नामोनिशान तक न था। ये सभी जानवर ज़मीन पर मुरदों की भाँति पड़े हुए थे। हीरा और मोती के साथ भी ऐसा ही हुआ और पूरा दिन बीत जाने के बाद जब रात को भी उन्हें भोजन न मिला तो वे विद्रोह की मुद्रा में आ गए और काँजीहौस से भागने का उपाय सोचने लगे।
- (ङ) हीरा और मोती नीलाम होने के बाद काँजीहौस से उस दड़ियल के साथ चल पड़े। खाना-पीना न मिलने के कारण दोनों काफी कमज़ोर हो चुके थे। लेकिन चलते-चलते सहसा उनमें फूँटि आ गई और सारी दुर्बलता भी गायब होने लगी क्योंकि उन्हें रास्ता जाना पहचाना-सा लगा। गया उन्हें इसी रास्ते से ले गया था। रास्ते में उन्हें अपना परिचित कुआँ भी दिखाई दिया और दोनों बैलों की चाल ही बदल गई।
- (च) 'दो बैलों की कथा' कहानी में हीरा और मोती का अपने स्वामी झूरी के प्रति अपार प्रेम को दर्शाया गया है। झूरी द्वारा दोनों बैलों को गया के साथ अपने ससुराल भेजना लेकिन वहाँ से दोनों का भागकर वापस आ जाना दोनों के आपसी प्रेम के साथ-साथ अपने मालिक के प्रति निःस्वार्थ प्रेम की भावना को दर्शाता है। साथ ही हीरा और मोती द्वारा उस छोटी लड़की का ज़िक्र करना भी प्रेम का ही परिचय देता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि पशु प्रेम के भूखे होते हैं और इस कहानी से यह बात प्रमाणित होती है।

व्याकरण-बोध

- (क) विपरीतार्थक शब्द-युग्म

(ख) सजातीय/समवर्गीय शब्द-युग्म

(ग) पुनरुक्त शब्द-युग्म

(घ) समानार्थक शब्द-युग्म

(ङ) निरर्थक शब्द-युग्म
- (क) पुरुषवाचक सर्वनाम

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम

(घ) पुरुषवाचक सर्वनाम

(ङ) पुरुषवाचक सर्वनाम
- (क) (i) अभूतपूर्व (ii) कामचोर (iii) सहनशील (iv) बेसहारा

(ख) (i) अचार — मुझे आम का अचार पसंद है।
आचार — राम का आचार बहुत अच्छा है।

(ii) अपेक्षा — रोहन की अपेक्षा शिवम होशियार है।
उपेक्षा — हमें गरीबों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

- (iii) दिन — आपका दिन शुभ हो।
 दीन — दीन-हीन की सेवा करनी चाहिए।
 (iv) योग्य — रमेश एक योग्य बालक है।
 योग — दो वर्णों के योग से शब्द का निर्माण होता है।

लेखन-अभिव्यक्ति

- रोहित — अरे मित्र सुमित! आज इतनी सुबह रॉकी के साथ टहल रहे हो।
 सुमित — अरे मित्र! रॉकी ने सुबह से ही पूरा घर सर पे उठा लिया है।
 रोहित — कहीं इसकी तबीयत को तो कुछ नहीं हुआ न।
 सुमित — मैंने तो ये सोचा ही नहीं, चलो अभी इसे डॉक्टर के पास लेकर जाता हूँ।
 रोहित — मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।
 सुमित — डॉक्टर साहब, ये देखिए मेरे रॉकी को, सुबह से ही भौंकता जा रहा है।
 डॉक्टर — इसे तो तेज बुखार है। कल इसने क्या-क्या किया?
 सुमित — अरे हाँ! याद आया कल तो रॉकी सारा दिन स्वीमिंग पूल में था।
 डॉक्टर — मैं कुछ दवाईयाँ दे रहा हूँ, इसे समय पर देते रहना।
 रोहित — मित्र! तुम्हें इतनी लापरवाही नहीं करनी चाहिए।
 सुमित — आगे से पक्का ध्यान रखूँगा।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में 'हमें पशुओं के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।' इस विषय पर सामूहिक परिचर्चा का आयोजन करवाएँ साथ ही यह भी सुनिश्चित करें कि इस परिचर्चा में कक्षा के सभी छात्रों की अनिवार्य भागीदारी होगी। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को अपने शहर की किसी गोशाला में जाकर पशुओं के रख-रखाव के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करें साथ ही एक सामूहिक आयोजन करवाएँ जिसमें सभी छात्र अनिवार्य रूप से अपने-अपने अनुभव साझा करें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को महादेवी वर्मा द्वारा पशुओं के संबंध में लिखी गई कहानियाँ पढ़ने को कहें। छात्र इसके लिए पुस्तकालय और इंटरनेट की भी मदद ले सकते हैं। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
4. नोट : छात्र अपनी उत्तर पुस्तिका में तीन पालतू पशु का चित्र चिपकाएँ।

अनुच्छेद -1

टॉमी मेरा प्रिय पालतू पशु होने के साथ-साथ घर के अन्य सदस्यों की तरह एक सदस्य है। वह महज एक महीने का था जब हम उसे घर लेकर आए थे। सब उससे बहुत प्यार करते थे। उसकी हल्की और मीठी आवाज़ से सारा घर गूँज उठता था, लेकिन अब वह छोटा टॉमी छह साल का हो गया है। घर की सुरक्षा से लेकर वफादारी के कई कारनामे तो वह चुटकियों में कर देता है। उसने कभी भी किसी पर वार नहीं किया। जब उसे प्रेम दिखाना होता है, तो अपनी पूँछ हिलाने लगता है और दो पैरों को जमीन पर टिकाकर बैठ जाता है और निरंतर देखता रहता है। टॉमी मेरा प्रिय कुत्ता है जो हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। (यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)

अनुच्छेद -2

गौरी मेरी प्रिय गाय है जिसे पिता जी सोनपुर के पशु मेला से खरीदकर लाए थे। मेरा ज्यादातर समय गौरी की सेवा में ही बीत जाता है। गौरी का स्वभाव अत्यंत सरल है। वह कभी भी ज्यादा हुंकार भरकर चिल्लाती नहीं है। भोजन के समय पर अपने स्थान पर चुपचाप खड़ी होकर अपना भोजन ग्रहण करती है। घर के अन्य मवेशियों के साथ भी उसका मित्रतापूर्ण व्यवहार है, जो उसके हाव-भाव व मूक भाषा से समझ आ जाता है। अगर सचमुच कहें तो गौरी हमारे घर के सभी मवेशियों की तुलना में भाईचारे को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। (यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)

अनुच्छेद -3

हमारी प्रिय पिंगी सारा दिन घर के आँगन से लेकर छत तक घूमती रहती है। पिंगी हमारी खरगोश का नाम है। जैसा नाम वैसी सूरत। कभी-कभी वो हमारे साथ बिस्तर पर भी खेलती है। हमारे घर में आने वाले मेहमानों के साथ भी पिंगी अपने व्यवहार का अच्छा परिचय देती है। हमेशा एक-दूसरे की गोद में खेलती रहती है। हमारे दोस्त भी पिंगी से हमेशा खुश रहते हैं। अपनी छोटी-छोटी किलकारियाँ और अठखेलियाँ से वह सबका मन मोह लेती हैं।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)

5. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को पशु-पक्षियों पर आधारित विभिन्न प्रकार की रचनाओं को पढ़ने के लिए कहें तथा उन रचनाओं के मुख्य बिंदुओं को कक्षा में सुनाने के लिए कहें। छात्र इसके लिए पुस्तकालय और इंटरनेट की भी मदद ले सकते हैं। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

पाठ

4

वह तोड़ती पत्थर

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 40 से 42

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) स्त्री को कवि ने इलाहाबाद के पथ पर देखा।
(ख) कवि ने कविता में गर्मियों के मौसम का वर्णन किया है।
(ग) स्त्री पत्थर तोड़ रही थी।
(घ) बिना छाया वाले पेड़ के नीचे बैठकर वह स्त्री काम कर रही थी।
(ङ) पृथ्वी रुई की तरह जल रही थी।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- (क) (ii) इलाहाबाद ☒ (ख) (i) हथौड़ा ☒
(ग) (iii) पत्थर ☒

3. लिखित

लघु उत्तरीय-

- (क) प्रस्तुत कविता में वह स्त्री जिसकी आँखें झुकी हैं और उसका मन काम में पूर्णरूपेण डूबा है।

- (ख) कविता में कवि ने मौसम के ग्रीष्म रूप की चर्चा की है। दिन चढ़ता जा रहा है, गर्मी बढ़ती जा रही है, हवा गर्म हो गई है और सूर्य अपने प्रचंड रूप में हैं।
- (ग) 'सामने तरु मालिका अट्टालिका प्राकार' पंक्ति का आशय है उस स्त्री के सामने कुछ दूरी पर वह विशेष भवन है, जो परकोटे से युक्त है और जिसे पेड़ों के समूह ने अपने सौंदर्य से विभूषित कर रखा है।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) 'जो मार खा रोई नहीं' पंक्ति से कवि ने स्त्री की उस दशा का वर्णन किया है जब वह अपनी विवशता के सारे उत्पीड़न को अंदर ही अंदर सह लेती है और अपने भाव को कवि पर व्यंजित कर देती है।
- (ख) पत्थर तोड़ने वाली वह स्त्री जिसका रंग सांवला है और उसे पूर्ण यौवन का वरदान प्रकृति जीवन से प्राप्त हो चुका है। उसे यह ज्ञात है कि उसमें यौवन का भार है। अतः लज्जा और संकोच के कारण पलकें झुकी हुई हैं इसके बावजूद वह अपने काम में तल्लीन है। शायद वह अपने भाग्य और भविष्य का निर्माण पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े करने में देखती है। गर्मी के समय में भी वह स्त्री बिना विश्राम किए लगातार अपने काम को संपन्न कर रही है।
- (ग) स्त्री ऊँचे भवन की ओर उस दृष्टि से देखती है जैसे कि उसका जीवन टूटे हुए तारों वाली सितार हो। साथ ही अपनी विवशता के सारे उत्पीड़न को अंदर ही अंदर सह लेती है। ये ऊँचे भवन उस स्त्री की दशा को बयां करते हैं जिसके निर्माण कार्य में उसका योगदान है परंतु उसमें रहने का सुख उसे नहीं मिल सकता।

व्याकरण-बोध

- (क) मन (ख) रूप
(ग) हथौड़ा (घ) तरु
(ङ) लू (च) सितार
- (क) मैंने — सर्वनाम
(ख) वे — सार्वजनिक विशेषण
(ग) वह — सार्वनामिक विशेषण

लेखन-अभिव्यक्ति

वर्तमान समाज अमीरी और गरीबी दो वर्गों में असमान रूप से बँटा हुआ है। जहाँ एक अमीर व्यक्ति अपनी सभी जरूरतों को आसानी से पूरा कर लेता है, तो वही गरीब वर्ग के लोगों के लिए यह अत्यंत कठिन है। तो यदि इससे संबंधित काल्पनिक विषय 'समाज में यदि सभी व्यक्तियों की आवश्यकताएँ सहजता से पूरी हो जातीं, तो यह होता कि समाज के दोनों वर्गों के बीच पनपी असमान खाई मिट जाती और सभी व्यक्ति स्वयं में सक्षम होते। वे अपनी जरूरतों को पूरा कर पाते और एक बेहतर समाज का निर्माण संभव हो पाता। (यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

- अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में इस कविता को सारपूर्ण तरीके से पढ़ाएँ तथा छात्रों से इस कविता के सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करने के लिए कहीं साथ ही इन मूल्यों के कारणों को भी जानने के लिए प्रोत्साहित करें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

2. हमारे आस-पास रहने वाले परिवारों से ही एक समाज का निर्माण होता है। लेकिन समाज में लोगों के रहन-सहन और खान-पान सहित कई तरह की असमानताएँ पाई जाती हैं। आप अपने आस-पड़ोस में देखेंगे कि कोई ऑफिस में काम करता है, तो कोई मजदूरी कर जीवन-निर्वाह कर रहा है। समाज का यह दूसरा वर्ग जो मजदूरी कर रहा है उसके सामने कई तरह की चुनौतियाँ हैं क्योंकि पहला वर्ग जो ऑफिस जा रहा है वह शिक्षित है, जिससे उसकी आय बेहतर है जिस कारण उसका रहन-सहन और खान-पान भी बेहतर है लेकिन एक मजदूर के पास उचित संसाधनों की कमी है, शिक्षा उससे कोसों दूर है जिससे वह वर्तमान समय की उन तमाम सुख-सुविधाओं से दूर है।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

3. छात्र कविता को कंठस्थ कर अपनी उत्तर पुस्तिका में अध्यापक/अध्यापिका के निर्देशानुसार लिखें।

(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

4. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से 'निराला जी' की किन्हीं तीन कविताओं का संकलन करवाएँ और उन कविताओं को उनकी परियोजना पुस्तिका में संलग्न करने को कहें।

(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

5. धरती के उपकार

'धरती' जिसे धरा, वसुधा, पृथ्वी आदि कई नामों से जाना जाता है। वह स्थलीय भूखंड जिस पर हम निवास करते हैं, धरती है। धरती संपूर्ण प्राणीजगत को एक विशिष्ट स्थान देती है जहाँ वह स्वतंत्रतापूर्वक रह सकें। धरती हमारे लिए कई मायनों में लाभदायक है। धरती पर फैले प्राकृतिक संसाधन जिसमें वन, मिट्टी, पर्वत, पठार, मैदान, खनिज संसाधन आदि शामिल हैं, हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं।

धरती पर फैली हरियाली जिसमें पेड़-पौधे, उद्यान आदि शामिल हैं, हमें एक स्वच्छ वातावरण प्रदान करते हैं। पेड़-पौधे ऑक्सीजन का महत्वपूर्ण स्रोत हैं, जो हमारी जीवन अवधि को बढ़ाते हैं। धरती पर मिट्टी का विस्तार कई तरह के फसलों के लिए लाभप्रद है, जहाँ एक ओर काली मिट्टी कपास की उन्नति में सहायक है तो वहीं बलुई मिट्टी कई तरह की हरी शाक-सब्जियाँ और कई तरह के फलों को पोषण देता है। इसके अलावा मिट्टी के विस्तार से चावल, गेहूँ, दलहन, तिलहन, मक्का, ज्वार आदि का भी उत्पादन संभव हो पाया है।

चाय, गन्ना, चावल, कपास आदि के उत्पादन ने कई तरह के उद्योगों को भी बढ़ावा दिया है। जिसके कारण मानव की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। अतः इस आधार पर हम कह सकते हैं कि धरती के उपकार मानव समुदाय के लिए कई मायनों में सुखदायी हैं। बस जरूरत है हमें इसे सँभालकर रखने की।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 50 से 53

पाठ-बोध

1. मौखिक

(क) मरने पर लोगों के जीव स्वर्ग या नरक में जाते हैं।

- (ख) चित्रगुप्त इन जीवों को उनकी गलती के आधार पर स्वर्ग या नरक में भेजते हैं
- (ग) भोलाराम का जीव गायब हो गया था।
- (घ) भोलाराम की पाँच वर्षों से पेंशन नहीं मिली थी।
- (ङ) पेंशन दफ़्तर के अधिकारी ने भोलाराम की पेंशन न बनने का कारण उसके द्वारा भेजी गई दरखास्तों पर वजन का न होना बताया।
- (च) नारद ने अधिकारी को अपनी सुंदर वीणा दी।
- (छ) भोलाराम का जीव पेंशन की दरखास्तों में अटका पड़ा था।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- (क) (i) जबलपुर ☒
- (ख) (i) पाँच ☒
- (ग) (ii) क्योंकि भोलाराम ने एक साल से किराया नहीं दिया था। ☒
- (घ) (i) पाँच साल से ☒

3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) चित्रगुप्त के सामने समस्या यह आई कि भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी थी और यमदूत के साथ यमलोक के लिए खाना भी हो चुका था, लेकिन वह अभी तक पहुँचा नहीं था।
- (ख) नारद जी पृथ्वी लोक पर भोलाराम के जीव को ढूँढ़ने आए।
- (ग) जब नारद जी ने फाइलों पर वीणा के रूप में वजन रख दिया तो भोलाराम की फाइल खुली।
- (घ) भोलाराम का जीव यमदूत को चकमा देकर फाइल में घुस गया क्योंकि उसका मन उन्हीं दरखास्त की फाइलों में लगा था।
- (ङ) चित्रगुप्त ने धर्मराज को रेलवे के बारे में बताया कि जो लोग दोस्तों को फल भेजते हैं वे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौज़री के पार्सलों में मोज़े रेलवे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे के डिब्बे रास्ते में कट जाते हैं। साथ ही राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को भी उड़ाकर कहीं बंद कर देते हैं ताकि जीत उसकी सुनिश्चित हो सकें।
- (च) भोलाराम की पत्नी पेंशन दिलवाने में सहायता करने के लिए नारद मुनि से बोली, “महाराज! आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरुष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेंशन मिल जाए। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाएगा।”
- (छ) नारद मुनि को परेशान हुआ देखकर दफ़्तर के चपरासी ने कहा, “महाराज, आप क्यों इस झंझट में पड़ गए? आप अगर सालभर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लिया, तो अभी काम हो जाएगा।”
- (ज) भोलाराम की मृत्यु का कारण गरीबी की बीमारी थी। घर की परिस्थितियों से भोलाराम चिंतित रहने लगा था। इसी चिंता और भूख ने उनसे उनके प्राण छीन लिए।
- (झ) भोलाराम को पेंशन नहीं मिलने का कारण उसके दरखास्तों पर वजन की कमी थी।
- (ञ) नारद मुनि ने जब भोलाराम के जीव से स्वर्ग चलने को कहा, तो फाइलों से आवाज आई, “मुझे नहीं जाना। मेरा मन पेंशन की दरखास्तों में ही लगा है और मैं अपनी दरखास्तें छोड़कर नहीं जा सकता।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) चित्रगुप्त द्वारा भोलाराम के जीव के संबंध में पूछे जाने पर यमदूत ने कहा, “आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर इस बार भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह त्यागी, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा शुरू की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु तरंग पर सवार हुआ, त्यों ही वह मेरे चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्मांड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।”
- (ख) धर्मराज ने नारद मुनि को नरक में निवास स्थान की समस्या हल होने के विषय में बताते हुए कहा कि, मुनिवर! नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाईं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। उन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें बना दी हैं। इसीलिए यह समस्या तो हल हो गई है।
- (ग) चित्रगुप्त ने रजिस्टर देखकर नारद मुनि को भोलाराम का परिचय देते हुए बताया, “भोलाराम नाम था उसका, जबलपुर शहर के धमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में वह परिवार सहित रहता था। उसकी एक स्त्री थी, दो लड़के और एक लड़की उम्र लगभग पैंसठ साल। सरकारी नौकर था; पाँच साल पहले रिटायर हो गया था। मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया था, इसलिए मकान मालिक उसे निकालना चाहता था। इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है। बहुत संभव है कि मकान मालिक ने भोलाराम के मरते ही उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इसलिए आपको परिवार की तलाश में काफ़ी घूमना पड़ेगा।”
- (घ) भोलाराम की पत्नी ने पूछताछ करने पहुँचे नारद मुनि के सवालों का जवाब देते हुए बताया, “उन्हें गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गए पेंशन पर बैठे, पर पेंशन अभी अतक नहीं मिली। हर दस-पंद्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब ही नहीं आता था और आता तो यही कि तुम्हारे पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में मेरे सब गहने बेचकर हम लोग खा गए। फिर बर्तन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फ़ाके होने लगे थे। चिंता में घुलते-घुलते और भूख में मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।”
- (ङ) नारद मुनि बड़े साहब के दफ़्तर में बिना विज़िटिंग कार्ड दिए घुस गए थे इसलिए बड़े साहब नाराज़ हुए। उसके बाद नारद मुनि ने बड़े साहब को भोलाराम का पेंशन-केस बतलाया। यह सुनकर बड़े साहब बोले, “आप हैं वैरागी; दफ़्तरों के रीति-रिवाज़ नहीं जानते। असल में भोलाराम ने गलती की। भई यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है; भेंट चढ़ानी पड़ती है, आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही हैं; उन पर वजन रखिए।” दोनों के बीच वार्तालाप आगे बढ़ी और वजन के रूप में नारद मुनि की वीणा दाँव पर लगी। और वजन के रूप में वीणा का सौदा तय होते ही भोलाराम के पेंशन का काम आगे बढ़ने लगा।

व्याकरण-बोध

- (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक
- (ख) जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, संबंध कारक
- (ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक
- (घ) जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, संबंध कारक

2. (क) सिफ़ारिश (ख) पाँच (ग) तरंग (घ) व्यंग्य
 (ङ) काफ़ी (च) ब्रह्मांड (छ) पेंशन (ज) दफ़्तर
 (झ) ऊँघना (ञ) झंझट
2. (क) तत्सम शब्द – सूक्ष्म, महोदय, पत्रिका, कविराज, कक्ष, चिकित्सा
 (ख) तद्भव शब्द – पक्का
 (ग) देशज शब्द – हट्टा-कट्टा, मलाई, पिचकारी, दुपट्टा, चारपाई, कतर-ब्योंत, वर्षगाँठ, उखड़वाना, बरौनी
 (घ) विदेशी शब्द – रिटायर, इंजीनियर, इनकम टैक्स, दरख्वास्त, विजिटिंग कार्ड, फ़साद, घड़ीसाज़, ऑपरेशन

लेखन अभिव्यक्ति

हॉकी मैच में चोट लग जाने के कारण किसी छात्र को दर्द होने लगा। इस घटना की 'आपबीती' का वर्णन अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में सुनें। इसका एक उदाहरण निम्नवत है—

आज का दिन पता नहीं अच्छा कहूँ कि ख़राब। पहले तो अच्छे-खासे गोल पर गोल हो रहे थे। सभी को लगा आज मैं अपने दल को जिताकर ही दम लूँगा। अचानक दूसरी टीम के खिलाड़ी ने जब पूरी शक्ति लगाकर मुझे रोकने का प्रयास किया, तो मैं गिरने से बचने के प्रयास में पैर पर चोट लगवा बैठा। पैर में दर्द से बुरा हाल था और दूसरी ओर सभी मित्र अपने ढंग से समस्या और तरह-तरह के निदान सुझा रहे थे। किसी तरह मैं एक पैर पर खड़ा हुआ और दो मित्रों का सहारा लेकर चलने लगा, तो उस पर भी कोई कहने लगा “अरे! बैठ जाओ” किसी ने कहा “व्हील चेयर मँगवा लेते हैं” तो कोई चारपाई मँगवाने की ज़िद कर रहा था ताकि मुझे उस पर लिटाकर ले जाया जाए। कुछ तो यह भी कह रहे थे—अरे! सहारा मत लो। अपने आप चलो, कूदो ताकि पाँव में खून न जम जाए। अंत में अध्यापक जी ने डॉक्टर को बुलवाया और उनकी सलाह पर मुझे अस्पताल ले जाया गया और मेरा इलाज़ प्रारंभ हुआ।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

- छात्र इंटरनेट की सहायता से प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कहानीकारों; जैसे—गोपाल बाबू शर्मा, सुदर्शन, बेढव बनारसी की हास्य-व्यंग्य प्रधान कहानियाँ पढ़ें।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
- अध्यापक/अध्यापिका कक्षा के सभी छात्रों से एकजुट होकर इस कहानी को एक नाटक के रूप में तैयार करवाएँ और उसका मंचन विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर निर्देशानुसार करवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

3. भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार एक ऐसा मुद्दा है जो समाज के लगभग सभी केंद्रीय, राज्य स्तरीय और स्थानीय संस्थाओं में व्याप्त है और पूरे समाज को प्रभावित कर रहा है। बैंकिंग, शिक्षा, रेलवे, रोजगार, कर सेवा सहित कई इकाइयाँ भ्रष्टाचार में संलिप्त हैं जिसके उदाहरण आए दिन न्यूज़ और समाचार-पत्रों के माध्यम से सुनने और देखने को मिलते रहते हैं। कई बार तो स्टिंग ऑपरेशन के जरिये भी भ्रष्टाचार की कई परतें खुलती नज़र आती हैं। ताज़्जुब की बात तो यह है कि भ्रष्टाचार में सबसे ज़्यादा संलिप्तता उन पढ़े-लिखे लोगों की है, जो अफ़सरशाह/नौकरशाह, डॉक्टर, इंजीनियरिंग के पदों पर रहकर देश की सेवा कर रहे हैं।

देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ सदियों से आंदोलन होते आ रहे हैं। चाहे फिर वो जयप्रकाश नारायण जी द्वारा किया गया संपूर्ण क्रांति हो या फिर बोफोर्स कांड के खिलाफ विश्वनाथ प्रताप सिंह द्वारा किया गया आंदोलन हो। पिछले कुछ दशकों की अगर बात की जाए तो अन्ना हजारे का जन लोकपाल विधेयक, स्वामी रामदेव द्वारा काला धन वापसी आंदोलन या फिर मोदी सरकार द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध उठाए गए कदम सभी के मूल में भ्रष्टाचार को खत्म करना ही था।

समय-समय पर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कई सारे प्रयास भी किए गए हैं जिसमें सूचना का अधिकार, 2005, लोकसेवा अधिकार कानून, भ्रष्टाचार-निरोधक कानून, चुनाव सुधार, डिजिटल लेन-देन आदि शामिल हैं। दरअसल यह एक समंवित प्रयास है जिसके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त पारदर्शिता लाकर भ्रष्टाचार को रोका जा सके। लेकिन इसके साथ-साथ नागरिकों को भी भ्रष्टाचार के खिलाफ जागरूक होने की आवश्यकता है ताकि वे अपने नैतिक मूल्यों को पहचान सकें।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

4. अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में 'अच्छे स्वास्थ्य के लिए मानसिक संतुष्टि अनिवार्य है।' विषय पर आशु-संभाषण का आयोजन करवाएँ जिसमें प्रत्येक छात्र की भागीदारी अनिवार्य हो।

(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

5. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से 'भ्रष्टाचार मिटाओ' विषय पर आकर्षक कविता या स्लोगन बनवाएँ और उन्हें उनके द्वारा फीतियों पर लिखकर हिंदी-दिवस या किसी अन्य अवसर पर विद्यालय में जगह-जगह लगवाएँ।

(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

श्रवण/वाचन कौशल – 1

1. अध्यापक/अध्यापिका 'ग्राम श्री' कविता के आधार पर 'ग्रामीण जीवन शहरी जीवन से श्रेष्ठ है।' विषय को रचनात्मक रूप देते हुए कक्षा में 'वाद-विवाद प्रतियोगिता' का आयोजन करवाएँ साथ ही छात्रों को दो समूह में विभाजित करें। पहला समूह 'पक्ष' तथा दूसरा समूह 'विपक्ष' दोनों समूहों के प्रत्येक छात्र अपना पक्ष तथा विपक्ष रखते हुए सूक्ति अथवा कविता की पंक्तियों का भी प्रयोग करें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका प्रश्न में दिए गए विषयों पर छात्रों से व्यंग्यात्मक विज्ञापन तैयार करवाएँ और कक्षा में सभी के समक्ष उसकी प्रस्तुति करवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

3. शीर्षक— पाप और पुण्य

शब्द-युग्म—

पाप — पुण्य,
दाल — रोटी
हँसी — खुशी
कपड़े — वपड़े
मकान — वकान
जेल — वेल

लोग — बाग
गुजर — बसर
बढ़िया — बिढ़िया
बड़े — बड़े
नैतिकता — अनैतिकता
यश — अपयश

4. (क) (iii) इलाहाबाद के पथ पर
(ख) (i) पत्थर तोड़ना
(ग) (iii) गरमी का
(घ) (i) जलती रुई से

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 60 से 64

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) समाचार-पत्र ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार आदि के समाचारों से भरे रहते हैं।
 (ख) आज स्थिति यह है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ एवं फरेब करने वाले फल-फूल रहे हैं।
 (ग) सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।
 (घ) बस ने निर्जन स्थान पर रात के दस बजे जवाब दे दिया।
 (ङ) बस अड़्डे से नई बस कंडक्टर लेकर आया।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- (क) (ii) दोष देखते हैं।
 (ख) (i) महान संस्कृति-सभ्य भारतवर्ष का सपना देखा था।
 (ग) (iii) धर्म के रूप में देखता आ रहा है।



3. पाठांश पर आधारित उत्तर

- (क) यदि हम केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखते हैं, जिनमें धोखा खाया है, तो जीवन कष्टदायक हो जाता है।
 (ख) किसी के द्वारा अकारण सहायता किया जाना, निराश मन को ढाढ़स देना तथा हिम्मत बँधाना आदि घटनाओं को याद करने से मन का विश्वास बढ़ता है।
 (ग) कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में ईश्वर से प्रार्थना की है कि यदि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े, तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति देना कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।
 (घ) हम मनुष्यों द्वारा बनाई और अपनाई गई विधियाँ, जो हमें ही गलत नतीजों पर पहुँचा रहीं हैं, उन्हें बदलकर ही महान भारतवर्ष को पाने की संभावना सफल होगी।

4. लिखित

लघु उत्तरीय-

- (क) जो बुराईयाँ भारतीय समाज को विघटित कर रही हैं, वे हैं- ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी, भ्रष्टाचार, बेईमानी और आरोप-प्रत्यारोप आदि।
 (ख) किसी बड़े आदमी ने लेखक को सुझाव दिया था कि आज के समय में सुखी रहना है, तो निष्क्रिय रहो, क्योंकि कर्मशील व्यक्ति के गुण भुलाकर दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाता है।
 (ग) सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से में इसलिए पड़ी है, क्योंकि वे धर्म और कानून को मानते हैं और इनका उल्लंघन करने से डरते हैं।

(घ) भीतर-ही-भीतर भारतवर्ष अब भी अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ा है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता आदि के मूल्य बने हुए हैं। भले ही वे दब गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं।

(ङ) आज सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता आदि जीवन मूल्य दब गए हैं।

दीर्घ उत्तरीय—

(क) “आदर्शों की मिलन भूमि” कहने से लेखक का यह तात्पर्य है कि हमारे महान भारतवर्ष में आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों का मिलन हुआ है। इनके आदर्शों तथा मूल्यों से कर्णधारों ने इस देश को सभ्य और सांस्कृतिक रूप से संपन्न बनाया है। इन सब के उच्च आदर्श ही भारतीयों के जीवनाधार रहे हैं।

(ख) लेखक ने उन लोगों के आचरण को निकृष्ट आचरण कहा है, जो लोभ, मोह, काम, क्रोध आदि विकारों को अपनाकर उन्हें अपनी प्रधान शक्ति मान लेते हैं तथा अपनी बुद्धि और मन को उन्हीं के इशारों पर छोड़ देते हैं। उसे सुधारने का उपाय यह है कि इन विकारों पर संयम का अकुंश लगाया जाए। भौतिक सुख-सुविधाओं के संग्रह को अत्यधिक महत्त्व न दिया जाए ताकि लोगों की मनोवृत्तियाँ दूषित न हों।

(ग) बुराई की अपेक्षा अच्छाई में रस लेना अधिक उचित है, क्योंकि अच्छाई में रस लेने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जागती है। बुराई में रुचि जाग्रत करना आसान है, क्योंकि लोगों पर दोषारोपण शीघ्रता से कर दिए जाते हैं और स्वयं को कुछ करना भी नहीं पड़ता। दूसरों के अच्छे कार्यों को उजागर करना हमारी प्रवृत्ति में रहना अति आवश्यक है ताकि एक-दूसरे के प्रति सद्भावना और सकारात्मकता बनी रहे।

(घ) (i) लेखक के द्वारा दस के बजाय सौ रुपए दे दिए जाने पर जब टिकट बाबू ने रेल के डिब्बे में स्वयं आकर तथा पहचानकर लेखक को नब्बे रुपए वापिस दे दिए, तो उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा छा गई थी। इसी संदर्भ में यह कथन कहा गया है।

(ii) इस घटना से लेखक को सच्चाई और ईमानदारी जैसी चीजों पर विश्वास हो गया।

(ङ) बस के नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने की योजना इसलिए बनाई थी, क्योंकि उसी सुनसान जगह पर कई बार बसों को लूट लिया गया था। लोगों को लग रहा था कि ड्राइवर और कंडक्टर की डाकुओं से मिली-भगत थी और बस को जानबूझकर रोका गया था। कंडक्टर के वहाँ से चले जाने पर तो यात्रियों का संदेह और भी दृढ़ हो गया कि उनके साथ कुछ बुरा होने वाला है।

(च) लेखक के साथ घटी दो घटनाओं ने उनके मन पर सच्चाई और ईमानदारी की जो अमिट छाप छोड़ी थी, उससे उन्हें विश्वास हो गया था कि भारतवर्ष से सच्चाई और ईमानदारी अभी मिटी नहीं है, बनी हुई है, भले ही दबी हुई है। हमारी कुछ गलत प्रवृत्तियों तथा नियमों ने हमें पथभ्रष्ट अवश्य कर दिया है, परंतु आशा अभी शेष है कि हम अपने मूल्यों का महत्त्व समझते हुए भारत को महान बनाने में कुछ शेष न रखेंगे।

व्याकरण-बोध

- | | | | | |
|---|----------|----------|-------------|----------|
| 1. (क) बहुत | (ख) बड़ी | (ग) बहुत | (घ) बहुत | (ङ) बहुत |
| 2. (क) दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। | | | संबंध कारक | |
| (ख) मैं रेलवे स्टेशन पर टिकट खरीदने गया। | | | अधिकरण कारक | |
| (ग) मैं बस से यात्रा कर रहा था। | | | करण कारक | |

(घ) रात में बस ने जवाब दे दिया।

अधिकरण कारक, कर्ता कारक

(ङ) उसने कहा— “अड्डे से नई बस लाया हूँ।”

कर्ता कारक, अपादान कारक

3. (क) संप्रदान कारक

(ख) संप्रदान कारक

(ग) कर्म कारक

(घ) संप्रदान कारक

(ङ) कर्म कारक

लेखन-अभिव्यक्ति

अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से एक संक्षिप्त अनुच्छेद लिखवाएँ कि सच्चाई और ईमानदारी की एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है। इस आशय का अनुच्छेद निम्नवत है—

सच्चाई और अच्छाई की शक्ति को नकारा नहीं जा सकता। कभी-कभी दूसरों की अच्छाई और सच्चाई दूसरे अन्य लोगों द्वारा की गई वंचना की तथा धोखेबाजी की अनेक घटनाओं पर भारी हो जाती है। प्रायः हमने ऑटोरिक्षा के चालकों द्वारा की गई चालाकी के बारे में सुना है कि किराए के रूप बहुत अधिक माँगे, जानबूझकर लंबे रास्ते से लेकर गए और किसी स्थान विशेष पर जाने से इंकार कर दिया। ये घटनाएँ हमें प्रायः उनके विरुद्ध बोलने के लिए मजबूर कर देती हैं, परंतु एक ऐसे चालक को मैं कभी नहीं भूल सकता/सकती जिसने किसी व्यक्ति का गहनों और जीवनभर की कमाई के रूपों से भरा ब्रीफ़केस उसे ढूँढ़कर वापिस कर दिया और बदले में एक रुपया भी पुरस्कार स्वरूप स्वीकार नहीं किया। यह एक सच्ची घटना है, जो हमारे ही पड़ोसी के साथ घटी। वे अपनी बेटी के विवाह हेतु सोने के गहने और रुपये निकलवा कर लाए थे, क्योंकि उन्हें दिल्ली से बाहर जाकर विवाह करना था। अपनी ही भूल से वे यह ब्रीफ़केस ऑटो में भूल गए थे। पर धन्य है वह सच्चा व्यक्ति, जिसने ब्रीफ़केस खोला और उसी में पड़े विवाह के निमंत्रण-पत्र से पता ढूँढ़कर सामान पहुँचा दिया। पलभर में उनके घर का गमगीन माहौल खुशी में बदल गया। लाखों धन्यवाद पाकर और अनेकों प्रार्थनाओं के बाद भी उसने एक नया पैसा स्वीकार नहीं किया। इसी घटना ने हमारे विचार ऑटो चालकों के प्रति बदल दिए।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के जीवन और साहित्यिक रचनाओं पर आधारित एक प्रेजेंटेशन तैयार करवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका ‘भारतवर्ष का भविष्य उज्ज्वल है’ विषय पर पंद्रह अगस्त अथवा किसी भी राष्ट्रीय पर्व पर छात्रों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से ‘कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती’ विषय पर रामधारी सिंह दिनकर की किसी कविता को कक्षा में सस्वर सुनाने को कहें। अध्यापिका/अध्यापक छात्रों को दिए गए विषय पर कविता लिखने के लिए प्रेरित करें तथा उनसे कविता लिखवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
4. ‘सकारात्मक सोच हर बुराई को मिटा देती है।’ अध्यापक/अध्यापिका इस विषय पर छात्रों से कविता की चार या छह मौखिक पंक्तियाँ लिखवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
5. अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों से उनके द्वारा किसी भी जरूरतमंद व्यक्ति की सहायता किए जाने का वर्णन उनकी परियोजना पुस्तिका में लिखने को कहें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

अध्यापक/अध्यापिका पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्रों को दिखाकर छात्रों से पूछें कि इन चित्रों से उन्होंने क्या सीखा? वे समाज के प्रति कौन-सा कर्तव्य निभा सकते हैं? (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 69 से 72

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) “बेटा! यह मनुष्य नहीं, देवदूत है। ऐसे भले मनुष्य संसार में अधिक नहीं हैं।” यह कथन बूढ़ी स्त्री का एलिशा के लिए है।
- (ख) यरुशलम की ओर अकेले की चले जाने वाले मित्र का नाम एफ़िम था।
- (ग) गिरिजाघर के भीतरी भाग में छत्तीस दीपक जल रहे थे।
- (घ) एफ़िम जब एलिशा के घर पहुँचा तो वह अपनी शहद की मक्खियों की देखभाल कर रहा था।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- (क) (ii) मधुमक्खियाँ पालना ☒
- (ख) (iii) साथ-साथ यरुशलम की तीर्थयात्रा करना ☒
- (ग) (i) तीर्थयात्रा से आत्मा पवित्र होती है। ☒
- (घ) (iii) गिरिजाघर में दीपक के पास पादरी की तरह हाथ फैलाए। ☒
- (ङ) (i) दीन-दुखियों की सहायता करना। ☒

3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) तीर्थयात्रा पर जाते समय भी एफ़िम के मन में शांति इसलिए नहीं थी क्योंकि हर समय उसे घर की चिंता लगी रहती थी।
- (ख) गाँव में अनावृष्टि से त्राहि-त्राहि मची हुई थी।
- (ग) गरीब परिवार के लिए एलिशा दूध के लिए एक गाय, खेत जोतने के लिए एक घोड़ा और अगली फ़सल तक के लिए अनाज का प्रबंध करके वहाँ से चला गया।
- (घ) बूढ़ी स्त्री ने एफ़िम से कहा, “आइए बाबा, हमारे साथ ठहरिए और भोजन कीजिए। हम सदा अपने यहाँ यात्रियों का स्वागत करते हैं। एक यात्री ने ही हमारी प्राण रक्षा की थी।”

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) एफ़िम और एलिशा घनिष्ठ मित्र थे। एफ़िम एक धनी, गंभीर और विचारवान व्यक्ति था। वह अपने परिवार की देखभाल बड़े ध्यान से करता था। जबकि एलिशा न धनवान था न निर्धन। वह मधुमक्खी-पालन कर अपना और अपने परिवार का पेट पालता था। वह बड़ा दयालु और प्रसन्नचित्त व्यक्ति था। वह अपने परिवार और पड़ोसियों के साथ बड़े प्रेम और शांति से रहता था।

- (ख) एफ़िम और एलिशा ने साथ-साथ तीर्थयात्रा पर यरुशलम जाने की प्रतिज्ञा की थी। इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए एलिशा अधिक उत्साहित था और सदैव तैयार रहता था लेकिन एफ़िम को समय न मिल पाता था और उसके पास कुछ-न-कुछ काम हमेशा रहता था।
- (ग) एलिशा के बार-बार समझाने पर एफ़िम तीर्थयात्रा पर जाने के लिए तैयार हो गया। एफ़िम ने अपने साथ बहुत-सा धन लिया। साथ ही अपने पुत्र को प्रत्येक कार्य के संबंध में निश्चित आदेश दिए। लेकिन वही दूसरी ओर एलिशा ने सिर्फ उतना ही धन लिया जितना आवश्यक था। एलिशा ने घर की ओर कोई ध्यान न दिया और प्रसन्न मन से तीर्थयात्रा के लिए चल दिया।
- (घ) एफ़िम यरुशलम पहुँचकर वहाँ के गिरजाघर में प्रार्थना करने पहुँचा। गिरजाघर के भीतरी भाग में छत्तीस दीपक जल रहे थे। दीपकों के प्रकाश के पीछे एफ़िम ने एक वृद्ध व्यक्ति की झलक देखी जो बिलकुल एलिशा की तरह प्रतीत हो रहा था। इस दृश्य को देखकर एफ़िम आश्चर्यचकित रह गया।
- (ङ) एफ़िम द्वारा एलिशा के विषय में पूछने पर उस बूढ़ी स्त्री ने कहा, “मैं नहीं जानती वह कौन था, मनुष्य अथवा देवदूत। वह हम सबसे प्रेम करता था, हम पर दया करता था और यहाँ से बिना अपना नाम बताए ही चला गया। परमात्मा उसका भला करें। यदि वह न आया होता, तो हम सब मर गए होते।”
- (च) मानव सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है और दीन-दुखियों की सहायता ही सच्ची तीर्थयात्रा है। यह बात एफ़िम ने एलिशा से उस दृश्य को याद करते हुए कहा, “जब उसने यरुशलम के गिरजाघर में दीपक की रोशनी के पीछे एलिशा को साक्षात् देखा था।”

व्याकरण-बोध

- (क) अधिकरण कारक
(ख) कर्ता कारक
(ग) संबंध कारक
(घ) संबंध कारक
- कोई – आगरा जाने के लिए कोई न कोई गाड़ी तो मिलेगी।
किसी – किसी ने रामू को घर जाते हुए नहीं देखा।
कुछ – कुछ-कुछ याद आ रहा है अब।
- (क) नहीं (ख) नहीं (ग) मत (घ) न, न (ङ) न
- (क) विधानवाचक वाक्य
(ख) निषेधवाचक वाक्य
(ग) प्रश्नवाचक वाक्य
(घ) विधानवाचक वाक्य

लेखन-अभिव्यक्ति

कोरोना महामारी ने हमें किस हद तक प्रभावित किया, ये बात किसी से छिपी नहीं है। चारों ओर सन्नाटा, रोजमर्रे की चीजों के लिए त्राहि-त्राहि करती जनता, लगातार हो रही मौंते आदि जैसी घटनाओं ने हमें भीतर से झकझोर दिया। ऐसे में एक दृश्य हमेशा मेरी आँखों के सामने आता है और वो दृश्य है हमारे गाँव के प्रतिष्ठित और गुणी व्यक्ति अयोध्या सिंह जी की। जो पूरे लॉकडाउन के दौरान गाँव के सभी तबके के लोगों के लिए जरूरत की सभी चीजों मुहैया कराते रहे। तेल, साबुन, चीनी, चावल, आटा, आलू, दाल हो या फिर सब्जियाँ। बात यही नहीं रुकी उनके प्रयास से मेडिकल किट्स, मास्क, सेनिटाइजर जैसी चीजें भी लोगों के बीच पहुँचती रहीं।

लंबे-चौड़े, गठीले बदन के 40 वर्षीय अयोध्या सिंह जिसे गाँव के लोग 'सरपंच बाबू' या फिर 'काका कहकर पुकारते हैं, कोरोना के दौरान गाँव के लोगों के लिए एक मसीहा से कम साबित नहीं हुए। ऐसी मानवता और आत्मीयता के देवता को मेरा प्रणाम

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से कहें कि वे 'लियो टॉल्सटॉय' की अन्य कहानियाँ पढ़ें तथा अपने मनपसंद कहानी को अपने शब्दों में लिखें और अपनी परियोजना पुस्तिका में लगाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को किसी महान व्यक्ति की मनुष्यता से संबंधित कहानी की कक्षा में सभी के समक्ष सुनाने को कहें, जो उन्होंने बचपन में सुनी हो या फिर लेख, अखबार आदि में पढ़ी हो।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. आज की इस चकाचौंध और भौतिकवादी दुनिया में लोगों के बीच अमीर बनने की होड़ लगी है और इस तरह की मानसिकता के कारण वह कई तरह की संगीन आपराधिक गतिविधियों में संलिप्त होते जा रहे हैं। ब्लैक मार्केटिंग, साइबर अपराध, तस्करी, जुआ की लत, ऑनलाइन गेमिंग जैसी कई ऐसी गतिविधियाँ हैं, जो आज के लोगों में जल्दी अमीर बनने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रही हैं। अगर इस तरह के अपराधों से बचना है, तो सबसे पहले अपनी जरूरतों को कम करना होगा। पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध भरी दुनिया की ओर अग्रसर न होकर हमें अपने मूल सिद्धांतों को अपनाना होगा। सबसे ज्यादा सीखने की जरूरत आज की युवा पीढ़ी को है। जिनमें आतुरता बहुत ज्यादा है और इस तरह के अपराधों में सबसे ज्यादा संलिप्तता वहीं लोगों की है। जिसका सबसे बड़ा उदाहरण कुछ समय पहले रिलीज हुई एक वेब सिरीज 'जामतारा' है।
(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)
4. 'परिश्रमी और निस्वार्थी व्यक्ति जीवन में सफल होते हैं।' इस विषय पर अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों के मध्य वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करें।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
5. भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग एक-साथ मिल-जुलकर रहते हैं। सभी एक-दूसरे के त्योहार में शामिल हाते हैं और उल्लास के साथ आनंद लेते हैं। अगर हिंदू धर्म की बात की जाए तो होली और दीवाली बहुत ही खुशी और अपार हर्ष के साथ मनाई जाती है। इस त्योहार में विभिन्न धर्म और जाति के लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। होली में रंग-गुलाल खेलते हैं और दीवाली में रंगोली बनाते हैं, दीप जलाते हैं और पटाखे जलाते हैं। सभी लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं। उन्हें मिठाईयाँ और अन्य उपहार देते हैं और अपनी खुशी का इजहार करते हैं। सबसे ज्यादा खुशी बच्चों को होती है। नए-नए कपड़े पहनकर अपने दोस्तों के साथ त्योहार का आनंद लेते हैं। क्या अमीर क्या गरीब सभी एक रंग में रंग जाते हैं।
(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 77 से 79

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) प्रस्तुत एकांकी रानी लक्ष्मीबाई के संघर्ष के बारे में लिखी गई हैं।
- (ख) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई थी।
- (ग) अंग्रेजों के साथ रानी लक्ष्मीबाई ने युद्ध किया था।
- (घ) पाँच सौ पड़ान लक्ष्मीबाई की शरण में आए थे।
- (ङ) लक्ष्मी सेना।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | | | |
|-----------------|-------------------------------------|----------------------|-------------------------------------|
| (क) (i) रोहतगढ़ | <input checked="" type="checkbox"/> | (ख) (ii) गुल मुहम्मद | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (iii) कालपी | <input checked="" type="checkbox"/> | (घ) (i) मुंदर के | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) प्रस्तुत एकांकी में लक्ष्मीबाई ने अपने सैनिकों से माता-पिता की, पति की, भाई की, देश की और उन सतियों की लाज रखने को कहा जिन्होंने जौहर पर जौहर किए हैं।
- (ख) रानी लक्ष्मीबाई के पास पठान सैनिक गुल मुहम्मद के नेतृत्व में नौकरी की चाह में आए थे।
- (ग) रानी लक्ष्मीबाई ने पठानों के साथ धर्मपूर्ण व्यवहार का पालन करते हुए उन्हें नौकरी देने के आदेश दिए साथ ही गुल मुहम्मद को उनका सरदार बनाने की बात की।
- (घ) कालपी में राव साहब और तात्या टोपे की सेनाएँ तैनात थी।
- (ङ) कालपी जाने के लिए जूही और काशीबाई तैयार थी। रानी लक्ष्मीबाई ने जूही से कहा, “तुम्हारे नाम की महक और देश की मुक्ति का मिलन हो।” साथ ही काशीबाई से कहा, “काशी, तू स्वराज्य का तीर्थ बने।”
- (च) रानी लक्ष्मीबाई ने वरिष्ठानजू से कहा, “वरिष्ठानजू, तुमको लाल भाऊ के साथ किले के पूर्वी बुर्ज के तोपखाने पर रहना है। अंग्रेज वहाँ से झाँसी पर गोली चलाएँगे।”

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) रानी लक्ष्मीबाई का स्वभाव अत्यंत सरल, कोमल, मंजुलता से भरी तथा फ़ौलाद रूपी कठोर था। इन सबसे अलग वह अत्यंत न्यायप्रिय और धर्म का पालन करने वाली वीरांगना थी जिसका परिचय हमें पठान सैनिकों के शरण में आने से लेकर उन्हें नौकरी-पेशा में रखने तक, से मिलता है।
- (ख) रानी लक्ष्मीबाई ने वरिष्ठानजू को लाला भाऊ के साथ किले के पूर्वी बुर्ज के तोपखाने पर तैनात किया। मुंदर को दल के साथ दीवान दूल्हाजू के साथ ओरछा फाटक पर तैनात किया। सैयद फाटक पर खुदाबख़्श को, खांडेराव फाटक पर सारगसिंह को, दतिया फाटक पर रामचंद्र तेली को, बड़े गाँव फाटक पर करन काछी और ठाकुर लोगों को तथा सागर खिड़की पर पीर अली को तैनात किया।

(ग) रानी लक्ष्मीबाई ने स्वयं को किले के भीतर और बाहर दोनों जगहों पर काम करने के लिए रखा। वह स्वयं को नगर की गलियों में घूम-घूमकर जनता को सचेत रखने का भार दिया। साथ ही अंग्रेजों के गोलों से नगर में आग लगने पर उसको बुझाने का प्रबंध स्वयं के जिम्मे रखा। इसके अलावा, लोगों के लिए भोजन का प्रबंध करने की जिम्मेदारी उन्होंने स्वयं के कंधे पर रखा।

(घ) रानी लक्ष्मीबाई ने गोलीबारी के बारे में उपरि निर्देश देते हुए कहा कि तोपें दिन-रात चलेंगी, तो ऐसे में एक ही गोलंदाज लगातार दिन-रात काम नहीं कर सकता इसलिए एक पुरुष गोलंदाज के साथ एक स्त्री गोलंदाज को रखा जाना चाहिए। रसद खाना-पीना और गोला-बारूद देते रहने के लिए स्त्रियाँ काम करेंगी साथ ही दीवारों या बुर्जों के टूटने-चटकने पर तुरंत स्त्री और पुरुष कारीगर खूना, पत्थर इत्यादि लेकर पहुँचेंगे।

व्याकरण-बोध-

- (क) द्वित्व व्यंजन - मुहम्मद, कच्चा, प्रसन्न, सच्चे
(ख) संयुक्त व्यंजन - मुस्कान, राजा, प्यास, मिथ्य, कष्ट, म्यान
- अंग्रेजों फ़ौलाद गोलंदाज प्रजा तूफ़ान
- (क) तुम दोनों भाई मिलकर दुकान चलओ, मैं तुम्हें कितना लाभ दे रहा हूँ, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए एक ग्यारह होते हैं।
(ख) परीक्षा नजदीक आते देख विद्यार्थियों ने दिन-रात चेन्ना प्रारंभ कर दिया, मैं अच्छे अंक प्राप्त कर सकें।
(ग) रीमा और रानी बेमलब बातों के तूफ़ान उठाती रहती हैं।
(घ) राधा मुंबई में जिस आन-बान के साथ रहती है उसको देखकर नहीं लगता कि वह एक गरीब घर की लड़की है।

लेखन अभिव्यक्ति

हम अपने पूरे परिवार के साथ रामपुर गाँव में रहते हैं। पहाड़ों से घिरे होने के कारण हमारे गाँव के चारों ओर जंगल था। जहाँ से आए दिन कोई-न-कोई जानवर रास्ता भटककर गाँव की सीमा में घुस आता था। इससे गाँव में चीख-पुकार मच जाती। लेकिन एक रात की बात है हम लोग गहरी नींद में थे कि अचानक घोड़ों की टाप सुनाई दी और जब तक हमलोग कुछ समझ पाते हमारे पड़ोसी शर्मा चाचा के घर से चीख पुकार की आवाजें आने लगी। तभी सोहन की तेज आवाज मेरे कानों में पड़ी। बचाओ..... बचाओ डाकू आ गए। हमारा परिवार स्तब्ध रह गया। यह पहली घटना थी जब गाँव में किसी के घर डाकूओं का हमला हुआ था। शर्मा चाचा बैंक मैनेजर थे और सोहन उनका इकलौता बेटा था। आनन-फानन में मैंने इस घटना की सूचना नजदीक के थाने में दे दी। पिता जी ने मेरे इस कार्य की प्रशंसा की। शर्मा चाची की भी आवाज पूरे मुहल्ले में गूँज रही थी। घर के आगे कुछ लोग भी डरते-डरते पेड़ों की ओट में इकट्ठा हो गए। तब तक पुलिस भी पहुँच गई। लेकिन डाकू-लुटेरों ने सामने के दरवाजे और पीछे के दरवाजे बंद कर दिए थे। तभी पिता जी ने पुलिस के साथ कुछ बातचीत की और पुलिस सीधे हमारे घर में आ गई। हमारे घर की छत से शर्मा चाचा के छत पर आसानी से जाया जा सकता था और पुलिस ने इसी तरकीब को अपनाते हुए शर्मा चाचा के घर में प्रवेश किया और तीनों लुटेरों को पकड़ लिया और शर्मा चाचा के परिवार को सुरक्षित बाहर निकाल लाए। शर्मा चाचा ने जब बाहर रोशनी में लुटेरों के साफ चेहरे देखे तो दंग रह गए क्योंकि उनमें से एक गाँव का हरिया था। आखिर दो-तीन घंटे के बाद माहौल शांत हुआ। शर्मा चाचा ने पिता जी का धन्यवाद किया और फिर दोनों बातें करने लगे और मैं सोहन को लेकर अपने घर चला

आया और फिर हम लोग बातें करते हुए कब सो गए पता ही नहीं चला। जब सुबह उठा तो सब कुछ सामान्य था। (यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को इंटरनेट की सहायता से मनोहर वर्मा लिखित नाटक 'हम सब एक हैं।' हरिकृष्ण 'प्रेमी' लिखित नाटक 'मातृभूमि का मान' रामधारी सिंह 'दिनकर' लिखित नाटक 'मगध महिमा' तथा डॉ० चंद्रप्रकाश वर्मा लिखित नाटक 'वीर अभिमन्यु' पढ़ने को कहें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 'रानी लक्ष्मीबाई' एकांकी का मंचन करवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों को 'दुश्मनों से भयभीत होना उचित नहीं है।' विषय पर भाषण प्रतियोगिता में अपने-अपने विचार रखने को कहें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

पाठ

9

श्रीराम की बाल-लीला

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 84 से 87

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) इस कविता में श्रीराम के बाल-रूप का वर्णन किया गया है।
- (ख) इस वाक्यांश से राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न, इन चार बालकों की ओर संकेत किया गया है।
- (ग) राजा दशरथ की तीनों रानियों के नाम थे— कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी।
- (घ) महाकवि तुलसीदास चाहते हैं कि श्रीराम जी अपने बाकी तीनों भाइयों सहित उनके मन-मंदिर में सदा विराजमान रहें।
- (ङ) इसके पहले हमने सूरदास जी की 'बाल-लीला' नामक रचना को पढ़ा है, जिसमें उन्होंने श्रीकृष्ण जी के बाल-रूप का वर्णन किया है।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | | | |
|------------------|-------------------------------------|-----------------------|-------------------------------------|
| (क) (ii) चंद्रमा | <input checked="" type="checkbox"/> | (ख) (iv) प्रतिबिंब | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (iii) ताली | <input checked="" type="checkbox"/> | (घ) (iii) कवितावली से | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) राम अपने भाइयों के साथ घर के आँगन में खेल रहे हैं।
- (ख) छोटे-छोटे सुंदर दाँतों की पंक्ति की तुलना कवि ने कुंदकली के साथ की है।
- (ग) बालकों की मीठी बोली सुनकर कवि का हृदय आनंदविभोर हो जाता है और वे अपने प्राणों को न्योछावर करने को तैयार हो जाते हैं।

(घ) कवि के अनुसार संसार में जीवन जीने का सच्चा फल वही व्यक्ति प्राप्त करता है, जिसने श्रीराम को अपने मन-मंदिर में बसा लिया है।

(ङ) बालकों के हँसने पर कवि को प्रतीत होता है मानो कमल खिल गए हों।

दीर्घ उत्तरीय-

(क) राजा दशरथ के आँगन में राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न, चारों बालक ताली बजाकर, उछल-उछलकर नाच रहे हैं, वे तुमक रहे हैं तथा माताओं को मुदित कर रहे हैं। वे कभी चंद्रमा को पाने की ज़िद करते हैं, कभी नाराज़ होते हैं, कभी हठ करते हैं, तो कभी अपना प्रतिबिंब निहार कर ही डर रहे हैं। इस प्रकार वे अनेक खेल खेल रहे हैं।

(ख) श्रीराम के मुख-मंडल के सौंदर्य का वर्णन करते हुए तुलसीदास जी कहते हैं कि जैसे बादलों में बिजली चमकती है, वैसे ही श्रीराम के मुख खोलने पर दाँतों की काँति दिखाई देती है। उनके मुख पर घुँघराले बालों की लटें लटक रही हैं और कुंडल उनके कपोलों (गालों) को स्पर्श करते हुए सुंदर दिखाई दे रहे हैं। उनके मुख पर आँखें ऐसी लग रही हैं, जैसे भौरों कमल से पराग रस पी रहे हों।

(ग) राजा दशरथ की गोद में बैठे हुए शिशु श्रीराम ने पीले वस्त्र पहने हुए हैं। उनके पैरों में नूपुर हैं। हाथों में आभूषण तथा गले में मोतियों की माला डली हुई है। उनका मुख कमल की भाँति सुशोभित हो रहा है। पिता दशरथ के मन की प्रसन्नता उनके मुखमंडल पर झलक रही है।

(घ) श्रीराम के श्यामल वर्ण की सुंदरता का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि श्यामल शरीर की काँति बादलों के समान है। जब वे हँसते हैं, तो उनके दाँतों की चमक ऐसी लगती है मानो बादलों के बीच बिजली चमक रही हो। यद्यपि उनका श्यामल शरीर धूल से भरा है, फिर भी उनकी सुंदरता कामदेव के सौंदर्य को मात दे रही है।

(ङ) सामान्य बालकों के समान श्रीराम को भाइयों के साथ खेलते देख माताओं का जीवन इसलिए धन्य हो गया, क्योंकि वे चारों भाई आपस में प्रेमपूर्वक खेल रहे हैं और बहुत खुश हैं। ऐसा ही तो हर माँ चाहती है कि उसके सभी बच्चे आपस में मिलकर रहें और उनमें परस्पर प्रेम बना रहे। वे सभी एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करें तथा सुखमय जीवन बिताएँ। चारों बालकों का आपसी स्नेह माताओं के दिल को सुख पहुँचा रहा है।

काव्य-सौंदर्य

1. अनुप्रास अलंकार

(क) 'दमकै दँतियाँ दुति दामिनि ज्यों।'

(ख) 'मातु सबै मन मोद भरै।'

2. रूपक अलंकार

'अरबिंदु सो आननु रूप मरंदु अनंदित लोचन-भृंग पिउँ।' अथवा 'तुलसी मन-मंदिर में बिहरै।'

3. उत्प्रेक्षा अलंकार

'दमकै दँतियाँ दुति दामिनि ज्यों'

4. तीसरा काव्यांश - हिउँ-लिउँ, पिउँ-जिउँ।

चौथा काव्यांश - हरै-धरै, करै-बिहरै।

व्याकरण-बोध

- (क) कबहुँ - कभी (ख) मरंदु - मकरंद (पराग)
 (ग) माँगत - माँगता (घ) अस - ऐसे
 (ङ) सोई - वही (च) बस्यो - बसा
 (छ) नेवछावरि - न्योछावर (ज) बिहरैं - विहार करें
- (क) राजा दशरथ ने राम को गोद में उठा लिया।
 ने - कर्ता कारक को - कर्म कारक में - अधिकरण कारक
 (ख) बालक अपने प्रतिबिंब से डर गए।
 से - अपादान कारक
 (ग) चारों बालक तुलसी के मन-मंदिर में विहार कर रहे हैं।
 के - संबंध कारक में - अधिकरण कारक
 (घ) श्री राम के श्यामल तन की शोभा कमल के सौंदर्य को पराजित करती है।
 के - संबंध कारक की - संबंध कारक
 के - संबंध कारक को - कर्म कारक
 (ङ) रानियाँ बच्चों को देखकर प्रसन्न होती हैं।
 को - कर्म कारक
- (क) राम ने पिता दशरथ को बुलाया।
 (ख) बच्चों ने खेलना प्रारंभ किया।
 (ग) बच्चों ने ताली बजाकर नृत्य किया।
 (घ) माताओं ने बच्चों को गोद में उठा लिया।
 (ङ) तुलसी ने श्रीराम की महिमा का वर्णन किया।

लेखन-अभिव्यक्ति

अध्यापक/अध्यापिका 'बचपन के दिन सबसे सुंदर' शीर्षक पर छात्रों से आठ-दस पंक्तियों की एक कविता लिखवाएँ। इस आशय की कविता निम्नवत है—

बचपन का हर दिन सुहाना होता है,
 हर बच्चा घर की रानी-राजा होता है।
 मम्मी-पापा भी खास कुछ कहते नहीं,
 क्योंकि उन्हें दादा-दादी का डर जो होता है।
 छोटी-छोटी बातों पर आती थी खूब हँसी,
 थोड़ी-सी चोट लगती तो घंटों तक रोना-धोना होता है।
 वो दिन न आएँगे अब कभी पलटकर
 यह सोचकर ही दिल को बहुत दुख होता है।
 (यह प्रतिदर्श उत्तर हैं। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक कौशल—

- अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से महाकवि तुलसीदास जी के जीवन और रचनाओं के संबंध में एक प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन) तैयार करवाएँ।
 (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से चार्ट-पेपर पर भक्तिकाल के प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं के बारे में लिखकर कक्षा के सूचना-पट्ट पर लगवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को इंटरनेट की सहायता से सूरदास के चित्र को अपनी उत्तर पुस्तिका में चिपकाने को कहें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
- सूरदास की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

- | | | | |
|-----------------|----------------|----------------|---------------|
| • सूरसागर | • सूरसरावली | • साहित्य लहरी | • भागवत |
| • नल-दमयंती | • व्याहलो | • नागलीला | • प्राणप्यारी |
| • दशमस्कंध टीका | • गोवर्धन लीला | • सूरसागर सार | • सूरपचीसी |

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 92 से 95

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) काका भुशुंडि को एक साथ अति सम्मानित और अति अपमानित पक्षी कहा गया है।
- (ख) लेखिका के पास जो पशु-पक्षी थे, उनमें से गिल्लू लेखिका की थाली में खाने की हिम्मत करता था।
- (ग) गरमी के दिनों में गिल्लू लेखिका के समीप रखी सुराही पर लेट जाता था जो उसे ठंडक देती थी।
- (घ) गिलहरियों के जीवन की अवधि लगभग दो वर्ष होती है।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | |
|--|-------------------------------------|
| (क) (i) गिलहरी के बच्चे को | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ख) (ii) कौए के रूप में | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (iii) निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका हुआ। | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (घ) (ii) कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया। | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ङ) (i) काजू | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय-

- (क) दूरस्थ प्रियजनों के आने का मधु संदेश कौआ अपनी कर्कश स्वर से देता है।
- (ख) लेखिका के कमरे के बाहर बरामदे में पड़ा मिला गिलहरी का बच्चा जिसे लेखिका ने मरहम पट्टी कर सही किया और उसे एक नया नाम दिया, गिल्लू। इस प्रकार वह गिलहरी का बच्चा जातिवाचक संज्ञा से व्यक्तिवाचक में परिणत हो गया।
- (ग) लेखिका के घर में छोटा जीव गिल्लू था जिसे घर में पले और जीवों जैसे-कुत्ते और बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या थी क्योंकि लेखिका को यह डर था कि कहीं ये बड़े जीव गिल्लू को अपना आहार न बना लें।

(घ) लेखिका के मन में गिल्लू को मुक्त करने का विचार तब आया जब उन्होंने गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखा।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) 'मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो'—से लेखिका की तीव्र अभिलाषा उस छोटे जीव के लिए पैदा हो रही है, जो कभी कूदकर उनके कंधे पर बैठकर उन्हें चौंका देता था तो कभी सोनजूही की लताओं की हरीतिमा में छिपकर बैठ जाता था। सोनजूही में निकली पीली कली को देखकर अनायास लेखिका यह सोचने लगती है कि शायद इस स्वर्णिम कली के बहाने ही वह छोटा जीव चौंकाने ऊपर आ गया हो।
- (ख) घायल गिलहरी के बच्चे को देखकर सबने लेखिका से कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाए। परंतु लेखिका का मन नहीं माना और वह उस गिलहरी के बच्चे को हौले से उठाकर कमरे में लाई, फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगा दिया।
- (ग) पाठ में कौवों के लिए एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। साथ ही यह भी कहा गया है कि जो लोग इस पृथ्वी लोक को छोड़ जाते हैं वह पितृपक्ष में कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होते हैं। जहाँ एक ओर कौवों को प्रियजनों का मधु संदेश भी कर्कश स्वर में देना पड़ता है, तो वहीं कौवा और उसकी ध्वनि काँव-काँव को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाता है।
- (घ) लेखिका ने गिल्लू का घर फूल रखने की एक डलिया में रूई बिछाकर उसे तार की खिड़की पर लटकाकर बनाया। जिसमें गिल्लू आराम से रहता और उसे स्वयं हिलाकर झूलता रहता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और बाहर कुछ देखता रहता और स्वयं कुछ समझता रहता।
- (ङ) गिलहरी के घायल बच्चे को देखकर लेखिका ने पहले तो रूई से बह रहे खून को पोंछा और घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया। उसके बाद रूई की बत्ती को दूध में भिगोकर उसके मुँह के पास ले जाया गया लेकिन उसका मुँह न खुल सका। कई घंटे के उपचार के बाद उसके मुँह में पानी का एक बूँद टपकाया जा सका। इस तरह धीरे-धीरे गिलहरी का बच्चा स्वस्थ होने लगा।
- (च) लेखिका का ध्यान आकृष्ट करने के लिए गिल्लू लेखिका के पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतर आता। गिल्लू इस क्रिया को तब तक करता जब तक कि लेखिका उसे पकड़ने के लिए न उठती।

व्याकरण बोध—

- | | | |
|------------------|-------------|-------------|
| 1. (क) निश्चेष्ट | (ख) अनायास | |
| (ग) दूरस्थ | (घ) खाद्य | |
| (ङ) मरणासन्न | (च) सुलभ | |
| 2. (क) उदार | (ख) भूखा | |
| (ग) चतुर | (घ) प्यासा | |
| (ङ) कठोर | (च) मूर्ख | |
| (छ) उत्कृष्ट | (ज) बूढ़ा | |
| 3. मूलावस्था | उत्तरावस्था | उत्तमावस्था |
| लघु | लघुतर | लघुतम |
| उच्च | उच्चतर | उच्चतम |

अधिक	अधिकतर	अधिकतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
अच्छा	उत्तम	सर्वोत्तम

3.

विग्रह

समास का नाम

(क) काकपुराण	—	काक (कौआ) का पुराण	संबंध तत्पुरुष समास
(ख) खाना-पीना	—	खाना और पीना	द्वंद्व समास
(ग) कागज-पत्र	—	कागज और पत्र	द्वंद्व समास
(घ) मोटर-दुर्घटना	—	मोटर से दुर्घटना	करण तत्पुरुष समास
(ङ) पितृपक्ष	—	पितृ (पूर्वजों) का पक्ष	संबंध तत्पुरुष समास
(च) दिनभर	—	पूरा दिन	अव्ययीभाव समास

लेखन अभिव्यक्ति

अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से पाठ्यपुस्तक में दिए गए विषय पर एक पत्र लिखवाएँ। इस आशय का एक पत्र निम्नवत है—

चाँदनी चौक

नई दिल्ली

तिथि:

संपादक

नवभारत टाइम्स

ब०शा०ज० मार्ग

नई दिल्ली

विषय : गरीब, असहाय, निर्बल मजदूरों की वृद्धावस्था में देखरेख की आवश्यकता

महोदय

मैं एक समाजसेवी संस्था का सदस्य हूँ। आए दिन सड़कों पर किसी गरीब, असहाय मजदूर की मृत काया हमें मिलती है। यह देखकर बहुत दुख होता है। ऐसे लोगों की वृद्धावस्था में देख-रेख करने के लिए कोई भी संस्था काम नहीं कर रही और न ही सरकार ने ऐसे लोगों की कोई विशेष व्यवस्था कर रखी है। इन लोगों ने जीवनभर लोगों के सिर पर छत देने का काम किया है, परंतु पैसों के अभाव में ये सड़कों पर जीते हैं और मर जाते हैं।

आपके अखबार के माध्यम से मैं सरकार के कल्याण विभाग से तथा अन्य समाजसेवी संस्थाओं से यह प्रार्थना करती हूँ कि छोटे-छोटे ही सही, इनके उपचार, खान-पान आदि की ऐसी व्यवस्था कर दी जाए कि इन्हें अपनी वृद्धावस्था सड़कों पर न काटनी पड़े।

भवदीय

क ख ग

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

- अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों को संस्मरणात्मक शैली में लिखे गए गिल्लू पाठ को कथ्य और शिल्प के आधार पर समझाएँ साथ ही छात्रों से इस पाठ को इन्हीं आधारों पर अपनी भाषा में उत्तर पुस्तिका में लिखवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से महादेवी देवी की कुछ रचनाओं को इंटरनेट अथवा पुस्तकालय की सहायता से पढ़ने को कहें और उनमें से उनको जो रचना अच्छी लगी हो उसे उनकी उत्तर पुस्तिका में लिखने को कहें।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को किसी वृद्धाश्रम में ले जाएँ और किसी वृद्ध व्यक्ति से छात्रों की बातचीत करवाएँ। किसी एक के साथ की गई बातचीत को वे अपनी परियोजना पुस्तिका में संवाद रूप में लिखें।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. मनुष्य की तरह पशु-पक्षी भी प्रकृति के अनुपम उपहार हैं। सभी की अपनी-अपनी प्राथमिकताएँ हैं। मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है। वह पशु-पक्षियों की अपेक्षा विकसित अवस्था में है। यदि मनुष्यों पर कोई विपत्ति आती है, तो उसके लिए कई उपाय हैं। अस्पताल से लेकर आश्रय गृह तक कई सुविधाएँ उपलब्ध हैं लेकिन पशु-पक्षियों के लिए इस तरह की व्यवस्था समुचित रूप से नहीं की जा सकी है। भारत में राष्ट्रीय पार्क, वन्यजीव अभयारण्य आदि के माध्यम से इन्हें एक बेहतर आवास सुविधा प्रदान तो की गई है लेकिन बीमारी और किसी दुर्घटना या अवश्यभावी घटना के संबंध में किसी भी प्रकार की ठोस व्यवस्था नहीं की गई है। यदि कोई पक्षी रास्ते पर या वीराने में दम तोड़ रहा है, तो उसे उचित उपचार नहीं मिल पाता है। सरकार को पशु-पक्षियों की दशा में सुधार हेतु कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है ताकि इस प्राणीजगत में इनकी जनसंख्या को बरकरार रखा जा सके और विलुप्तप्राय की सूची में शामिल पशु-पक्षियों को एक बेहतर भविष्य प्रदान किया जाए। सरकार को इसके लिए ठोस कानून बनाने की आवश्यकता है साथ ही सरकार को कुछ ऐसे पशु-पक्षी मित्र को बहाल करना चाहिए, जो इनकी सेवा में तत्पर हों। साथ ही बच्चों के पाठ्यक्रम में कुछ इस तरह के विषयों को समावेशित करना चाहिए ताकि बच्चों सहित उनके परिजनों में भी पशु-पक्षियों के प्रति जागरूकता का संचार हो और वे मनुष्यों की भाँति पशु-पक्षियों के प्रति भी संवेदना रखें। (यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)
4. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को पक्षियों पर लिखी गई सालिम अली की किताब पढ़कर आपस में चर्चा करने को कहें कि पक्षियों से सहानुभूति रखनी क्यों जरूरी है?
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 101 से 103

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) लेखक के वकील मित्र शिवराम के पुत्र की वर्षगाँठ धूमधाम से मनाई जा रही थी।
- (ख) वेंकटेश्वर राव को देखकर लेखक बहुत प्रसन्न हुए।
- (ग) 'सीमा' वेंकटेश्वर राव की पुत्रवधू थी।
- (घ) बैठक की सजावट देखकर लेखक को ऐसा लगा कि, मानो फ़िल्मी शूटिंग करने के लिए अभी-अभी सेट तैयार किया गया हो।
- (ङ) स्वर्ण पदक वेंकटेश्वर राव की पुत्रवधू सीमा को मिला था।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी—

- (क) (iii) रमा
(ख) (ii) छह सौ रुपये
(ग) (i) वेंकटेश्वर राव ने
(घ) (iv) सिविल सप्लाय अफसर थे।
(ङ) (iv) क्योंकि वह उलटे पैर के जूते की आकृति जैसा बना था।



3. लिखित—

लघु उत्तरीय—

- (क) लेखक को नाशे का न्योता उसके मित्र वेंकटेश्वर राव ने दिया था।
(ख) मित्र ने लेखक के हाथ में 'ब्लिट्ज' नामक अखबार थमाया।
(ग) लेखक सुरेश की शादी में इसलिए नहीं गए थे, क्योंकि उन्हें शादी का निमंत्रण-पत्र नहीं मिल पाया था।
(घ) रसोइया रखने का प्रस्ताव लेखक ने रखा।
(ङ) पति को बहू की तारीफ़ के पुल बाँधते देख रमा इसलिए तुनक उठी, क्योंकि उसे लगा कि उसके पति ने अपनी पत्नी को नज़रअंदाज़ कर दिया था। वह भी ज़मींदार घराने की बेटी थी।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) हॉस्टल का लापरवाह वेंकटेश्वर राव तो वैसे का वैसा ही था। हॉस्टल में उसकी सब चीज़ें अस्त-व्यस्त रहती थीं। उसे व्यवस्थित और करीने की आदत नहीं थी। घर की बैठक की सजावट उसकी पत्नी रमा ने की थी, जिसको देखकर लेखक को लगा था कि उसका मित्र अब सुव्यवस्थित हो गया है।
(ख) वेंकटेश्वर राव और उनकी पत्नी रमा ने सीमा की विशेषताएँ बताते हुए कहा कि उसने एम०ए० प्रथम श्रेणी में पास कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। अब पी० एच० डी० कर रही है। डी० लिट्० भी करना चाहती है। वह कॉलेज पढ़ाने जाती है और घर का सारा काम भी करती है। साथ-ही-साथ सास-ससुर दोनों की सेवा भी करती है।
(ग) वेंकटेश्वर राव के भाई के घर की विडंबना यह थी कि वे पचास हजार रुपए दहेज में लेकर मैट्रिक पास बहू को घर लाए थे। यदि उससे कोई भी काम करने के लिए कहता, तो फ़ौरन उलटा जवाब देती थी कि वह घर की बेगारी करने नहीं आई है। वह अपने पिताजी द्वारा दिए गए रुपयों का ज़िक्र करते हुए कहती कि उससे नौकर रख लो।
(घ) राव तो दहेज लेना नहीं चाहते थे, परंतु अपनी पत्नी रमा के दबाव में आकर उन्हें दहेज माँगना पड़ा। इसके फलस्वरूप उन्हें साठ हजार रुपयों के सहित चाँदी का बना 'ऐश-ट्रे', जो उलटे पैर के जूते की आकृति का था, मिला, जिसको उन्होंने अपने थोथे आदर्शों का उपहास करने वाला अविस्मरणीय चिह्न कहा था।
(ङ) दहेज माँगने के लिए रमा ने अपने पति पर दबाव डाला था, जिसके तहत राव ने विवाह में उचित रकम देने की बात सीमा के पिता से कही। रमा उनकी पत्नी थी और पुत्र के विवाह को लेकर उसकी अनेक आकांक्षाएँ थीं। वह स्वयं दहेज की माँग करने की अपेक्षा पति पर दबाव बना रही थी कि वे दहेज की रकम माँगें। उसके आगे वेंकटेश्वर राव झुक गए।

(च) वेंकटेश्वर राव यदि पत्नी के आग्रह के सामने न झुकते, तो वह अपने साथ तो न्याय करते ही, साथ ही सीमा और पूरे समाज की लड़कियों के साथ भी न्याय करते। पत्नी के दबाव में आकर भी किया गया गलत कार्य तो गलत ही कहलाता है। मात्र पत्नी के आग्रह और प्रसन्नता का तो उन्होंने विचार किया, परंतु उन्होंने न स्वयं के विचारों का मान रखा और न दूसरों के।

व्याकरण-बोध

1.	समस्तपद	विग्रह	समास का नाम
(क)	चंद्रमुख	चंद्रमा के समान मुख	कर्मधारय समास
(ख)	चारपाई	चार पैरों का समूह	द्विगु समास
(ग)	गजानन	गज (हाथी) के समान मुख है जिसका अर्थात् गणेश जी	बहुव्रीहि समास
(घ)	त्रिलोचन	तीन आँखें हैं जिसकी अर्थात् शिव	बहुव्रीहि समास
(ङ)	नीलगाय	नीले रंग की गाय	कर्मधारय समास

लेखन-अभिव्यक्ति

अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से 'दहेज के रिवाज को समाप्त करना होगा' विषय पर एक अनुच्छेद लिखवाएँ। इसका एक उदाहरण निम्नवत है—

दहेज को लोग एक रिवाज का नाम देकर न जाने कब से पूरा करते आ रहे हैं। किसी भी कन्या को विवाह के समय जो आभूषण, वस्त्रादि एवं गृहोपयोगी वस्तुएँ उपहार में दी जाती हैं, उन्हें ही दहेज कहा जाता है। प्रायः इसके लोलुप मुँह खोलकर माँग भी कर देते हैं कि जहाँ इतना कुछ दे रहे हैं, वहाँ गाड़ी, मकान, नकद रुपए आदि भी यदि लड़की वाले दे दें, तो कितना अच्छा हो। न मिलने पर लड़की का जीवन कभी-कभी इतना कष्टपूर्ण बना दिया जाता है कि या तो वह स्वेच्छा से ही अपनी इहलीला समाप्त कर लेती है, नहीं तो दहेज की बलिबेदी पर उसकी बलि चढ़ा दी जाती है। अगर इस संसार में नारी को ऐसा अपमानजनक जीवन जीना पड़े, जो मृत्युतुल्य हो अथवा चंद रुपयों अथवा आभूषणों के लिए यातनाएँ सहन करनी पड़ें, तो ऐसे रिवाजों और प्रथाओं पर धिक्कार है और इन्हें तुरंत ही समाप्त करना पड़ेगा। नियमों-कानूनों की अपेक्षा हमें अपने विचारों और आदर्शों को ऊँचा उठाना होगा और इस प्रथा को समूल उखाड़ फेंकना होगा। (यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

- अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से कहें कि वे समाचार-पत्रों के उन शीर्षकों एवं महत्वपूर्ण पंक्तियों को कक्षा में सुनाएँ, जो दहेज प्रथा उन्मूलन संबंधी हैं। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
- अध्यापक/अध्यापिका भविष्य में दहेज न लेने वाले युवकों के आदर्श पात्रों को लेकर छात्रों से एक नुक्कड़ नाटक लिखवाएँ तथा विद्यालय की सदन प्रतियोगिता में उसका प्रदर्शन करवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
- दहेज प्रथा हमारे समाज को जोंक की भाँति खोखला कर रही है। इस समस्या के समाधान के लिए दो प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं—
 - लड़का और लड़की को लेकर जो खाई हमारे समाज में है, उसे पाटना होगा
 - प्रत्येक व्यक्ति तक शिक्षा के स्तर को व्यापक रूप से पहुँचाना होगा, ताकि वे दहेज जैसी कुरीति के कुप्रभावों को समझ सकें।

श्रवण/वाचन कौशल-2

1. अध्यापक/अध्यापिका अपने जीवन में घटी किसी आदर्श मानव मूल्यों के पालन का उदाहरण बन सकने वाली घटना को सुनाएँ या छात्रों से ऐसी घटना सुनें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. पुस्तक में दिए गए उदाहरणानुसार अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को अपने बचपन की कोई विशेषता या ज़िद के बारे में बताने के लिए कहें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. (क) कृषि प्रधान देश कहते हैं।
(ख) करोड़ों की आबादी के लिए अन्न उगाने वाले किसानों के पेट अन्न-विहीन रहते हैं।
(ग) जुलाहा, जीर्ण-शीर्ण वस्त्र।
(घ) रोटी, कपड़ा और मकान।
(ङ) नारायण।
(च) 'स्वान्तः सुखाया'
(छ) 'भारतीय कृषक' या 'दरिद्र नारायण'।
4. (क) (ii) हर व्यक्ति पर अब हम शक करते हैं।
(ख) (ii) आजकल लोग ईमानदार व्यक्ति को मूर्ख समझते हैं।
(ग) (i) बीस साल एक लंबा समय होता है और कभी-कभी लोग इतने समय में बदल जाते हैं, अच्छे से बुरे हो जाते हैं।
(घ) (i) किस्मत ने न जाने कितने परिवर्तन किए कि कुछ से कुछ होता गया।
(ङ) (ii) वह बहुत अच्छी बातें करने लगा प्रशंसायुक्त बातें करने लगा।
(च) (i) पेट भरने के लिए थोड़ा-सा अन्न अगर मिल जाए, तो काफ़ी है।
(छ) (i) कुसूरवार ही पकड़नेवाले को फटकार लगाए।
(ज) (ii) मेरे समधी ने जूते को मेरे सिर पर मारकर अपमानित करने की अपेक्षा चुपचाप हृदय पर ऐसा घाव दिया है, जो कभी नहीं भरेगा।

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 110 से 113

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) मणिपुर राज्य की शास्त्रीय नृत्य शैली का नाम मणिपुरी नृत्य है।
- (ख) पूर्वोत्तर के सात प्रदेशों के लिए उच्च न्यायालय असम के गुवाहाटी में स्थित है।
- (ग) पहाड़ी प्रदेश होने के कारण वर्षा के पानी से बिजली पैदा होने की बड़ी संभवनाएँ हैं।
- (घ) मिजोरम के लोक नृत्य को 'बाँस का नृत्य' कहा जाता है।
- (ङ) असम में 'रोंगाली बिहू' त्योहार लगभग एक महीने तक चलता है।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

(क) (ii) लगभग 1500 मील



(ख) (i) बहुत कम



(ग) (iii) गैडों के कारण



(घ) (i) बिहू



3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) 'सात सहेलियाँ' में पूर्वोत्तर भारत के असम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मिजोरम, मेघालय, मणिपुर और नागालैंड शामिल हैं।
- (ख) चाय की खेती के लिए पहाड़ों की ढलाननुमा ज़मीन सबसे अच्छी मानी जाती है क्योंकि इन ज़मीनों पर चाय की जड़ों में पानी नहीं रुकता है।
- (ग) पूर्वोत्तर भारत में प्रारंभ में सिर्फ असम राज्य के गुवाहाटी तक और नागालैंड राज्य के कोहिमा तक रेल की सुविधा थी लेकिन विगत कुछ वर्षों में पूर्वोत्तर भारत के लगभग राज्यों में रेल का परिचालन प्रारंभ किया जा चुका है जिसमें त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम शामिल हैं।
- (घ) पहाड़ों पर सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं होती है अतएव यहाँ के फसल पूर्णरूप से वर्षा के जल पर निर्भर होते हैं।
- (ङ) मणिपुरी नृत्य मणिपुर राज्य का शास्त्रीय नृत्य है। इस नृत्य शैली में नर्तकियाँ लंबे घेरे का घाघरा पहनकर मंदगति से नृत्य करती हैं। इस नृत्य शैली में कृष्ण और राधा से संबंधित पद रास की शैली में गाए जाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) पूर्वोत्तर भारत के राज्य हिमालय के पूर्वी छोर में स्थित है। यह समस्यत प्रदेश पहाड़ी है इसलिए यहाँ के घर मैदानों की तरह एक कतार में नहीं होते। दो पहाड़ों के बीच जो घाटी प्रदेश होती है वहाँ जनसंख्या का बसाव होता है। इसलिए एक घाटी से दूसरी घाटी तक पहुँचना दुभर होता है। इन लोगों के एक-दूसरे से कटे होने के कारण उनकी भाषा, उनकी पोशाक, उनके रहन-सहन में विविधता देखने को मिलती है।
- (ख) पूर्वोत्तर भारत के सातों प्रदेशों में रहने वालों की तीन सबसे प्रमुख कठिनाइयाँ निम्नलिखित हैं—
- (i) परिवहन की समस्या — एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में समय का अधिक लगना।
- (ii) सिंचाई की समस्या —पहाड़ी क्षेत्रों में सिंचाई की व्यवस्था समुचित न होने से फसलों की पैदावार नहीं हो पाती है।
- (iii) प्रशासनिक व्यवस्था का सुलभ न होना — न्याय व्यवस्था का संकेंद्रण असम की गुवाहाटी में है जहाँ तक पहुँचने में लोगों को कई सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- (ग) पहाड़ी क्षेत्रों में चाय की खेती इसलिए अधिक होती है क्योंकि एक तो वर्षा का जल चाय के पौधों को आसानी से मिलता रहता है और दूसरी बात पहाड़ों की भूमि ढलान होने के कारण वर्षा का जल उनकी जड़ों में जमा नहीं होता जिससे चाय की फसल की पैदावार अच्छी होती है। इसलिए चाय पूर्वोत्तर राज्यों के अलावा दक्षिण भारत के नीलगिरि पर्वतीय प्रदेशों के आस-पास भी अच्छी होती है।
- (घ) पूर्वोत्तर भारत में तरह-तरह की जनजातियाँ पाई जाती हैं। लेकिन इनमें विशिष्टता होने के बावजूद इनकी रंग-बिरंगी पोशाकें, विशिष्ट नृत्य शैली, संगीत और वाद्य यंत्र इनकी सांस्कृतिक विशेषताओं को दर्शाता है जो हमें इस ओर आकर्षित करता है। इनकी नृत्य शैली की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सुंदर पोशाक, आव-भाव और प्रचलित कुशलता है।

व्याकरण-बोध

- (क) पितृ कृष्ण कृपा मृग तृण

(ख) 'निपात' का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य निम्नवत हैं—

(क) तुम प्रगति मैदान 'अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला' देखने गए तो थे।

(ख) तुम भी हमारे साथ बाज़ार चलो।

(ग) हमें कल ही दिल्ली जाना है।

(घ) मेरे पास मात्र पाँच रुपए हैं।

(ङ) चाय के लिए कब तक तुम्हारा इंतज़ार करता।
- (क) मैंने कार्यक्रम बनाया कि नागालैंड घूमने जाया जाए।

(ख) हिमालय के पूर्वी छोर है और उसमें ये सारे प्रदेश स्थित है।

(ग) दो पहाड़ों के बीच में, जो घाटी है उसमें आबादी बसती है।

(घ) अरुणाचल में सिर्फ सैकड़ों की संख्या में बोली जाने वाली भाषाएँ भी है।

(ङ) यहाँ की जो जनजातियाँ हैं, उनका मुख्य भोजन चावल है।

(च) कोहिमा सड़कों द्वारा सभी जिलों से जुड़ी हुई है और नागालैंड की राजधानी भी है।

(छ) मिजोरम के उल्लेखनीय लोकनृत्य को 'बाँस का नृत्य' कहा जाता है।
- (क) अपादान कारक (ख) करण कारक (ग) अपादान कारक

(घ) करण कारक (ङ) अपादान कारक

लेखन अभिव्यक्ति

- 26 जनवरी के अवसर पर राजपथ से निकलने वाली झाँकियों का मनोरम दृश्य देखकर मन प्रफुल्लित हो उठता है। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सभी राज्यों ने अपनी-अपनी झाँकियाँ निकाली। लेकिन मुझे सबसे ज्यादा इंतज़ार पूर्वोत्तर राज्यों की झाँकियों का था। मन बेसब्र हुआ जा रहा था और तभी एक-एक कर पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की झाँकियाँ आँखों के सामने आती गईं। नागालैंड की झाँकी में बाँस से बने सामानों ने सबका मन मोह लिया, तो वहीं असम की झाँकी में प्रस्तुत बिहू नृत्य के दृश्य सभी को रोमांचित करने लगे साथ ही चाय-बागानों का वह मनोरम दृश्य, सभी दर्शकों की नज़रें मानों ठहर-सी गईं। मणिपुर, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मिजोरम आदि सभी राज्यों की झाँकियों में प्रस्तुत रंग-बिरंगी पोशाकें, तरह-तरह की कलाकृतियाँ तथा मन को मोहने वाले कुटीर उद्योगों के दृश्य मानों मन भाव-विभोर हो उठा। सचमुच झाँकी देखकर मजा आ गया

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)
- पूर्वोत्तर राज्यों की जनसंख्या में अधिकांश प्रतिशत जनजातियों की है। इन जनजातियों की अपनी-अपनी विशेषताएँ होती हैं। अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को इंटरनेट, उपयोगी पुस्तकें, पुस्तकालय में उपलब्ध सामग्री के आधार पर इन जनजातियों के संबंध में जानकारी प्राप्त करने को कहें और इसे उनकी भाषा में लिखने को कहें।

(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

रचनात्मक-कौशल

- अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों को अपनी पसंद की किसी एक विधा, कविता, कहानी आदि में अपने साथ घटी किसी विशेष घटना को अपने शब्दों में सुनाने को कहें।

(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
- अध्यापक/अध्यापिका कक्षा के सभी छात्रों से अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखने को कहें कि वह किसी यात्रा पर जाते समय कौन-कौन सी तैयारियाँ करते हैं? सभी छात्र अपने-अपने अनुभव लिखकर बताएँ।

(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

3. 'हॉर्नबिल पर्व' का आयोजन प्रत्येक वर्ष 1 दिसंबर को नागालैंड राज्य की स्थापना दिवस के अवसर पर किया जाता है। इस त्योहार/पर्व की शुरुआत वर्ष 2000 में नागालैंड सरकार द्वारा पहली बार किया गया था। इसका उद्देश्य नागा जनजातियों को आपस में एक-दूसरे से परिचित कराना व देश दुनिया को नागा समाज की संस्कृति से रूबरू कराना था। इस पर्व का आयोजन राज्य पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग नागालैंड द्वारा किया जाता है।

दरअसल, हॉर्नबिल त्योहार का यह नाम उसे हॉर्नबिल चिड़िया के नाम पर मिला हैं। इस चिड़िया को नागा जनजाति में पवित्र माना जाता है। साथ ही इस पक्षी का जिक्र नागाओं की पौराणिक कथाओं में भी मिलता है। भारत में हॉर्नबिल की लगभग 9 प्रजातियाँ पाई जाती है।

हॉर्नबिल पर्व को 'Festival of festivals' भी कहा जाता है। गौरतलब है कि एक लंबे समय से नागालैंड अशांति व हिंसा का शिकार रहा है तथा यह पर्व यहाँ के भटके हुए युवाओं को सही राह पर लाने व यहाँ आपसी शांति बनाए रखने में काफी कारगर रहा है।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 119 से 121

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) खेलने से निर्भयता, उमंग, आत्मानुशासन, समूह में काम करने की प्रवृत्ति और प्रकृति से प्रेम की भावना जाग्रत होती है।
- (ख) खेल तीन प्रकार के होते हैं— स्थलीय खेल, जलीय खेल और हवाई खेल।
- (ग) 'आइस-हॉकी' कनाडा और उत्तरी अमरीका के बर्फ़ीले इलाकों में खेली जाती है।
- (घ) 'के० एफ० आई०' की स्थापना कबड्डी खेल के विकास के लिए की गई। इसका पूरा नाम है— 'कबड्डी फेडरेशन ऑफ इंडिया।'
- (ङ) जलाशयों में क्याकिंग जल-क्रीड़ा आयोजित की जाती है।
- (च) खिलाड़ी पैरासेलिंग खेल में पैरासेल बाँधकर दौड़ता है।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | |
|-------------------------|-------------------------------------|
| (क) (ii) स्थलीय खेल | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ख) (iii) स्केंडेनेविया | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (i) सिंथेटिक फाइबर | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (घ) (iii) ब्रिस्टल | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ङ) (ii) पथारोहण | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) ज़मीन पर खेले जाने वाले खेलों में से पाँच खेलों के नाम हैं— कबड्डी, हॉकी, क्रिकेट, फुटबॉल तथा बास्केट बॉल।
- (ख) स्थलीय, जलीय और हवाई खेलों में स्थलीय खेल कम खर्चीला होता है, क्योंकि इनमें प्रयोग होने वाला ज़रूरत का सारा सामान सस्ता होता है और आसानी से उपलब्ध हो जाता है।
- (ग) पर्वतारोहण के समय कुछ आवश्यक चीज़ों को साथ ले जाना चाहिए, जैसे — ऑक्सीजन-सिलिंडर, स्लीपिंग बैग, धूप का चश्मा, प्राथमिक चिकित्सा की सामग्री, ट्रेकिंग के जूते, नोट बुक, कैमरा इत्यादि।
- (घ) 'औली का मैदान' स्कीइंग के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- (ङ) विजयपत सिंघानिया ने बैलूनिंग के क्षेत्र में 26 नवंबर, 2005 को गर्म हवा के बैलून में उड़ते हुए 21,290 मीटर की ऊँचाई तक पहुँचकर एक नया विश्व रिकार्ड कायम किया।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) खेल जीवन के लिए इसलिए अनिवार्य हैं, क्योंकि इससे हमारा स्वास्थ्य दुरुस्त होता है, और रोज़ाना का व्यायाम भी हो जाता है। इससे समूह में काम करने की प्रवृत्ति का विकास होता है और प्रकृति से प्रेम भी बढ़ता है। खेल हमारे जीवन में रोमांच, साहस और आत्मविश्वास की भावना जगाते हैं।
- (ख) ऊँचे पहाड़ों अथवा हिममण्डित शिखरों पर चढ़ना पर्वतारोहण कहलाता है। ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ने के लिए रास्ता व्यक्ति को स्वयं बनाना पड़ता है। अतः इसकी अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं— निपुणता, कौशल, तत्परता, सजगता, धैर्य, साहस तथा उचित प्रशिक्षण।
- (ग) (i) यह वाक्य हवाई खेलों के संदर्भ में कहा गया है।
(ii) बैलूनिंग के खेलों में विजयपत सिंघानिया ने 21,290 मीटर की ऊँचाई तक पहुँचकर विश्व रिकार्ड बनाया। पार्लिडस्ट्रेंड एवं रिचर्ड ब्रेनसन ने गर्म हवा के बैलून द्वारा जापान से उत्तरी कनाडा तक की 7,671.91 कि॰मी॰ की लंबी यात्रा पूरी की।
- (घ) पैरासेलिंग खेल खुले मैदान में खेला जाता है। इसमें पैरासेल को एक रस्सी द्वारा गाड़ी से बाँधकर खिलाड़ी गाड़ी के पीछे दौड़ता है। पैरासेल में हवा भर जाने से हवा में ऊपर तैरने का आनंद आता है। इसके लिए खुला मैदान, जीप गाड़ी, पैरासेल, रस्सी, हेलमेट, जीवन रक्षक जैकेट आदि की आवश्यकता होती है।
- (ङ) राफ्टिंग को जोखिम से भरा खेल इसलिए कहा गया है, क्योंकि इसमें नदी की तीव्र और चंचल धारा पर नाव को चलाना पड़ता है। यह एक साहसिक कार्य है। इसमें खतरा अधिक होता है। यह प्रायः तीव्र वेग वाली नदियों में ही खेला जाता है। अतः प्रशिक्षण तथा विभिन्न सुरक्षा उपायों के बाद भी नाव को बचाना कठिन होता है तथा चोट लगने की संभावना रहती है।
- (च) नए मनभावन खेलों ने प्रकृति को समझने और चुनौतियों को स्वीकार करने की अद्भुत क्षमता दी है, क्योंकि ये खेल हमारे मन में प्रकृति के भव्य एवं उदार रूप को निकट से देखने एवं समझने का अवसर देते हैं। ये प्रकृति के साथ मित्रवत समय बिताने की प्रेरणा देते हैं तथा व्यक्ति के मन में उत्साह, मैत्री, साहस, धैर्य, सहनशीलता एवं उदारता जैसे गुणों को विकसित करते हैं।

व्याकरण-बोध

1. (क) 'औली का मैदान' स्कीइंग के लिए विश्वप्रसिद्ध है।
(ख) प्रशिक्षकों के बिना पैराग्लाइडिंग नहीं करनी चाहिए।
(ग) नदी की धारा की विपरीत दिशा में नाव चलाना साहसिक कार्य है।
(घ) गर्म हवा की सहायता से गुब्बारे को ऊपर उड़ाया जाता है।
(ङ) कबड्डी का खेल आनंद और उत्साह के लिए खेला जाता है।
2. (क) और = मैं और जीवक सिनेमा देखने गए थे।
(ख) या = तुम दूध पिओगे या मलाई खाओगे।
(ग) लेकिन = वह उत्तीर्ण हो जाता, लेकिन उसने परिश्रम नहीं किया।
(घ) इसलिए = तुम्हें आज हमारे घर आना था, इसलिए मैं आज कहीं नहीं गया।
(ङ) मगर = भीड़ में कितनी ही सावधानी से चलो, मगर जबकतरे जब काट ही लेते हैं।

लेखन-अभिव्यक्ति

अध्यापिका/अध्यापक छात्रों से एक अनुच्छेद लिखवाएँ कि 'यदि विद्यालय में खेल का कालांश (पीरियड) न होता तो'। आपकी सुविधा हेतु उसका एक उदाहरण निम्नवत है—

विद्यालय में खेल का कालांश छात्रों को सबसे अधिक प्रिय होता है। इसकी घंटी उनको बहुत अधिक कर्णप्रिय लगती है। कक्षा से बाहर निकलते छात्रों के चेहरों की रौनक देखते ही बनती है। खेल के मैदान में अपना प्रिय खेल खेलने की उत्सुकता उनके पैरों में नई गति दे देती है। यदि ऐसा कालांश उन्हें न मिलता, तो वास्तव में ही सारा दिन पढ़-पढ़कर वे बुरी तरह उकता जाते। शरीर और मन दोनों पर धीरे-धीरे सुस्ती छा जाती। कक्षा में तो बात करने की भी मनाही रहती है। खेल के कालांश में ही बातें कर पाते हैं, फिर उन्हें पूरा समय चुप रहकर बिताना पड़ता। जो थोड़ा-बहुत व्यायाम खेलने के कारण हो पाता है, वह भी न हो पाता। यह सचमुच उनके साथ अन्याय ही होता।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक कौशल—

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों के लिए विद्यालय की ओर से शैक्षिक-भ्रमण का कार्यक्रम बनाकर 'पर्वतारोहण' का आयोजन करवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से कहें कि वे एवरेस्ट पर विजय पाने वाले किन्हीं तीन साहसी व्यक्तियों के नाम, चित्र व जीवन-परिचय कंप्यूटर आदि से प्राप्त करके अपनी परियोजना पुस्तिका में वर्णित करें।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों के बीच नीचे लिखे विषयों पर आशु संभाषण, परिचर्चा या वाद-विवाद का आयोजन करवाएँ।
(क) विदेशी खेल महँगे और जन-सामान्य के लिए उपलब्ध नहीं है।
(ख) भारत में अच्छे खेल प्रशिक्षकों और खेल महाविद्यालयों की कमी है।
(ग) खेलोग-कूदोगे, बनोगे नवाब। उपर्युक्त विषयों में से किसी एक विषय पर छात्र अपने विचार रख सकते हैं।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

4. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से एक 'खेल-पत्रिका' तैयार करवाएँ, जिसमें विद्यालय में होने वाले खेलों, उनमें भाग लेने वाले छात्रों और पुरस्कारों आदि का वर्णन किया गया हो।
5. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए खेलों के महत्व के संबंध में उनकी उत्तर पुस्तिका में लिखवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
6. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को पर्वतारोहण के समय किन-किन वस्तुओं को साथ लेकर जाना होता है, बताएँ तथा साथ ही इंटरनेट की सहायता से उन सामग्रियों को ढूँढ़कर उनकी उत्तर पुस्तिका में लिखने को कहें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 124 से 127

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) हमें श्वास लेने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है।
- (ख) सर जगदीशचंद्र बोस के पिताजी का नाम भगवानचंद्र बोस था।
- (ग) भारतीय संस्कृति और परंपरा में रचे बसे परिवार में जगदीशचंद्र बोस का पालन पोषण हुआ था।
- (घ) 'शंख बाजै राक्षस भाजै।'

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | |
|--|-------------------------------------|
| (क) (i) रॉयल सोसाइटी ऑफ लंदन के लेक्चर हॉल में | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ख) (i) ब्रोमाइड विष के प्रभाव से | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (iv) कोलकाता के सेंट जेवियर स्कूल से | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (घ) (i) सर | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ङ) (ii) रोग के कीटाणु | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) सर जगदीशचंद्र बोस की प्रथम नियुक्ति कोलकाता के प्रेसिडेंसी कॉलेज में भौतिकी के प्रवक्ता पद पर हुई।
- (ख) सर जगदीशचंद्र बोस ने वेतन लेने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि उन्हें अंग्रेजों की तुलना में कम वेतन दिया जाता था और इसी अन्याय का विरोध करने के लिए सर बोस ने तीन वर्ष तक वेतन नहीं लिया।
- (ग) सर जगदीशचंद्र बोस को सन् 1920 में रॉयल सोसाइटी का सदस्य चुना गया।
- (घ) पेड़-पौधों को पर्याप्त मात्रा में पानी न मिलने पर वे भोजन बनाने में असमर्थ हो जाते हैं और इस कारण उनकी मृत्यु भी हो जाती है।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) सर जगदीशचंद्र बोस ने इंग्लैंड में भौतिकी के प्रसिद्ध वैज्ञानिक लॉर्ड रेले के प्रभाव में आकर चिकित्सा विज्ञान का क्षेत्र त्यागकर भौतिकी विज्ञान के विषय में अध्ययन करना आरंभ कर दिया।
- (ख) सर जगदीशचंद्र बोस ने जब कोलकाता के प्रेसिडेंसी कॉलेज में भौतिकी पढ़ाना प्रारंभ किया तो उन्हें पता चला कि अंग्रेजों की तुलना में उन्हें कम वेतन दिया जा रहा है, तो उन्होंने इस अन्यायपूर्ण रवैये का विरोध करते हुए तीन वर्ष तक बिना वेतन लिए अध्ययन और अध्यापन का कार्य पूरी ईमानदारी के साथ निभाया। उनके इस सत्याग्रह का अंग्रेजों पर प्रभाव पड़ा और उन्हें अंग्रेजों के समान वेतन दिया जाने लगा।
- (ग) विज्ञान के क्षेत्र में सर जगदीशचंद्र बोस के अमूल्य योगदान को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सन् 1917 में 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया था। इस प्रकार वे जगदीशचंद्र बोस से 'सर जगदीशचंद्र बोस' के रूप में प्रसिद्ध हुए।
- (घ) शंख ध्वनि के महत्व को बताते हुए सर जगदीशचंद्र बोस ने आचार्य कपिल देव शर्मा से कहा था कि हमारे यहाँ शंख के विषय में एक कहावत प्रचलित है—'शंख बाजै राक्षस भाजै।' अर्थात् शंख के बजने से राक्षसों को दूर भगाया जाता है। यानी शंख की ध्वनि से व्यक्ति उन सभी अमूल्य वस्तुओं की रक्षा करता है, जो सबसे उत्तम हो और मनुष्य के लिए सबसे उत्तम और मूल्यवान हैं—प्राण। शंख ध्वनि मनुष्यों के प्राण राक्षसों से बचाता है।
4. (क) (i) सर जगदीशचंद्र बोस को
(ii) जब बोस ने शहर के हट्टे-कट्टे बच्चे को पटखनी दे दी थी।
- (ख) (i) अवैतनिक सत्याग्रह
(ii) अंग्रेजों ने बोस को अन्य अंग्रेज प्रवक्ता के समान वेतन प्रदान करना शुरू कर दिया।
- (ग) (i) वह राक्षस जो मनुष्यों के प्राण लेता है।
(ii) शंख ध्वनि से राक्षस दूर भागते हैं और मनुष्य के प्राण सुरक्षित रखते हैं।

व्याकरण-बोध

1. (क) सर्वज्ञ	(ख) कृतज्ञ	
2. धीरे-धीरे हट्टे-कट्टे	पालन-पोषण विद्युत-चुंबकीय	आंग्ल-भारतीय विज्ञान-जगत
3. शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
(क) स्वाभिमानि	स्व	ई
(ख) अनियमित	अ	इत
(ग) संस्थापित	सम्	इत
(घ) अन्यायी	अ	ई
(ङ) असामाजिक	अ	इक
(च) उद्दंडता	उत्	ता
(छ) वैज्ञानिक	वि	इक
(ज) संबद्धता	सम्	ता
(झ) प्रयोगशाला	प्र	शाला
(ञ) प्रायोगिक	प्र	इक

4. संबंधबोधक अव्यय

(क) के सामने	(ख) की अपेक्षा	(ग) के कारण
(घ) से अपना	(ङ) के सामने	

विशेष्यों के साथ उचित विशेषण

(क) मौलिक	(ख) परिश्रमी	(ग) स्वच्छ
(घ) नवीन	(ङ) कुशल	(च) अमूल्य
(छ) शुद्ध	(ज) उत्तम	

नोट : छात्र इस प्रश्न का उत्तर अपनी मेधा शक्ति से दें। उनके उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।

विशेषण शब्दों का संज्ञा के रूप में प्रयोग—

विशेषण शब्द	संज्ञा शब्द	वाक्य में प्रयोग
(क) भारतीय	भारत	भारत एक समृद्ध राष्ट्र है।
(ख) प्राकृतिक	प्रकृति	मनाली प्रकृति की गोद में बसा है।
(ग) घरेलू	घर	मैं आज ही घर आया हूँ।
(घ) बलवान	बल	एकता में बल है।

लेखन अभिव्यक्ति

- रोहन : सौमित्र, चल इस पेड़ की छाया में बैठते हैं।

बरगद : मैं बरगद हूँ। मुझे मेरे नाम से पुकारो।

रोहन : अच्छा-अच्छा, बरगद महाराज, आप खुद धूप में खड़े होकर हमें छाया देते हो, आपको घूप नहीं लगती।

बरगद : बस आप जैसे बच्चों को खुशी देकर हम सारे दुख-दर्द भूल जाते हैं।

रोहन : (पत्तियाँ चबाकर उगलते हुए) नीम इतने कड़वे क्यों हो तुम..

नीम : कड़वा हूँ लेकिन फायदा भी तो पहुँचाता हूँ। मेरा सेवन कर आप कई तरह की बीमारियों को दूर रख सकते हो।

बेल : अरे! रूको रूको, मुझसे भी तो बात करो।

रोहन : अब तुमसे क्या बात करूँ, तुम तो इतने कठोर दिखते हो।

बेल : एक बार मेरा स्वाद चख के तो देखों मेरे फायदे बहुत हैं। मैं गरमियों में लोगों के पेट को ठंडा रखता हूँ।

रोहन : अच्छा ये बात है, तब तो चखना पड़ेगा।

आम : रोहन मुझसे बात किए बगैर ही चले जाओगे।

रोहन : मैं आपसे बहुत नाराज हूँ।

आम : क्यों भई, मैंने क्या कर दिया।

रोहन : आप साल में एक बार फल देते हो, फिर पूरा साल इंतजार करना पड़ता है।

आम : तभी तो मैं फलों का राजा हूँ। अच्छी चीजों के लिए थोड़ा सब्र रखो क्योंकि 'सब्र का फल मीठा होता है।'

रोहन : "सब्र का फल मीठा नहीं आम होता है।" हा हा हा हा

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

- जीवन को स्वच्छ और स्वस्थ बनाए रखने के लिए हमारे पर्यावरण का स्वच्छ होना आवश्यक है। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि हम सभी जिस वातावरण में रहते हैं, हम स्वयं ही उसे अपने कार्यों से क्षतिग्रस्त करते हैं। इसलिए आवश्यकता है कि हम अपने जीवन में कुछ ऐसे कार्यों को अपनाएँ जो पर्यावरण को शुद्ध रखने में सहायक हों। इसके लिए हमें सबसे पहले प्लास्टिक बैग और उसके उत्पादों के उपयोग को कम करना चाहिए। घर से निकलने वाले कचरे को एक सही चैनल द्वारा अलग-अलग करने की आवश्यकता है। हमें वाहनों से निकलने वाले धुएँ को कम करने की आवश्यकता है और वनों को कटने से बचाना है। दरअसल ये कुछ प्रमुख उपाय हैं जिसे अपनाकर हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं। पर्यावरण संरक्षण आज की हमारी सबसे बड़ी जरूरत है और युवा पीढ़ी को नई व सकारात्मक सोच के साथ इसे एक नई दिशा देने की जरूरत है।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न भी हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

- अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों को बताएँ कि किस तरह से एक बीज अंकुरित होकर अंकुर पेड़-पौधे के रूप में विकसित होता है और फल तथा बीज प्रदान करना है। साथ ही इस विकास क्रम की पूरी प्रक्रिया को छात्रों की उत्तर पुस्तिका में सचित्र लिखने को कहें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
- अध्यापक/अध्यापिका के निर्देशानुसार छात्र एक गमले में पौधे को लगाएँ और रोज उसकी देखभाल करें जैसे कि उसमें पानी डालें। पंद्रह दिनों के बाद उस पौधे में क्या परिवर्तन आया उसे वह अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें तथा कक्षा में बताएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
- अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों को पेड़-पौधों से संबंधित कोई दो स्लोगन (नारे) लिखने को कहें। जैसा नीचे लिखा गया है—

वृक्ष धरा के हैं भूषण।

करते रहते दूर प्रदूषण।

प्रदूषण की दोहरी मार।

वृक्ष बचाए बारंबार।

सरदी, गरमी और बरसात।

वृक्ष न छोड़ें हमारा साथ।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 134 से 137

पाठ-बोध

1. मौखिक

(क) अब्दुल हमीद का जन्म धामपुर में हुआ था।

(ख) अब्दुल हमीद की माता का नाम बकरीदन और पिता का नाम उस्मान खाँ था।

- (ग) अब्दुल हमीद कुश्ती और कबड्डी में कुशल थे।
 (घ) अब्दुल हमीद 1954 ई० में सेना में भरती हुए।
 (ङ) अब्दुल हमीद ने वर्ष 1962 और वर्ष 1965 की जंग लड़ी।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- (क) (iii) धामपुर ☒ (ख) (iv) सैनिक (सिपाही) ☒
 (ग) (ii) 1965 में ☒ (घ) (ii) परमवीर चक्र से ☒

3. (क) भारत और पाकिस्तान के बीच लड़ाई छिड़ी थी।
 (ख) पाकिस्तान को अपने मँगनी के पैटन टैंकों पर नाज़ था।
 (ग) हमीद ने तीन टैंकों को धराशायी कर दिया।
 (घ) प्रस्तुत पंक्तियों में वीर अब्दुल हमीद की शौर्य गाथा अभिव्यक्त हुई है।

4. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) अब्दुल हमीद ने गाजीपुर को 'परमीवर चक्र' नामक कीमती सौगात भेजी।
 (ख) वीर अब्दुल हमीद के आत्म बलिदान ने यह साबित कर दिया कि, 'कौमों की बुनियाद मजहब पर नहीं होती।'
 (ग) बचपन से ही अब्दुल हमीद की तमन्ना एक बहादुर सिपाही बनने की थी।
 (घ) कबड्डी और कुश्ती जैसे खेलों में हमीद की दिलचस्पी ने उसे फ़ौज में शामिल होने में मदद की क्योंकि उसका मानना था कि फ़ौज में जाने के लिए फुर्तीले बदन की जरूरत होती है। वह कुश्ती करता, लकड़ी सीखता और पूर्ण समर्पण के साथ फ़ौज में जाने को ललायित रहता।
 (ङ) चीन के साथ हुए युद्ध में अब्दुल हमीद ने अपने शौर्य और बहादुरी का अनोखा परिचय दिया। एक-एक करके अन्य सिपाही साथ छोड़ते जा रहे थे लेकिन हमीद बिल्कुल डूँटे थे और अपने मशीनगन से गोलियाँ दागे जा रहे थे। यहाँ तक कि गोलियाँ खत्म हो जाने के बाद भी वह मशीनगन को छोड़कर नहीं भागे बल्कि उसे तोड़कर दुश्मनों के हाथ में न सौंपने का फैसला किया।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) भारत प्रारंभ से ही एक शांतिप्रिय देश रहा है और भारत कभी भी किसी भी परिस्थिति में युद्ध और हिंसा का पक्षधर नहीं रहा है। चाहे फिर वो देश पाकिस्तान ही क्यों न हो। सन् 1965 में भी ऐसा ही हुआ। 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध की शुरुआत पाकिस्तान की तरफ से ही हुआ क्योंकि भारत इस तरह की हिंसा को कभी पसंद नहीं करता। इसलिए कहा गया है। कि 'हम अमन चाहने वालों पर यह लड़ाई थोप दी गई थी।'
 (ख) 'बकरीदन के बेटे ने माँ के नाम की इज़्ज़त रख ली' वाक्य से तात्पर्य बकरीदन अर्थात् अब्दुल हमीद की माँ यानी कि अब्दुल हमीद ने सन् 1965 के जंग में भारतीय सीमा की सुरक्षा के लिए स्वयं कुरबान हो गया लेकिन भारत में पाकिस्तान सैनिकों को घुसने नहीं दिया और बकरीद भी बलिदान का त्योहार है। जो इस आशय को स्पष्ट करता है।
 (ग) 'देश-प्रेम में धर्म बाधा नहीं है।' लेखक इसके माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि धर्म, संप्रदाय, जाति इन सबसे ऊपर देश है और जहाँ देश की बात आती है बाकी चीज़ें पीछे छूट जाती है। इसी का उदाहरण

वीर अब्दुल हमीद की बहादुरी है। जिन्होंने न सिर्फ देश की हिफाजत की शपथ ली बल्कि उसे पूरा भी किया फिर चाहे उनकी जान ही क्यों न चली गई और धर्म से वो मुस्लिम थे। लेखक ने हमारा ध्यान इसी ओर आकृष्ट किया है कि हिंदू-मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी के लिए देश-प्रेम सर्वोपरि है।

(घ) अब्दुल हमीद के जीवन से हमें एकाग्रता, त्याग, बलिदान, देश-प्रेम, अदम्य साहस जैसी शिक्षाएँ मिलती हैं जिससे हर भारतीय को सीख लेनी चाहिए और उसे अपने जीवन में अपनाना चाहिए। वीर अब्दुल हमीद की कर्मठता, कार्य कुशलता ने उन्हें देश की नज़रों में एक सर्वमान्य योद्धा के रूप में स्थापित किया।

व्याकरण-बोध

- (क) बरसों से यही एक ख्वाब उसका पीछा कर रहा है।
(ख) हमारे जवानों का एक जत्था चीनी फ़ौज के घेरे में था।
(ग) वह मशीनगन तोड़ डालेगा और फिर बर्फ़पोश पहाड़ियों में एक परछाई की तरह रेंग जाएगा।
- (क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य
(ग) भाववाच्य (घ) भाववाच्य
- (क) स्वागत — सु + आगत
(ख) अन्वेषण — अनु + एषण
(ग) अधिकांश — अधिक + अंश
(घ) मात्राज्ञा — मातृ + आज्ञा
(ङ) दैत्याकार — दैत्य + आकार

लेखन अभिव्यक्ति

222/19, गोमती नगर

लखनऊ (उ०प्र०)

दिनांक 24.04.20××

प्रिय नवीन,

शुभ स्नेह।

मुझे उम्मीद है तुम अपनी परीक्षा की तैयारी में तत्परता से लगे होगे। तुम्हारी परीक्षा भी कुछ ही दिनों में शुरू होने वाली है। सभी को तुमसे बहुत उम्मीदें हैं, खासकर पिताजी को। मन लगाकर पढ़ाई करो और परीक्षा में अव्वल आओ।

खैर, आज मैं तुम्हें यह पत्र एक खास वजह से लिख रहा हूँ। आज हमारे मोहल्ले के काटजू चाचा जो भारतीय सेना में तैनात थे, कश्मीर में उनके काफ़िले पर किसी ने हमला कर दिया और काटजू चाचा शहीद हो गए। उनकी अंतिम यात्रा में काफी लोगों की भीड़ थी। आज मैं तुम्हें इस पत्र के माध्यम से यह बताने जा रहा हूँ कि एक शहीद को किस प्रकार सम्मान दिया जाता है। जब कोई जवान शहीद हो जाता है तो उनका अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ किया जाता है। सबसे पहले शहीद के पार्थिव शरीर को उनके स्थानीय निवास पर भेजा जाता है जहाँ पार्थिव शरीर के साथ में सेना के जवान भी होते हैं। साथ में एक सैन्य टुकड़ी अंतिम संस्कार के लिए उनके निवास स्थान पर जाती है। राजकीय सम्मान के साथ अंत्येष्टि के दौरान पार्थिव शरीर को तिरंगे में लपेटा जाता है। चिता को जलाने या दफनाने से पूर्व वह तिरंगा शहीद के परिजनों को सौंप दिया जाता है। साथ

ही मिलिट्री बैंड की ओर से 'शोक संगीत' बजाया जाता है और बंदूकों की सलामी दी जाती है। सचमुच यह दृश्य देखकर मेरी आँखों के आँसू रुक नहीं रहे थे।

तुम्हें यह बात बतानी जरूरी थी आगे तुम अपना ख्याल रखना और परीक्षा समाप्त होने पर जल्दी घर आना, फिर तुमसे और बातें होगी।

तुम्हारा बड़ा भाई,

प्रदीप सिंह

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

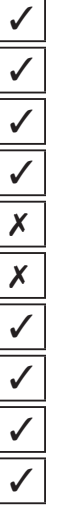
1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को अपनी मातृभाषा में किसी कहानी को कक्षा में सुनाने के लिए कहें
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका समस्त छात्रों को प्रार्थना-सभा के समय स्वतंत्रता-संग्राम की कहानियों या स्वतंत्रता-संग्राम से जुड़े कुछ नायकों से जुड़ी कहानियों को सुनाने के लिए कहें। साथ ही वह कहानियाँ आपके जीवन में क्या प्रेरणा देती है, यह भी बताइए।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. राज्य के शिक्षा मंत्री द्वारा पंद्रह अगस्त पर दिए गए भाषण के मुख्य बिंदु—
 - एक प्रमुख पर्व
 - स्वतंत्रता सेनानियों की चर्चा
 - युवा देश का भविष्य है।
 - हम शिक्षा के द्वारा खुद को बंधनों से मुक्त कर सकते हैं।

(छात्र इस कार्य को स्वयं करें साथ ही उनके प्रमुख बिंदु लिखित अंश से भिन्न हो सकते हैं।)
4. सरकार एवं समाज को शहीदों के परिवार के सदस्यों के प्रति संवेदना रखनी चाहिए। सरकार उनके परिवार के सदस्यों के लिए उन सभी चीजों की व्यवस्था करें जिसके वह हकदार हैं। साथ ही समाज शहीद के परिवार को प्रतिष्ठा, इज्जत और आत्मीयता के व्यवहार से नवाझे।
(यह उत्तर का आंशिक मात्र है। छात्र इसे आधार बनाकर अपने उत्तर लिख सकते हैं।)

श्रवण/वाचन कौशल-3

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से पाठ्यपुस्तक में दिए गए उदाहरणानुसार वार्तालाप को पूरा करवाएँ।
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को दो-दो के जोड़े में अपने विशेष उत्सव के विषय में बताने को कहें तथा यह भी बताएँ कि इस उत्सव में क्या बनता है, कैसे वस्त्र पहनते हैं और किन-किन रीति-रिवाजों का पालन करते हैं।
3.
 - गोदावरी के तट पर स्थित 'अश्मक' है।
 - गणित और ज्योतिष हैं।
 - स्थिर नहीं है।
 - आर्यभटीय है।
 - मात्र तेईस वर्ष थी।

- संस्कृत है, भाग चार हैं।
- 121 हैं।
- वह दशगीतिका है।
- कालक्रिया
- दशगीतिका में हैं।
- गोल में है।
- आर्यभट्ट है।
- 4. • हिमालय पर्वत भारत का गौरव है।
- इसके निवासी आर्य रहे हैं।
- भारत ने ही विश्वगुरु होने की भूमिका निभाई है।
- आज भी हम आर्यों की उन्नति के निशान देख सकते हैं।
- आर्य स्वार्थ में डूबे हुए थे और मोह-रत थे।
- पर दुख में जो दुखी हो, वे आर्य नहीं थे।
- हमारे पूर्वज मोह के बंधनों से मुक्त थे।
- मन-कर्म-वचन से आर्य ईश भक्ति करते थे।
- 'मनोहर मीन' में अनुप्रास अलंकार है।
- ब्रह्मानन्द-नद में रूपक अलंकार है।



उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 142 से 144

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) संसार में मतलब का व्यवहार है।
 (ख) कवि ने जल को चंचल बताया है।
 (ग) सभी काग कौए अपनी आवाज़ और गुण के कारण अपावन माने जाते हैं।
 (घ) कवि के अनुसार बेगर्जी प्रीति कोई विरला यानी कि अनेक लोगों में से कोई एक ही करता है।

2. सही विकल्प पर सही का निशान लगाइए-

- | | | | |
|---------------------------------------|-------------------------------------|------------------|-------------------------------------|
| (क) (i) धन-दौलत | <input checked="" type="checkbox"/> | (ख) (i) मीठे वचन | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (iii) धनहीन होने पर | <input checked="" type="checkbox"/> | (घ) (i) गुणों के | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ङ) (ii) बिना सोचे-समझे काम करने वाले | <input checked="" type="checkbox"/> | | |

3. लिखित

लघु उत्तरीय-

- (क) दौलत पाकर भी हमें अभिमान इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि यह चंचल जल की तरह होता है, चार दिन भी नहीं ठहरता।
- (ख) दौलत की तुलना मेहमान से इसलिए की गई है क्योंकि जिस तरह मेहमान दो-चार दिन में आकर चले जाते हैं ठीक उसी प्रकार धन-दौलत भी चार दिन में चली जाती है।
- (ग) हमें मित्रता के लिए सदैव ऐसे व्यक्ति का चुनाव करना चाहिए जो आपके सुख में भले आपके साथ न हो लेकिन आपके दुख में आपके साथ खड़ा हो। उसके लिए आपके धन-दौलत मायने न रखें।
- (घ) हम दूसरों का हृदय अपने अच्छे कार्यों और दो मीठे बोल बोलकर जीत सकते हैं।

दीर्घ उत्तरीय-

- (क) बिना सोचे विचारे कार्य करने से पछतावा के सिवाय कुछ परिणाम नहीं निकलता। जब तक किसी को अपनी गलती का अहसास होता है तब तक वो अपना काफ़ी नुकसान कर चुका होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सोच विचारकर कार्य करना चाहिए ताकि परिणाम बेहतर निकले।
- (ख) कोयल सबको अपनी मधुर राग के कारण भाती है। यह सच भी है कि जिस व्यक्ति में गुण होते हैं उसे ही दुनिया स्वीकार करती है इसलिए कोयल सबको प्यारी लगती है। इस बात को हम इस तरह से भी समझ सकते हैं कि कौआ और कोयल दोनों का रंग काला होता है लेकिन जहाँ एक ओर अपनी मीठी आवाज़ के कारण कोयल सबकी प्रिय है वहीं कौआ अपनी कर्कश आवाज़ के कारण अपमानित होती है।
- (ग) हमें जीवन में सदैव मित्रों का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए। मतलबी और ठगी लोगों से दूरी बनाकर रखना चाहिए। हमेशा काम को सोच विचारकर करना चाहिए। अपनी वाणी में मधुरता रखनी चाहिए साथ ही अपने अंदर अच्छे गुणों को समाहित करना चाहिए।
- (घ) यदि हम बिना विचारे किसी काम को करते हैं तो अपना काम तो खराब होता ही है साथ ही हम संसार में हँसी के पात्र भी बनते हैं। इन सब कारणों से हमारा मन कभी चैन प्राप्त नहीं करता है और किसी दूसरे कार्य में भी नहीं लगता है। इसलिए बिना विचार किए किया गया काम हमें हमेशा दुख ही देता है और हमारा हृदय सदैव भटकता रहता है।

4. (क) (i) दौलत को

- (ii) क्योंकि दौलत किसी के पास चार दिन से ज्यादा नहीं टिकता है, आज मेरे पास कल किसी और के पास।

(ख) (i) काफ़ी लोगों में से कोई एक।

- (ii) बिना किसी मतलब के दोस्ती अनेक लोगों में से कोई एक ही करता है।

(ग) (i) कोयल और कौआ, दोनों के लिए।

- (ii) क्योंकि उसकी आवाज़ कर्कश है, उसमें कोई गुण नहीं है।

(घ) (i) बिना सोचे विचारे काम करने वाले लोग।

- (ii) बिना विचारे काम करने पर पछतावे का भाव होना और संसार के लोगों का हमारे उस कार्य पर हँसना।

व्याकरण बोध-

1. (क) स्वप्न (ख) सहस्त्र
(ग) यश (घ) ग्राहक
(ङ) बेगर्ज (च) कौआ
(छ) गुण (ज) दोनों
2. (क) जग – संसार – जग में भाँति-भाँति के प्राणी है।
पानी रखने का पात्र – जग में पानी लेकर आओ।
(ख) दंड – सजा – रमेश को गृहकार्य न करने पर शिक्षक ने दंड दिया।
एक प्रकार का व्यायाम – दंड आसन से शरीर स्फूर्तिमान रहता है।
(ग) कर – हाथ – प्रधानमंत्री जी ने अपने कर कमलों द्वारा मूर्ति का अनावरण किया।
टैक्स – आय कर समय पर भरा करो।
(घ) हार – पराजय – भारत के हाथों ऑस्ट्रेलिया को हार मिली।
माला – गेंदा के फूल का हार बनाकर गले में डाल दो।

लेखन अभिव्यक्ति

मेरा नाम राकेश है। मैंने एक बार बिना अपनी कॉपी में गृहकार्य देखें किसी और अध्याय के प्रश्नों को हल कर अध्यापिका जी के सामने रख दिया था। अध्यापिका जी ने मेरी कॉपी देखकर मुझे पूरी कक्षा के सामने मेरी लापरवाही के लिए डाँट लगाई। मेरे मित्र सुरेश और अजय भी मुझ पर हँस रहे थे। इस दृश्य को देखकर मैंने प्रण लिया कि मैं दोबारा कभी अपनी इस गलती को नहीं दोहराऊँगा। लेकिन मैं आज भी अपनी उस भूल पर पछताता हूँ। (यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्र इस आधार पर अपने उत्तर को अलग-अलग विषय पर लिखें।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को 'गुणों का महत्व' एवं 'धन नश्वर है' विषय पर भाषण तैयार करने को कहें।
छात्र अपनी सुविधानुसार किसी भी विषय का चयन कर सकते हैं। छात्र अपने भाषण को कक्षा में अथवा प्रार्थना-सभा में बोलें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से कुंडलिया छंद की कुछ अन्य कविताओं को इंटरनेट अथवा पुस्तकालय से ढूँढ़कर चार्ट पर लिखवाएँ तथा उसे विद्यालय की हरित पट्टी पर लगवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 149 से 152

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य में स्थित हैं।

- (ख) अजंता के कला-मंडप फरदापुर गाँव के निकट स्थित हैं।
 (ग) अजंता जाते समय 'बधोरा' नदी को पार करना पड़ता है।
 (घ) इन गुफाओं में गुप्तकाल में कलाकृतियाँ उकेरी गई थीं।
 (ङ) पहली, दूसरी, सोलहवीं और सत्रहवीं गुफाओं में प्राचीन चित्रकला आज भी पूरी तरह से सुरक्षित है।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | |
|--------------------------|-------------------------------------|
| (क) (iii) छह दाँतों वाला | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ख) (iii) हाथी | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (i) राजा के घर | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (घ) (iii) व्याधों को | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) अजंता की गुफाओं में कला की उत्कृष्टता और पवित्र भावों की अभिव्यक्ति कई रूपों में देखने को मिलती है, जैसे- 'मार-विजय' का चित्र, नागराज काशीराज को उपदेश देते हुए, भगवान बुद्ध अपनी पत्नी और बेटे को छोड़कर जाते हुए आदि।
 (ख) बधोरा नदी की यह विशेषता है कि उसमें सर्पाकार घुमाव बहुत हैं। जब तक हम एकदम पास न पहुँच जाए, तब तक हमें इन गुफाओं का आभास भी नहीं होता है।
 (ग) जलगाँव, औरंगाबाद या पहर रेलवे स्टेशन में से किसी एक पर पहुँचकर फरदापुर गाँव तक जाते हैं। फिर छह कि०मी० दूर पहाड़ियों में बधोरा नदी को पारकर अजंता की गुफाओं तक पहुँचा जा सकता है।
 (घ) घाटी में चारों ओर हरसिंगार का वन दिखाई देता है।
 (ङ) अजंता की पहली गुफा में केवल संध्या के समय सूर्य की अंतिम किरणें ही प्रवेश करती हैं।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) लेखक ने अजंता की गुफाओं का चुनाव करने वालों को 'शत-शत प्रणाम' इसलिए कहा है, क्योंकि उन्होंने अपनी कला की अभिव्यक्ति के लिए ऐसे अद्भुत स्थान को चुना था। अजंता प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से तो अद्वितीय है ही, यहाँ एक हरसिंगार का वन है, जिसमें अनेक पुष्प, फल तथा पक्षी आदि मिलते हैं। यह स्थान अत्यंत रमणीक तथा कला की अभिव्यक्ति की दृष्टि से अनुपम है।
 (ख) पहली गुफा के दालान की दीवार पर 'मार-विजय' का चित्र अंकित है। 'मार' (प्रलोभन, कामदेव, शैतान) की सेना भगवान बुद्ध को घेरे हुए है। इस सेना में भगवान को डराने, क्रुद्ध करने, क्षुब्ध तथा लुब्ध करने के लिए भयंकर मूर्तियों से लेकर अनेक कामिनियाँ तक बनी हैं, जो अपने-अपने तरीकों से भगवान को विचलित करने में प्रवृत्त हैं, किंतु वे सर्वथा आत्मानुरत हैं। सांध्य बेला में सूर्य की अंतिम किरणें इस स्थान को स्नात कर जाती हैं।
 (ग) नागराज के रूप में बोधिसत्व के जन्म की चित्रित कथा का वर्णन इस प्रकार है—नागराज के रूप में जन्म लेने के बाद वे संयोगवश बंदी बनाकर काशी के हाट में बेचने के लिए लाए गए थे। उन्हें इस परिस्थिति से छुड़ाकर काशीराज अपने यहाँ ले गए और उनके सारे परिवार को भी निमंत्रित किया। एक ओसारे में नागराज तथा काशीराज राजासन पर आसीन हैं। चारों ओर राजमहिलाएँ तथा राजपरिवार के लोग घेरे खड़े हुए हैं। नागराज काशीराज को उपदेश दे रहे हैं। चित्र में भाव और मुद्राएँ बड़ी प्रवीणता से उकेरी गई हैं।

- (घ) आत्मसमर्पण की पराकाष्ठा का जो चित्र सत्रहवीं गुफा में चित्रित है, उसमें एक माता अपने पुत्र को किसी के सामने साग्रह उपस्थित कर रही है, जिसके हाथों में भिक्षा-पात्र है। पुत्र भी अपनी अंजलि पसारकर उस व्यक्ति के सामने खड़ा है। जब बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद भगवान बुद्ध भिक्षा माँगने के लिए पुनः कपिलवस्तु गए तो, यशोधरा ने अपने पुत्र राहुल को भिक्षा में दे दिया। यही आत्मसमर्पण की पराकाष्ठा है।
- (ङ) अजंता की गुफाओं के चित्तेरों के सम्मुख लोग इसलिए नतमस्तक हो जाते हैं, क्योंकि उन्होंने इन चित्रों में भावों को बड़ी सावधानी तथा कलापूर्ण ढंग से उकेरा है। ये गुफाएँ प्रवेश द्वार से लेकर अंत तक भक्ति, उपासना धैर्य, प्रेम, लगन, एवं हस्त-कौशल का संसार भर में अपूर्व उदाहरण हैं। उन अनाम कलाकारों ने अपना समस्त जीवन मानव-हृदय के उदात्त भावों का सजीव चित्रण करने में तो लगाया ही परंतु अपना नाम तक वहाँ नहीं छोड़ा। ऐसे निःस्वार्थ और सच्चे कलाकारों ने आगे हम सभी नतमस्तक हो जाते हैं।

व्याकरण-बोध

- | | |
|-------------------|-----------------|
| 1. (क) वर्तुलाकार | (ख) यथोचित |
| (ग) प्रत्येक | (घ) अन्वेषण |
| (ङ) भवन | (च) परमौजस्वी |
| (छ) महेश | (ज) भानूदय |
| (झ) चित्ताकर्षक | (ञ) आत्मोत्सर्ग |

लेखन-अभिव्यक्ति

अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से महात्मा बुद्ध के जीवन एवं बुद्धत्व प्राप्ति पर आवश्यक सूचनाएँ एकत्र करवाकर उनसे एक छोटी-सी कहानी लिखवाएँ। इस आशय की एक कहानी निम्नवत है—

कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन तथा महारानी महामाया के पुत्र सिद्धार्थ का जन्म कपिलवस्तु के पास लुंबिनी में हुआ था। उनका लालन-पालन उसकी मौसी गौतमी ने किया, क्योंकि इनके जन्म के सात दिन बाद इनकी माँ का देहांत हो गया था। मात्र सोलह वर्ष की आयु में उनका विवाह दंडपाणि शाक्य की पुत्री यशोधरा से हुआ। उनका एक पुत्र हुआ, जिसका नाम राहुल रखा गया।

बचपन से किशोरावस्था में मानव जीवन की कुछ विडंबनाएँ जैसे— रोग, जर्जर काया तथा मृत्यु की घटना देखकर सिद्धार्थ का मन सांसारिक मोह-माया से उचट गया और वे सत्य की खोज में निकल पड़े। उन्होंने कठिन तपस्या प्रारंभ की, परंतु बाद में मध्यमार्ग अपनाकर वैशाख-पूर्णिमा के दिन उनकी साधना पूर्ण हुई तथा बुद्धत्व की प्राप्ति हुई। उन्हें 'महात्मा बुद्ध' कहा जाने लगा।

उन्होंने लोगों को मध्य मार्ग अपनाते हुए तृष्णा का त्यागकर अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनके व्यवहार तथा आचरण से प्रभावित होकर अँगुलिमाल जैसे डाकू ने भी अहिंसा का व्रत ले लिया। उनके द्वारा चलाए गए मत को 'बौद्ध धर्म' के नाम से जाना जाता है।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से कहें कि वे पुस्तकालय या कंप्यूटर की सहायता से एलोरा की गुफाओं के बारे में जानकारी एकत्र करके उन्हें चित्रों सहित अपनी परियोजना पुस्तिका में लगाएँ।

(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

2. अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों से सामूहिक चर्चा करवाएँ कि भारत के इतिहास में गुप्त काल को 'स्वर्ण युग' कहा जाना कितना उचित है? (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से अजंता के भित्ति-चित्रों को कक्षा के सूचना-पट्ट पर लगवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
4. अध्यापक/अध्यापिका विद्यालय की तरफ़ से अजंता की यात्रा का आयोजन करवाएँ, जिससे छात्र इतिहास, संस्कृति, धर्म और कला से संबंधित अनूठे प्रमाण संकलित कर सकें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
5. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से अक्षरघाम मंदिर भ्रमण के पश्चात वहाँ से प्राप्त अनुभवों पर एक सामूहिक प्रस्तुति तैयार करवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
6. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को गुप्तकाल के संबंध में इंटरनेट और पुस्तकों के आधार पर सामग्रियाँ पढ़कर उसे 'स्वर्ण युग' क्यों कहा जाता है, आपस में चर्चा करने को कहें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

जीवन-कौशल

1. पुरानी ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा की व्यवस्था सरकार को करनी चाहिए। ☒
2. जनता पुरानी इमारतों की सुरक्षा नहीं कर सकती है। ☒
3. पुरानी ऐतिहासिक इमारतों की दीवारों पर नाम नहीं लिखना चाहिए। ☒
4. सरकार को समय-समय पर पुरानी इमारतों की मरम्मत करवाते रहना चाहिए। ☒
5. पुरानी ऐतिहासिक इमारतों के पास बाग-बगीचे की सुचारु व्यवस्था होनी चाहिए। ☒
6. पुरानी ऐतिहासिक इमारतों को दिखाने, उनका महत्व बताने के लिए गाइड की व्यवस्था होनी चाहिए। ☒
7. पुरानी ऐतिहासिक इमारतों के आस-पास गंदगी नहीं फैलानी चाहिए। ☒

पाठ 18

डॉ० पूरन चंद टंडन से एक भेंटवार्ता

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 156 से 160

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) डॉ० पूरन चंद का जन्म 5 अप्रैल, 1958 को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के 'बड़ौत' नामक नगर में हुआ था।
- (ख) डॉ० टंडन के जीवन के आदर्श उनके माता-पिता हैं।
- (ग) उनका बचपन दिल्ली के कृष्णानगर में व्यतीत हुआ।
- (घ) बचपन में डॉ० टंडन तख्ती पर लिखा करते थे।
- (ङ) उन्होंने हिंदी विषय को सुदृढ़ आधार भूमि प्रदान की।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | |
|------------------------|-------------------------------------|
| (क) (i) शरारती | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ख) (ii) राजरानी | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (i) लक्ष्मीनगर में | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (घ) (iii) प्रशंसा | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) बचपन में एक दिन डॉ० टंडन विद्यालय न पहुँचकर खुले मैदान में गुल्ली-डंडा खेलने में व्यस्त हो गए थे।
- (ख) डॉ० टंडन के माता-पिता की भूमिका उनके जीवन में बहुत खास है।
- (ग) डॉ० टंडन के लेखनी से प्रभावित मित्र अपनी कॉपियों में उनसे अपना नाम लिखवाते थे।
- (घ) हिंदी के प्रसिद्ध कवि तुलसीदास, जयशंकर प्रसाद तथा लेखक आचार्य रामचंद्र शुक्ल, विश्वनाथ प्रताप मिश्र और डॉ० नगेंद्र ने डॉ० टंडन को प्रभावित किया।
- (ङ) हिंदी के जाने-माने आलोचक डॉ० नगेंद्र और डॉ० टंडन में गुरु-शिष्य का संबंध था।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) 'मैं बचपन में शरारती था, परंतु कभी झूठ नहीं बोलता था' यह कथन डॉ० टंडन के चरित्र में स्थापित सत्यवादिता का परिचय देता है। बचपन में जब वह एक दिन विद्यालय न जाकर मैदान में गुल्ली-डंडा खेलते रहे। अध्यापक महोदय ने इसका कारण जानना चाहा कि वे कहाँ थे, तो डॉ० टंडन ने उन्हें सच-सच बता दिया कि वे अपने मित्रों के साथ गुल्ली-डंडा खेल रहे थे। भले उन्हें दंड मिला, परंतु वे सत्य पर अटल रहे।
- (ख) हिंदी के प्रति उनकी रुचि बचपन से ही कुछ अधिक थी। उनके अध्यापक उनकी रची छोटी-छोटी कविताओं और कहानियों की प्रशंसा करते थे। उन्हें कविता-रचना तथा कहानी-लेखन में पुरस्कार भी मिले। सुंदर सुलेख के लिए भी प्रशंसा उन्हें मिली। इसी से उनकी रुचि हिंदी में विकसित हुई। धीरे-धीरे लेखन तथा हिंदी भाषा के प्रति उनकी रुचि विकसित होती गई।
- (ग) 'प्रीत-क्लब' के कार्य थे— खेलों का आयोजन करना, समाज सेवा करना, पर्वों को आनंद-उत्साह के साथ मनाना आदि। डॉ० टंडन इस क्लब के बोर्ड पर रोज़ाना एक नया सुविचार हिंदी में लिखते थे। इस प्रकार उनके सभी प्रयास हिंदी को सफल एवं सुदृढ़ आधार भूमि पर प्रतिष्ठित करते गए। लोग उनके इन कार्यों की सराहना करते, जिससे उन्हें अपनी मातृभाषा के विकास में जुटने का प्रोत्साहन मिला।
- (घ) डॉ० टंडन की प्रमुख रचनाएँ हैं— 'काव्यावाद के विविध सोपान', 'व्यावहारिक हिंदी', 'मध्यकालीन कृष्ण काव्य में सौंदर्य चेतना', 'सौंदर्य-विमर्श', 'प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद' आदि। हिंदी को सफल और सुदृढ़ बनाने में उनका योगदान अमूल्य है।
- (ङ) डॉ० टंडन ने हिंदी को लोकप्रिय बनाने के बहुत-से उपाय सुझाए, जैसे कि घर में, समाज में हिंदी भाषा का सम्मान किया जाए, हिंदी बोलने वालों को भी सुसंस्कृत और योग्य समझा जाए, व्यवसाय जगत में व ऊँचे पदों पर आसीन लोगों द्वारा भी हिंदी का मौखिक ही नहीं, लिखित रूप में भी प्रयोग किया जाए। इसके साथ-साथ हिंदी को रोज़गारोन्मुख बनाना भी आवश्यक है।

(च) डॉ टंडन के इस संदेश का तात्पर्य यह है कि नई पीढ़ी को हिंदी भाषा सीखने, समझने तथा उपयोग के लिए साधना करनी चाहिए, जिससे हिंदी का स्तर उच्च हो तथा वह पूरे विश्व की भाषा बन जाए। केवल कामचलाऊ हिंदी सीख लेना ही काफी नहीं है, हिंदी भाषा के साथ नई पीढ़ी का भावनात्मक लगाव भी होना चाहिए। हिंदी हमारे देश की अस्मिता की पहचान हैं, जो नई पीढ़ी की उपेक्षा पाकर हाशिए पर सरकती जा रही है। अतः हमें स्वयं भी उसका सम्मान करना चाहिए।

व्याकरण-बोध

- (क) प्रारंभ × अंत, स्थापना × विनाश।
 (ख) मित्र – सखा, साथी।
 (ग) अध्यापक, मित्र – जातिवाचक संज्ञा।
 (घ) सौष्टव – स् + औ + ष् + ट् + अ + व् + अ।
 (ङ) उपसर्ग- 'प्र', मूलशब्द- 'आरंभ', प्रत्यय- 'इक'।
 (च) आशीर्वाद – आशीर्वाद
 सर्वोत्तम – सर्वोत्तम
 (छ) विशेषण
 (ज) गुल्ली-डंडा – द्वंद्व समास।
 सुविचार – कर्मधारय समास।
 (झ) खट्टी-मीठी, पालन-पोषण।
 (ञ) भूतकाल।
- विश्वविद्यालय अंग्रेजी लक्ष्मीनगर प्रीतक्लब हिंदी।
- एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्दों के अर्थ।
 (क) अनिवार्य – जिसे टाला न जा सके
 आवश्यक – जरूरी
 (ख) आधि – मानसिक पीड़ा/कष्ट
 व्याधि – शारीरिक पीड़ा/कष्ट
 (ग) आज्ञा – किसी व्यक्ति द्वारा दिया गया निर्देश
 आदेश – अधिकारी द्वारा दिया गया निर्देश
 (घ) श्रम – शारीरिक मेहनत
 परिश्रम – शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार की मेहनत
 (ङ) ज्ञान – जानकारी
 विवेक – चेतना, (समझ) भले-बुरे का ज्ञान
- (क) पानी-पानी होना (iii) लज्जित होना
 (ख) मन मोह लेना (v) आकर्षित करना
 (ग) हवा से बातें करना (iv) बहुत तेज चलना
 (घ) आँखें खुलना (i) होश आना
 (ङ) आसमान सिर पर उठाना (ii) बहुत शोर करना

5. (क) दूध का दूध, पानी का पानी होना — न्याय करना
 (ख) एक पंथ दो काज — दुहरा लाभ या एक साथ दो काम करना
 (ग) आ बैल मुझे मार — जानबूझ कर मुसीबत में पड़ना
 (घ) बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना — उचित समय पर अवसर मिलना।

लेखन-अभिव्यक्ति

अध्यापक/अध्यापिका विद्यालय में वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आए अशोक चक्रधर से साक्षात्कार हेतु हिंदी विभाग के अन्य छात्रों के साथ मिलकर साक्षात्कार-प्रश्नावली बनवाएँ।

इस साक्षात्कार-प्रश्नावली का एक उदाहरण निम्नवत है—

साक्षात्कार - प्रश्नावली

- (क) अपने विषय में बताइए कि आपका जन्म कब और कहाँ हुआ?
 (ख) आपने कहाँ तक शिक्षा प्राप्त की है?
 (ग) आप एक छात्र के रूप में कैसे थे— नटखट अथवा सीधे-सादे?
 (घ) बचपन की एक ऐसी शरारत के बारे में बताइए, जब आपको खूब डाँट पड़ी हो?
 (ङ) किस व्यक्ति ने आपके जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव डाला?
 (च) आपका साहित्य की ओर झुकाव कब हुआ?
 (छ) किसके लेखन से आप स्वयं बहुत प्रभावित हैं?
 (ज) अपने प्रिय साहित्यकार का नाम बताइए।
 (झ) हिंदी को विदेशों में लोकप्रिय करने के साथ-साथ आज की पीढ़ी में इसे लोकप्रिय करने हेतु आप क्या करना चाहेंगे?
 (ञ) युवा-पीढ़ी के लिए कोई संदेश दीजिए।
 (यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

- अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को टी०वी० में दिखाई जाने वाली 'भेंटवार्ता' कार्यक्रम देखने को कहें।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
- अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से किसी प्रसिद्ध कलाकार, संगीतकार या क्रिकेट खिलाड़ी का इंटरव्यू लेने के लिए प्रेरित करें तथा इसके लिए उचित मार्गदर्शन दें। इसके बाद उसे क्रमबद्ध रूप में विद्यालय की पत्रिका के लिए लिखवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
- अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में भेंटवार्ता आयोजित करने का अभ्यास करने के लिए छात्रों से उनके प्रिय अध्यापक अथवा प्रधानाचार्य का इंटरव्यू करवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

जीवन-कौशल

- लेखनी को सुंदर बनाने के लिए आवश्यक है कि प्रतिदिन सुलेख लिखा जाए।
- सभी अक्षर एक समान होने चाहिए।
- मात्राएँ उचित रीति से लगाई जाएँ।
- वर्तनी शुद्ध होनी चाहिए।
- जल्दी लिखते समय लेख नहीं बिगड़ना चाहिए।
- अक्षर छोटे-बड़े बनने से कोई अंतर नहीं पड़ता है।
- ब्लैक-बोर्ड पर लिखने का अभ्यास करना चाहिए।
- सुलेख बिगड़ जाने पर प्रयास छोड़ देना चाहिए।
- सुलेख पाठक को आकर्षित नहीं करता है।



उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 163 से 166

पाठ-बोध

1. मौखिक

- (क) सामान्य-सा पत्ता भी अपना खाना बनाने व हवा के बहने में मदद करता है और दूसरे जीवों के लिए ऑक्सीजन छोड़ता है।
 (ख) सूर्य संसार में अपना प्रकाश बिखेरता है।
 (ग) व्यक्ति धरती पर उगे अन्न को खाकर अपना जीवन-यापन करता है।
 (घ) कवि ने मनुष्य को स्वार्थ-विवश कहा है।
 (ङ) अपने हित के लिए देश और समूची जाति ने मनुष्य पर भरोसा किया है।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | | | |
|-----------------------------|-------------------------------------|-----------------------|-------------------------------------|
| (क) (ii) हमें पाला-पोसा है। | <input checked="" type="checkbox"/> | (ख) (iii) देश और जाति | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (ii) पृथ्वी | <input checked="" type="checkbox"/> | (घ) (iv) सत्कर्तव्य | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय-

- (क) कवि ने जड़ और चेतन की विशेषता बताते हुए कहा है कि सभी अपने-अपने कामों में लगे हुए हैं, सबमें लगन है और सबका एक ही निश्चित उद्देश्य है।
 (ख) तृण के लघु जीवन का उद्देश्य स्वयं को समर्पित करके शाकाहारी पशुओं का भोजन बनना है।
 (ग) पृथ्वी एक दयामयी जन्मदात्री माता के समान है, जो हमारा हर प्रकार से पालन-पोषण करती है।
 (घ) कवि देशवासियों को यह संदेश देना चाहते हैं कि देशजाति से उन्नत होना सभी का प्रथम सत्कर्तव्य है।

दीर्घ उत्तरीय-

- (क) प्रकृति के सभी उपादान कवि को सक्रिय प्रतीत होते हैं। एक तुच्छ पत्ता तक धरती पर छाया करता है, सूरज प्रकाश फैलाता है, छोटे-छोटे घास के तिनके जानवरों के पेट भरते हैं और धरती सबका पालन-पोषण करती है। इन सभी उपादानों की अपने कार्य के प्रति तत्परता है। वे अपने जीवन का उद्देश्य जानते हैं और कर्मलीन रहते हैं। इसलिए कवि ने उन्हें सक्रिय माना है।
 (ख) 'एक बार सोचो' और 'सोचो तुम्हीं' कहते हुए कवि इस बात पर बल देना चाहते हैं कि मनुष्य, जो बल-बुद्धि से भरपूर है, उसे उसका सदुपयोग करना चाहिए। मानव जीवन निरुद्देश्य नहीं होना चाहिए। उसे अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए तथा देशजाति की भलाई करनी चाहिए। मनुष्य को विचार करने की शक्ति मिली है। अतः उसे सोच-समझकर अपने सत्कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

- (ग) कवि ने मनुष्य को स्वार्थी इसलिए कहा है, क्योंकि मनुष्य मात्र अपने सुख-दुख के बारे में ही सोचता रहता है और अपने सुख-साधनों को एकत्र करने में ही लगा रहता है। वह सदा अपने ही हित की पूर्ति करता है, दूसरों के दुख-दर्द व हित के बारे में नहीं सोचता है। वह अपने अधिकार की माँग करता है और अपना कर्तव्य भूल जाता है। जिस देश का अन्न-जल ग्रहण कर मानव विकसित होता है, उसी जन्मभूमि हेतु मनुष्य स्वयं कुछ नहीं करता। यह उसके स्वार्थी प्रवृत्ति की पराकाष्ठा है।
- (घ) कवि ने मनुष्य के मेधाबल की विशेषता बताते हुए कहा है कि वह इससे कई जटिल समस्याओं और प्रश्नों को हल कर लेता है। वह उचित-अनुचित का अंतर कर सकता है, अपने कर्तव्य-अकर्तव्य को समझ सकता है तथा कठिनाइयों पर विजय पा सकता है।
- (ङ) 'सत्कर्तव्य' का अर्थ है- सच्चा और सत्य कर्तव्य। मनुष्य का सत्कर्तव्य है कि देशजाति के प्रति अपने सच्चे कर्मों के साथ ऋण मुक्त हो। जिस देश की धरती ने उसे पाला-पोसा है, उसके उत्थान के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देना ही मनुष्य का प्रथम सत्कर्तव्य है। हीन और तुच्छ समझे जाने वाले उपादान भी अपने कर्तव्यों का लगन से पालन करते हैं, मानव तो बुद्धि-बल से परिपूर्ण है। कवि ने इस कविता के माध्यम से यही प्रेरणा हम सब मनुष्यों को दी है। अतः इस कविता का शीर्षक सार्थक एवं उपयुक्त है।

व्याकरण-बोध

- (क) (i) अंक — गोद, संख्या (गिनती)
(ii) पत्र — पत्ता, चिट्ठी
(iii) हल — समाधान, बैलों द्वारा जुताई करने का एक यंत्र।
(iv) प्रकृति — कुदरत, स्वभाव।

(ख) (i) अद्वितीय (ii) कर्महीन
(iii) उक्त्रण (iv) कृतज्ञ

(ग) (i) अति — अतिरिक्त, अत्यधिक। (ii) उप — उपयोग, उपवन।
(iii) स — सकुशल, सशरीर। (iv) स्व — स्वभाव, स्वचालित।

(घ) (i) आई — लड़ाई, पढ़ाई। (ii) ईला — गर्वीला, शर्मीला।
(iii) वाला — पानवाला, दूधवाला। (iv) पन — बचपन, अपनापन।
- (क) क्या खूब! तुमने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया।
(ख) हाय! बूढ़े को सहारा देने वाला अब कोई न रहा।
(ग) होशियार! आगे गहरी खाई है।
(घ) जीते रहो! भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे।
(ङ) बहुत अच्छा! तुम प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हो।
- (क) हमारे स्कूल में तुम-सा बुद्धिमान कोई दूसरा नहीं है।
(ख) मेरा एक छोटा-सा नटखट भाई है।
(ग) तुम्हारी एक हल्की-सी मुसकान पर तो सारी दुनिया न्योछावर है।
(घ) नागिन तो बलखाती-सी जा रही है।
(ङ) तुम आज गुमसुम-से क्यों बैठे हो?

लेखन-अभिव्यक्ति

अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से एक अनुच्छेद लिखवाएँ कि देश-भक्ति और मानव-कल्याण की भावना सभी धर्मों, भौतिक सुखों और व्यक्तिगत स्वार्थों की अपेक्षा महान होती है। इस आशय का एक अनुच्छेद निम्नवत है—

अपने देश के लिए मन में भक्ति-भावना रखना तथा प्राणी मात्र का कल्याण करना हमें एक उच्च कोटि का व्यक्ति बनाते हैं। भले ही हम किसी धर्म के अनुयायी हों, हमारी मातृभूमि हममें कोई अंतर नहीं देखती। अतएव उसके लिए आदर तथा प्रेम अन्य सभी भावनाओं से सर्वोपरि होता है। भले ही हमारे जीवन में धन-धान्य, विलासिता तथा आराम आदि के सभी साधन उपलब्ध हों। हम सभी भौतिक सुखों का उपभोग करने की क्षमता रखते हों, परंतु जो सच्चा सुख तथा शांति दूसरों के काम आने में मिलती है, वे इन साधनों से हम प्राप्त नहीं कर पाते। देशप्रेम और मानव-कल्याण दोनों ऐसी विशेषताएँ हैं, जो हर व्यक्ति में मौजूद नहीं होतीं अथवा होती भी हैं तो व्यक्तिगत स्वार्थ उन्हें पूरा करने में आड़े आ जाते हैं। अतः जब हम व्यक्तिगत स्वार्थ को पीछे छोड़ समष्टि के कल्याण हेतु सोचते हैं, तभी ये महान भावनाएँ उभर कर आती हैं।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से देश और देशवासियों के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले किन्हीं दो महान राष्ट्रीय नेताओं पर सचित्र प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन) तैयार करवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से कक्षा में सामूहिक चर्चा करवाएँ, जिसका विषय हो- 'सुखिया सब संसार है, खावै अरू सौवै।' (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को समाज के लिए कार्य करने वाले लोगों जैसे- पुलिस, अध्यापक आदि में से किसी एक का साक्षात्कार लेने के लिए प्रेरित करें। उसे संवाद रूप में विद्यालयी पत्रिका के लिए लिखवाएँ। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
4. अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्रों को उनके मानव धर्म से अवगत कराएँ और देश तथा समाज के प्रति उनके क्या कर्तव्य है और किस तरह से उन कर्तव्यों का पालन किया जा सकता है? अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखने को कहें। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
5. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से प्रकृति ने हमें वरदान स्वरूप क्या-क्या प्रदान किया है, से अवगत कराएँ साथ ही प्रकृति से प्रेरणा लेकर उन कार्यों को उनकी उत्तर पुस्तिका में लिखने को कहें जिनसे दूसरों को सुख का अनुभव मिला हो। (छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

उत्तर

अभ्यास

पृष्ठ 172 से 174

पाठ-बोध

1. मौखिक उत्तर

- (क) लेखक यानी पंडित जवाहरलाल नेहरू का बचपन एकाकी में व्यतीत हुआ।
- (ख) नेहरू जी की आरंभिक शिक्षा घर पर ही हुई।

- (ग) रेल में सफर करने वाले यूरोपियन के लिए रेल के अलग डिब्बे रिजर्व कर दिए जाते थे।
 (घ) बचपन में नेहरू जी ने अपने पिताजी की फ़ाउंटैन पेन चुरा ली थी।
 (ङ) दंड मिलने के कारण अपने पिताजी के प्रति नेहरू जी के मन में कोई बुरी भावना न थी।

2. अर्थ ग्रहण संबंधी

- | | |
|--------------------------------------|-------------------------------------|
| (क) (i) जवाहरलाल नेहरू जी | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ख) (iv) घर पर | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ग) (ii) एक अंग्रेज़ महिला | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (घ) (iv) पुराण, महाभारत और रामायण की | <input checked="" type="checkbox"/> |
| (ङ) (i) अपना जन्मदिन | <input checked="" type="checkbox"/> |

3. लिखित

लघु उत्तरीय—

- (क) नेहरू जी की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई जहाँ उनको मास्टर आकर पढ़ाया करते थे।
 (ख) नेहरू जी खुद को अकेला इसलिए समझते थे क्योंकि इनके जितने भी भाई थे सब उमर में बड़े थे और वे सभी हाई स्कूल या यूनिवर्सिटी में पढ़ते थे तथा अपने कामों या खेलों में नेहरू जी को शामिल नहीं करते थे।
 (ग) जवाहर को अंग्रेज़ों के व्यवहार की जानकारी अपने भाइयों से हुई जब वे लोग आपस में इस बात पर बहस करते थे कि किसी भी हिंदुस्तानी को अंग्रेज़ों या यूरोपवालों के किसी भी बात को सहने की आवश्यकता नहीं है।
 (घ) बालक जवाहर अपने पिता को बहुत मानता था। उसे अन्य लोगों की तुलना में अपने पिता शक्ति, साहस और चतुराई का नमूना जान पड़ते थे। बालक जवाहर बड़ा होकर अपने पिता की तरह बनना चाहता था।
 (ङ) अंग्रेज़ हिंदुस्तानियों के साथ बदतर व्यवहार करते थे। रेल में अंग्रेज़ों के लिए अलग डिब्बे रिजर्व होते थे और उसमें कोई हिंदुस्तानी प्रवेश नहीं कर सकता था, चाहे वे डिब्बे खाली ही क्यों न जाएँ। शहरों के पार्कों में यूरोपवालों व अंग्रेज़ों के लिए कुर्सियाँ अलग से रिजर्व होती थी। कोई भी अंग्रेज़ किसी भी हिंदुस्तानी को मार डालता था लेकिन उन पर कोई कारवाई नहीं होती थी।
 (च) नेहरू जी जी के मन में विदेशी शासकों के व्यवहारों और उनके हिंदुस्तान में रहने के कारण क्रोध तो था, मगर किसी अंग्रेज़ के लिए, कोई भी घृणा या क्रोध का भाव न था।
 (छ) बालक जवाहर की मरम्मत होने का कारण उनके पास से पिता जी की फ़ाउंटैन पेन का मिलना था जिसे काफ़ी ढूँढ़ने के बाद खोजा गया और इसी चोरी की वजह से बालक जवाहर पर उसके पिताजी नाराज़ हुए और उनकी खूब मरम्मत की।

दीर्घ उत्तरीय—

- (क) नेहरू जी को अपने भाइयों और बड़ों की बातें इसलिए समझ में नहीं आती थी क्योंकि वे उनकी बातों को पूरी तरह सुन नहीं पाते थे और आंशिक बातें सुनकर वे उन बातों का सार समझने में खुद को असमर्थ पाते। कभी पर्दे के पीछे से, कभी दीवारों की ओट से या तो कभी कहीं से छिपकर ही वह बड़ों की बातों को सुनकर समझने का प्रयास करते लेकिन वे उसमें असफल रहते।

- (ख) नेहरू जी के मन में किसी भी अंग्रेज़ के लिए घृणा या क्रोध का भाव इसलिए नहीं था क्योंकि बालक जवाहर लाल को पढ़ाने वाली और देखभाल करने वाली महिला अंग्रेज़ थी तथा उनके पिता के कई मित्र भी अंग्रेज़ थे जो उनसे मिलने आया था और बालक जवाहर को कभी भी इन लोगों के व्यवहार में कुछ दोष नज़र नहीं आता था।
- (ग) नेहरू जी के मन में अपने पिताजी के प्रति पूर्ण आस्था का भाव था। उन्हें पिताजी शक्ति, साहस और चतुराई का नमूना जान पड़ते थे। लेकिन जितना नेहरू जी अपने पिता से प्यार करते थे, उतना ही डरते भी थे। नेहरू जी के अनुसार उनके पिता का क्रोध भयानक था लेकिन उनमें विनोद और दृढ़ संकल्प का भी गुण था।
- (घ) परिवार वालों को रास्ते में मिले नेहरू जी बहादुर इसलिए लगे क्योंकि वे सकुशल थे और ठीक-ठाक थे जबकि बिना नेहरू जी को लिए टट्टू का अकेले घर जाना सभी को अर्चभित कर चुका था और सभी लोग इस दृश्य से परेशान थे इसी कारण सभी लोग आनन-फानन में नेहरू जी को ढूँढ़ने निकल पड़े थे। लेकिन जैसे ही नेहरू जी सबको सकुशल अवस्था में मिले तो सभी लोगों को वो वीर दिखाई पड़े क्योंकि उन लोगों को लगा कि टट्टू के बुरे बर्ताव से खुद को उन्होंने अकेले ही बचा लिया है।
- (ङ) नेहरू जी के लिए 'आनंद भवन' आनंदमय इसलिए रहा क्योंकि उसमें एक बड़ा तैरने का तालाब था, जिसमें नेहरू जी जल्दी ही तैरना सीख गए और उन्हें विशेष आनंद की अनुभूति मिली। गरमी के गरम और लंबे-लंबे दिनों में, जब उनका जी करता वे उस तालाब में डुबकी लगाया करते और इस प्रकार 'आनंद भवन' जो कि उनका नया घर था, उसमें उन्हें आनंद आने लगा।

व्याकरण-बोध

1. (क) सामान्य क्रिया
- (ख) संयुक्त क्रिया
- (ग) सामान्य क्रिया
- (घ) सामान्य क्रिया
- (ङ) पूर्वकालिक क्रिया

लेखन अभिव्यक्ति

हमारे पड़ोस में बुधिया नाम का एक मूक-बधिर बालक रहता है। उसके माता-पिता चलने-फिरने में असहाय है। इसलिए वह अपने माता-पिता की सेवा के साथ सच्ची लगन और कर्मठता से सुंदर खिलौनों को आकार देने का भी काम करता है। सचमुच उसके हाथों में जादू है। खिलौनों में सुंदर नक्काशियाँ भी करता है और बाज़ार में जाकर उन्हें बेचता है। उसका मुख्य उद्देश्य परिवार की आर्थिक सहायता करना है जिससे वह अपने माता-पिता को दो वक्त का खाना खिला सके। एक बार मेले में उसकी दुकान के आगे भीड़ को देखकर एक बड़े साहब ने उससे सारा खिलौना खरीद लिया तथा उसे और खिलौने बनाने को बोला। बुधिया खुश होकर घर आया और सारी बात अपने माता-पिता को बताया। उसके माता-पिता इस बात से बहुत खुश हुए। कुछ दिनों बाद वह साहब फिर आए और सारा खिलौना लेकर उसे खिलौने की कीमत से ज्यादा पैसे देकर जाने लगे और बोले, “शहर में इन खिलौनों की बहुत माँग है इसलिए और ज़्यादा बनाओ। मैं दो दिन बाद आकर फिर से सारे खिलौने ले जाऊँगा।” (यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्र के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

रचनात्मक-कौशल

1. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को पंडित जवाहर लाल नेहरू का चित्र बनाने को कहें साथ ही उनके संबंध में इंटरनेट या पुस्तकालय से सामग्री एकत्र कर उनकी उपलब्धियों के बारे में भी लिखने को कहें।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को विकलांगता से संबंधित आश्रय गृह में भ्रमण पर ले जाएँ और वहाँ रह रहे लोगों से उन्हें मिलवाएँ तथा कक्षा में प्रत्येक बच्चे से उनके बारे में वर्णन करने को कहें।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)
3. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों को युद्ध की विभीषिका के साथ मानवीय मूल्यों को समझाएँ और साथ ही छात्रों से युद्ध क्षेत्र में खड़े व्यक्ति की मनोदशा अपने परिवार के प्रति कैसी होती है, मित्रों के प्रति कैसी होती है या फिर राष्ट्र के प्रति उसकी क्या संवेदनाएँ जुड़ी होती है, अपने शब्दों में लिखवाएँ।
(छात्र इस कार्य को स्वयं करें।)

जीवन-कौशल

- | | | |
|--|-----------------------------|--|
| • 1. <input checked="" type="checkbox"/> | 2. <input type="checkbox"/> | 3. <input checked="" type="checkbox"/> |
| 4. <input checked="" type="checkbox"/> | 5. <input type="checkbox"/> | |

श्रवण/वाचन कौशल-4

1. छात्र स्वयं करें।
2. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से निर्देशानुसार करवाएँ।
3. अध्यापक/अध्यापिका छात्रों से पहले लिखवाएँ, फिर पढ़कर सुनाएँ तथा छात्रों से की गई अशुद्धियों को ठीक करने को कहें।
4. भारति, जय, विजय करे!
कनक-शस्य-कमल धरे!
लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर-तल,
धोता शुचि चरण-युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे।
तरु-तृण-वन-लता वसन
अंचल में खचित सुमन
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल धार हार गले।
मुकुट शुभ्र हिम-तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!

यातायात गतिरोध

1. यातायात संबंधी नियमों के होते हुए भी हमें यातायात-गतिरोध (ट्रैफिक जैम) जैसी समस्याओं से जूझना पड़ता है। इस समस्या के प्रमुख कारणों में शामिल हैं—
 - लाल बत्ती पर न रूकने की होड़ में वाहनों का जमावाड़ा।
 - वाहन चालकों द्वारा फुटपाथ को सड़क के रूप में बदल लेना।
 - वाहनों का आगे निकलने की होड़ में एक-दूसरे के साथ उलझना।
2. पैदल चलते समय हमेशा बाईं ओर चले। सड़क को पार करते समय हमेशा लाल बत्ती की प्रतीक्षा करें साथ ही ध्यान रखें कि सभी गाड़ियाँ रूक गई हो। ज्यादा से ज्यादा फुटपाथ का इस्तेमाल करें। जेब्रा कॉसिंग का प्रयोग हमेशा करें। सड़क पर चलते समय कभी भी कान में इयर फोन या हेडसेट का प्रयोग न करें।
3. वैज्ञानिक उन्नति ने हमारी यातायात व्यवस्था में परिवर्तन किया है, इसमें कोई संदेह नहीं है। वैज्ञानिक प्रगति का ही प्रतिफल है कि आज हम बैलगाड़ी की बजाय कार में, साइकिल की बजाय मोटर साइकिल में और नाव की जगह हवाई जहाज में सफ़र करने लगे हैं। वैज्ञानिक प्रगति ने हमारी परिवहन व्यवस्था को सुगम बना दिया है लेकिन दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही गाड़ियों की संख्या ने यातायात-गतिरोध को भी बढ़ा दिया है। लोगों की विकृत सोच और ज़रूरत से ज्यादा चतुरता यातायात-गतिरोध की समस्या को निरंतर बढ़ाने का काम कर रहे हैं।
4. हमारे विचार या हमारी मानसिकता यातायात को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती जा रही है। लोगों के द्वारा लाल बत्ती पर न रूकने की होड़ के कारण आए दिन ट्रैफिक जैम की समस्या में इज़ाफा होता जा रहा है। वाहन चालकों द्वारा सड़क पर होने वाले जाम की समस्या से उबरने के लिए फुटपाथ पर चढ़ जाना और एक नई तरीके से जाम को परिभाषित करना यातायात-गतिरोध की समस्या को आए दिन बढ़ाता जा रहा है। लोगों के द्वारा अपने वाहन को एम्बुलेंस के आगे-आगे रखकर चलना एक विकृत मानसिकता को दर्शाता है और इसी होड़ में एक-दूसरे के साथ होने वाली झड़प भी आए दिन यातायात-गतिरोध को बढ़ाने में एक भूमिका निभा रही है।
5. यातायात-गतिरोध की अगर बात की जाए तो जी हाँ यातायात-गतिरोध वायु प्रदूषण की समस्या को बढ़ाता है। लगातार जाम में लंबी कतारों में एक-दूसरे के पीछे खड़ी गाड़ियों से निकलने वाला धुआँ वायुमंडल को दूषित करता है। साथ ही वाहनों का शोर, हॉर्न आदि वायुमंडल में प्रदूषण के स्तर को बढ़ाने का काम करते हैं।

अभ्यास प्रश्न पत्र-1 (पाठ 1 से 10)

उत्तर

अभ्यास

खण्ड—‘क’ (अपठित बोध)

1. (क) भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने भाषा को सब प्रकार की उन्नति का मूल माना है।

- (ख) विदेश में अपनी भाषा सुनकर एक हल्की-सी स्मित स्वयमेव हमारे मुँह पर आ जाती है।
 (ग) हिंदी की स्थिति अपने ही देश में दयनीय है। यह भाषा अपने ही देश में धिक्कारी जाती है। अपने ही देश के लोगों को हिंदी बोलने में सकुचाहट होती है।
 (घ) 'मातृभाषा : उन्नति का मूल'।
2. (क) पुष्प देव कन्याओं के आभूषणों में नहीं गूँथा जाना चाहता है।
 (ख) फूल की यह इच्छा बिलकुल भी नहीं है कि वह देवताओं के सिर पर चढ़कर स्वयं के भाग्य पर इठलाए।
 (ग) पुष्प उस पथ पर शोभा पाना चाहता है जहाँ से अनेक वीर सैनिक अपनी मातृभूमि की रक्षा करने के लिए स्वयं का बलिदान करने के लिए जाते हैं।
 (घ) 'पुष्प की अभिलाषा'।

खण्ड- 'ख' (व्याकरण)

3. (क) हे प्रभु! कृपा करो।
 (ख) संयुक्त वाक्य।
 (ग) उपमा अलंकार
 (घ) हट्टा-कट्टा - गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, आदमी विशेष्य का विशेषण है।
 (ङ) 'सुनीता ने कलम खरीदा' - ने चिह्न - कर्ता कारक
4. (क) क्या आपको उसके लिए रूकने की आवश्यकता नहीं है।
 (ख) वात्सल्य, अतुल्य
 (ग) (i) अधजला (ii) परीक्षित
 (घ) प्रदक्षिणा - प् + र् + अ + द् + अ + क् + ष् + इ + ण् + आ
 शीशियाँ - श् + ई + श् + इ + य् + आँ
5. (क) मंद + अग्नि = मंदाग्नि
 हत + आशा = हताशा
 (ख) बेघर - अव्ययीभाव समास
 गोशाला - संप्रदान तत्पुरुष समास
 (ग) अधिकार - अनाधिकार
 प्रस्थान - आगमन
 (घ) रमेश के बड़े भाई साहब कल मथुरा जाएँगे
 (उद्देश्य) (विधेय)
6. (क) अग्नि - अण, पावन
 फूल - पुष्प, सुमन
 (ख) परीक्षा + इत = परीक्षित
 विलायत + ई = विलायती
 (ग) वि + ज्ञापन = विज्ञापन
 अन + अर्थ = अनर्थ

खण्ड-‘ग’ (पाठ्यपुस्तक)

7. (क) कविता – ‘वह तोड़ती पत्थर’

कवि – सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’

(ख) भारी हथौड़े से वह स्त्री पत्थर पर प्रहार कर रही है।

(ग) उस स्त्री के सामने पेड़, ऊँचे भवन, भवन के चारों ओर रास्ता है।

8. (क) श्रीराम के मुख-मंडल के सौंदर्य का वर्णन करते हुए तुलसीदास जी कहते हैं कि जैसे बादलों में बिजली चमकती है, वैसे ही श्रीराम के मुख खोलने पर दाँतों की कांति दिखाई देती है। उनके मुख पर घुँघराले बालों की लटें लटक रही हैं और कुंडल उनके कपोलों (गालों) को स्पर्श करते हुए सुंदर दिखाई दे रहे हैं। उनके मुख पर आँखें ऐसी लग रही हैं, जैसे भौरें कमल से पराग रस पी रहे हों।

(ख) आमाँ की मंजरी कवि को स्वर्ण और रजत अर्थात् सुनहरी और चाँदनी रंग जैसी दिखाई पड़ती है।

(ग) कवि ने कविता में गर्मियों के मौसम का वर्णन किया है।

(घ) प्रस्तुत कविता में गाँव की हरियाली और प्राकृतिक सौंदर्य व दृश्य का सुंदर चित्रण किया गया है। जब सरदी का आगमन होता है, तो लोग आलसी बनकर सुख से सोए रहते हैं। तारों को देखकर ऐसा आभास हो रहा है, मानो वे सपनों की दुनिया में खोये हैं। इस आकर्षक और मनोहर वातावरण में पूरा गाँव ‘मरकत डिब्बे-सा खुला’ अर्थात् पन्ना नामक रत्न के जैसा प्रतीत हो रहा है, जो मानो नीला आकाश से आच्छादित है।

9. (क) ‘जो मार खा रोई नहीं’ पंक्ति से कवि ने स्त्री की उस दशा का वर्णन किया है जब वह अपनी विवशता के सारे उत्पीड़न को अंदर ही अंदर सह लेती है और अपने भाव को कवि पर व्यंजित कर देती है।

अथवा

प्रस्तुत कविता में खेतों की हरियाली को मखमल-सी कहा गया है अर्थात् यह हरियाली खेतों में उग रहे फसलों का एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करते हैं जिसमें सूर्य की किरणें एक अलग अंदाज में अपनी छटाओं को बिखरेती हैं। ये फसलें जब अपने नाजुक अवस्था से आगे बढ़ती हैं, तो खेतों में कई तरह के विहंगम दृश्य देखने को मिलते हैं और उसी में सरसों के पीली-पीली फूलों की उड़ती भीनी महक संपूर्ण वातावरण को सुगंधित कर देती है।

10. (क) भारतवर्ष में भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया गया है।

(ख) मनुष्य के अंदर लोभ, मोह, काम, क्रोध आदि विकार स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं।

(ग) गद्यांश के आधार पर ‘चरम’ और ‘परम’ से तात्पर्य मनुष्य के अंदर विद्यमान आंतरिक तत्वों से है, जो भौतिकवादी वस्तुओं को महत्वहीन बताता है।

(घ) मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान विकार को प्रधान शक्ति मान लेना और मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना निकृष्ट आचरण है।

11. (क) हीरा और मोती ने काँजीहौस की दीवार को अपने सींग से लगातार वार करते हुए गिरा दिया और इस तरह से कई जानवरों को मुक्त किया।

(ख) बैजू बावरा तानसेन से बदला इसलिए लेना चाहता था क्योंकि तानसेन के शर्त के कारण ही उसके बाबा को मृत्युदंड की सजा हुई थी।

(ग) हाँ, लेखक को बस वाली घटना के पश्चात् मनुष्यता पर फिर से दृढ़ विश्वास हो गया क्योंकि जहाँ एक ओर बस के अचानक सुनसान जगह पर खराब हो जाने की वजह से लोग कंडक्टर और ड्राइवर को

गलत समझ रहे थे साथ ही ड्राइवर को मारने पर उतारु थे वहीं कुछ क्षण पश्चात् कंडक्टर द्वारा नई बस लेकर आने और साथ ही लेखक के भूखे-प्यासे बच्चों के लिए दूध और पानी लाने के साथ-साथ समय से गंतव्य स्थान पर पहुँच जाने के कारण लेखक को मनुष्यता पर दृढ़ विश्वास हो गया था।

(घ) भोलाराम की मृत्यु का कारण गरीबी की बीमारी थी। घर की परिस्थितियों से भोलाराम चिंतित रहने लगा था। इसी चिंता और भूख ने उनसे उनके प्राण छीन लिए।

12. (क) लेखिका ने गिल्लू का घर फूल रखने की एक डलिया में रुई बिछाकर उसे तार की खिड़की पर लगाकर बनाया। जिसमें गिल्लू आराम से रहता और उसे स्वयं हिलाकर झूलता रहा और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और बाहर कुछ देखता रहता और स्वयं कुछ समझता रहता।

अथवा

एफ़िम यरुशलम पहुँचकर वहाँ के गिरजाघर में प्रार्थना करने पहुँचा। गिरजाघर के भीतरी भाग में छत्तीस दीपक जल रहे थे। दीपकों के प्रकाश के पीछे एफ़िम ने एक वृद्ध व्यक्ति की झलक देखी जो बिलकुल एलिशा की तरह प्रतीत हो रहा था। इस दृश्य को देखकर एफ़िम आश्चर्यचकित रह गया।

खण्ड-‘घ’ (सृजनात्मक लेखन)

13. 140, गीता कॉलोनी,

दिल्ली।

दिनांक 29.11.20××

प्रिय बलराम,

सप्रेम नमस्कार!

मैं तुम्हारा हृदय से आभारी हूँ कि तुमने मेरे छोटे भाई मनमोहन की खूब सेवा की। बीमारी में आदमी को अपनों की बहुत याद आती है। तुमने उसे इस तरह सहारा दिया कि उसने छात्रावास में खुद को अकेला नहीं महसूस किया।

प्रिय बलराम, इस पत्र में मैं तुम्हें डेंगू में करने योग्य कुछ कार्यों की जानकारी दे रहा हूँ। डेंगू मच्छर स्वच्छ पानी में ही बैठता है। यह चार-पाँच बजे शाम के समय में काटता है। इससे बचने के लिए हर समय पूरी आस्तीन की कमीज़ तथा पैट पहनो। रात और दिन में भी मच्छरदानी का प्रयोग करो। नमक, चीनी और नींबू मिलाकर खूब पानी पिओ। रोज़ पत्तों वाली ताज़ी सब्ज़ियाँ खाओ। बुख़ार होने की स्थिति में अपने-आप से कोई दवा न लो, चिकित्सक की सलाह लो। अपने मन से भय निकाल दो। ज़रूरत पड़े तब डॉक्टर के पास जाओ। रोगी के कमरे में सदा सफ़ाई रखो। कहीं भी पानी जमा न होने दो। ताज़ा खाना खाओ। ये बातें सदा ध्यान में रखोगे, तो तुम डेंगू बुख़ार से बचे रहोगे। दिल्ली में बड़े भयंकर रूप से डेंगू बुख़ार फैला हुआ है। रोज़ाना सरकारी तौर पर विज्ञापन दिया जा रहा है। इस बार इतना ही। जब मिलेंगे, तो जमकर बातें होंगी। तुम दिल्ली कब आ रहे हो? जल्द पत्र लिखकर मुझे बताओ।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

हर्षित प्रधान

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

14. (क) लड़कियों के लिए शिक्षा का महत्व

लड़कियाँ समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग हैं। एक लड़की को शिक्षा मिले, तो मानो पूरा परिवार पढ़ता है और परिवार के पढ़ने से समाज और देश पढ़ता है। आज शायद ही कोई ऐसा पुरातनपंथी होगा, जो स्त्री शिक्षा का विरोधी हो। समाज और देश की उन्नति में जितना योगदान पुरुषों का है, उतना ही स्त्रियों का भी। शिक्षा की रोशनी से मन तथा बुद्धि पर छाए कुसंस्कारों तथा अज्ञानता के अँधेरे छूट जाते हैं। अतः शिक्षा सभी का अनिवार्य अधिकार है। लड़कियाँ शिक्षित होती हैं, तो घर और बाहर दोनों क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से सब सुव्यवस्थित कर देती हैं। देश के विकास में उनका योगदान बढ़ता है, तो देश भी उन्नति करता है। शिक्षा से लड़कियों में स्वालंबन बढ़ता है, उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास होता है तथा कठिनतम और कठोरतम परिस्थितियों में भी वे अपना मानसिक संतुलन बनाकर रखती हैं। आज वे लगभग हर व्यावसायिक क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। दहेज जैसे शैतान को पछाड़ने में उनकी शिक्षा ने अहम योगदान दिया है। अब लड़कियाँ क्षमा और सहनशीलता का ही पर्याय न रहकर सुशिक्षित दुर्गा बन रही हैं।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

(ख) वृक्षों का हास- मानव का विनाश

प्राचीन काल में धरती पर चारों तरफ़ हरे-भरे वृक्ष और हरियाली थी। प्रकृतिप्रदत्त सभी वस्तुएँ जो प्राणियों के लिए चाहिए थीं, वे सभी मौजूद थीं। प्राकृतिक संतुलन बना हुआ था। काफ़ी मात्रा में जीव-जंतु थे। ऋतुओं का परिवर्तन उचित समय पर हो जाता था।

मानव ने अपने बुद्धिबल से विज्ञान का विकास कर लिया। विज्ञान के उत्थान और विकास के साथ ही जनसंख्या भी बढ़ी, जिसकी उदरपूर्ति हेतु व लोभवश मानव वनों को काटने लगा और बड़े-बड़े उद्योग स्थापित करने लगा। रिक्त भूमि के अभाव के कारण मनुष्य वनों का कटाव अंधाधुंध करने लगा। बस्तियाँ बसने लगीं, सड़कें, नहरें, बाँध, रेल, कारखाने आदि बनने लगे। इन सबके कारण धरती पर प्रदूषण बढ़ने लगा है। प्रदूषण भी कई प्रकार का होने लगा है। नतीजा यह है कि प्राकृतिक संतुलन खत्म होने से जलवायु में परिवर्तन हो गया है। कहीं अतिवृष्टि, तो कहीं सूखा पड़ रहा है। खेती योग्य ज़मीन की कमी की वजह से अन्न कम पैदा होने लगा है, जिसकी वजह से लोग भूखे मरने लगे हैं। पीने के लिए स्वच्छ पानी का अभाव हो गया है, स्वच्छ वायु का अभाव हो गया है और लोगों को अनेक प्रकार की बीमारियों ने घेर लिया है। परिणामस्वरूप वनों के हास से मनुष्य का विनाश चारों तरफ़ होने लगा है। अतः हमें वनों का विनाश रोकना चाहिए, नहीं तो मानव का विनाश निश्चित है।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

(ग) मानवता सर्वोत्तम गुण है

भगवान ने हम सबको एक समान बनाया है, परंतु धरती पर आकर मनुष्य में छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, ऊँच-नीच आदि का भेदभाव पैदा हो गया। जो मनुष्य अपने कल्याण के लिए ही कार्य करता है, वह मनुष्य स्वार्थी है। जो मनुष्य अपने स्वार्थ आदि को त्यागकर दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करता है, असहाय, निर्धनों की सेवा व सहायता करता है, वह परोपकारी होता है। कल्याण, सद्भावना, प्रेम, दया, सहायता आदि भाव ऐसे व्यक्ति में ही होते हैं। इसी भावना का दूसरा नाम है— मानवता अर्थात् मनुष्य की मनुष्य के प्रति रखने वाली भावना को ही 'मानवता' या 'मनुष्यता' कहते हैं।

'मानवता' की भावना रखने वाले मनुष्य का हर जगह सम्मान होता है। समाज, राष्ट्र व विश्व में उसको प्रशंसा व ख्याति मिलती है। मानवता की भावना रखने वाले व्यक्ति में दया, धर्म, सत्य, अहिंसा और प्रेम आदि गुण पाए जाते हैं। मानवता के कार्य करने वाला व्यक्ति अपना सुख-चैन आदि सब कुछ त्यागकर देता है और सदा दूसरों की सहायता तथा दुख दूर करने के लिए तत्पर रहता है तथा ऐसे अन्य उपायों के बारे में सोचता रहता है। ऐसे

ही व्यक्ति महान बनते हैं तथा अंत में महापुरुष कहलाने लगते हैं, क्योंकि मानवता सर्वोत्तम गुण है।
(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

(घ) कभी कोई बीमार न पड़े

धरती पर जन्म, मनुष्य को पुण्य कर्मों से ही मिलता है। यह बात हर कोई जानता है इसलिए यह जीवन हर एक मनुष्य के लिए बड़ा ही मूल्यवान है। यह ईश्वर की ही देन है। इसलिए मनुष्य भगवान से दिन-रात प्रार्थना करता रहता है कि वह उसे सदा सुखी और स्वस्थ रखे। उसे कभी कोई बीमारी न हो।

कोई भी व्यक्ति बीमार होना नहीं चाहता, क्योंकि बीमार हो जाने पर समय की बरबादी, पैसे की बरबादी और शारीरिक कष्ट भी मिलता है। काम-काज बंद करना पड़ता है। जिससे आय में कमी होती है तथा पैसे की तंगी हो जाती है। कभी-कभी तो ज्यादा तंगी हो जाने से मनुष्य ऋणग्रस्त तक हो जाता है।

ऋणग्रस्त होने से हर समय घर में क्लेश रहता है। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई बंद होने की स्थिति आ जाती है। बच्चों का विकास रुक-सा जाता है।

सदा स्वस्थ रहने और शरीर को नीरोग रखने के लिये खुली हवा में टहलना, समय पर भोजन करना और समय पर सोना चाहिए। हर काम उचित समय पर और नियमानुसार करें, तो मानसिक तनाव से तो मुक्ति मिलती है व्यक्ति स्वस्थ भी रहता है तब आप सदा अपने मूल्यवान जीवन को हर्षोल्लास के साथ आनंदपूर्वक पूरा-पूरा भोग सकते हैं। इसलिए कोशिश करनी चाहिए कि कभी बीमार न पड़ें।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

15. परीक्षा को लेकर दो छात्रों के मध्य होने वाला संवाद—

- पहला छात्र — आज तुम खेलने नहीं आए। आज तो रविवार था।
- दूसरा छात्र — हाँ, रविवार तो था, परंतु परीक्षा भी तो 2 जनवरी से आरंभ है।
- पहला छात्र — यह तो मैं भी जानता हूँ मगर परीक्षा के लिए इतने परेशान होने की आवश्यकता नहीं। खेलना बंद कर दोगे, तो तुम्हारा स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा।
- दूसरा छात्र — मैंने परीक्षा का रूटीन बना लिया है। अब मैं रोज़ पापा जी के साथ आधा घंटे के लिए टहलने जाता हूँ।
- पहला छात्र — हाँ, मित्र तुम ठीक कहते हो, मगर मेरे पापा जी तो बिजनेसमैन हैं। मैं किसके साथ टहलने जाऊँगा?
- दूसरा छात्र — तुम ऐसा करो। रोज़ चार बजे का अलार्म लगाकर सोना। चाय पीकर छह बजे तक पढ़ना फिर मेरे यहाँ आ जाना। हम दोनों पापा जी के साथ टहलने चलेंगे।
- पहला छात्र — ठीक, मैं कल से ऐसा ही करूँगा। मगर यह तो बताओ कि ये परीक्षाएँ होती क्यों हैं?
- दूसरा छात्र — वाह! दोस्त तुम अभी तक इतना न समझ पाए। मेरे दोस्त जीवन जीना भी एक सबसे बड़ी परीक्षा है, जिसने मुसीबतों को झेल लिया, उसका जीवन सुखी हो गया।
- पहला छात्र — ज़रा विस्तार से परीक्षा की उपयोगिता बताओ।
- दूसरा छात्र — सुनो, परीक्षा से डरो नहीं। परीक्षा तो स्वयं का आत्मपरीक्षण है। तुमने कितना ज्ञान अर्जन कर लिया है। परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने पर हम सफलताओं की सीढ़ियों पर चढ़ते जाते हैं और कामयाब इंसान बन जाते हैं। हम जीवन के जोखिमों को सहने और उन्हें हल करने में सक्षम इंसान बन जाते हैं।
- पहला छात्र — ठीक, अब मैं समझ गया। कल से मैं जरूर आऊँगा। अब मैं चलता हूँ।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

16.

सेना में भर्ती होकर देश का गौरव बढ़ाओ,
जीवन में खुशियाँ भरो और आनंद मनाओ।
देश को तुम पर अभिमान है,
तुम्हीं वीरों से देश की शान है।

- भर्ती प्रारंभ - 15-1-20×× से
- समय - प्रातः 8:00 बजे
- अंतिम तिथि - 31.1.20××
- स्थान - दिल्ली कैंट, दिल्ली।



भारतीय सेना भर्ती बोर्ड,
दिल्ली

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

अभ्यास प्रश्न पत्र-2 (पाठ 11 से 20)

उत्तर

अभ्यास

खण्ड-‘क’ (अपठित बोध)

1. (क) तुलसीदास ‘रामचरितमानस’ के रचयिता हैं।
(ख) राम के चरित्र में उदात्त युवक, आज्ञाकारी शिष्य, आदर्श पुत्र, स्नेहिल भ्राता, एक-पत्नीव्रती, उदार तथा आदर्श मित्र जैसे गुणों का समावेश है, जो उन्हें महानायक का दर्जा प्रदान करता है।
(ग) आजकल उलटे-सीधे कथानकों के साथ बनाए जा रहे टी०वी० सीरियल को देखकर लोगों को लगता है कि उन्होंने यह ग्रंथ पढ़ लिया है।
(घ) ‘रामचरितमानस और राम’
(ङ) ‘अपने पद से हटना’ वाक्यांश के लिए इस गद्यांश में ‘अपदस्थ’ शब्द का प्रयोग किया गया है।
2. (क) पंथी यह सोचकर जल्दी-जल्दी चल रहा है, क्योंकि उसे लग रहा है कि मंजिल अब दूर नहीं है।
(ख) चिड़िया को यह लग रहा है कि उसके बच्चे उसकी प्रतीक्षा में होंगे और यही विचार उसके पंरों में चंचलता भर रहा है।
(ग) ‘पंथी’ शब्द का पर्यायवाची शब्द ‘यात्री’ होता है।
(घ) ‘निशा का आमंत्रण’
(ङ) दिन के ढलने पर चिड़िया के बच्चे नीड़ों से झाँक रहे होंगे।

खंड-‘ख’ (व्याकरण)

3. स्थलीय - स् + थ् + अ + ल् + ई + य् + अ
पड़ोसियों - प् + अ + ड् + ओ + स् + इ + य् + ओं

4. (क) विलोम शब्द — सावधान × असावधान
कृत्रिम × प्राकृतिक/नैसर्गिक
(ख) पर्यायवाची शब्द — पत्थर — प्रस्तर, पाहन
निर्मल — स्वच्छ, साफ़
5. (क) मानक रूप — विद्यालय — विद्यालय
वृद्धि — वृद्धि
(ख) अनुस्वार, अनुनासिक — चंद्रमा — चंद्रमा
हसी — हँसी
(ग) संधि-विच्छेद — सूर्योदय = सूर्य + उदय
वर्तुलाकार = वर्तुल + आकार
(घ) समास-विग्रह, समास का नाम — चरणकमल — कमल जैसे हैं जो चरण — कर्मधारय समास।
(ङ) वाक्यांश के लिए एक शब्द — (i) जिज्ञासु (ii) आपबीती
6. (क) परिवर्तन — 'परि'— उपसर्ग, 'वर्तन'— मूल शब्द
अपशब्द — 'अप'— उपसर्ग, 'शब्द'— मूल शब्द।
(ख) रक्षक — 'रक्षा'— मूलशब्द, 'अक' प्रत्यय
चमचागिरी — 'चमचा', मूल शब्द 'गिरी' प्रत्यय ।
(ग) वाक्य का शुद्ध रूप — उसकी ख्याति देशभर में फैली है।
(घ) सरल वाक्य — रास्ते में भीड़-भाड़ होने के कारण मैंने आने का कार्यक्रम रद्द कर दिया।
(ङ) मिश्र वाक्य।
7. (क) बाँध ली
(ख) फूटी आँख नहीं
8. गाँव में रमेश की कोई पूछ न थी, पर शहर आने पर सभी उसकी बुद्धिमानी की तारीफ़ करने लगे। गाँव वालों के लिए वह घर की मुर्गी दाल बराबर था।
9. (क) विधानवाचक वाक्य
(ख) प्रश्नवाचक वाक्य
10. (क) अपादान कारक
(ख) अधिकरण कारक

खण्ड—'ग' (पाठ्यपुस्तक)

11. (क) कवि का नाम 'रामनरेश त्रिपाठी' और कविता का नाम 'सत्कर्तव्य' है।
(ख) चंद्रमा अमृत बरसाता है।
(ग) कवि ने तिनके के जीवन को लघु कहा है।
(घ) सूर्य सबको प्रकाश देने का कार्य करता है।
(ङ) प्रकृति के सभी उपादान अपना-अपना सत्कर्तव्य करते हैं।
12. (क) कवि रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार यह संसार मनुष्य के लिए एक परीक्षा स्थल है। यहाँ पर उसके धैर्य, संयम, विवेक एवं ज्ञान की परीक्षा हर समय होती रहती है।

(ख) कवि ने मनुष्य को स्वार्थी इसलिए कहा है, क्योंकि मनुष्य स्वयं अपने सुख-दुख के बारे में ही सोचता रहता है। अपने ही सुख-साधनों को एकत्र करने में लगा रहता है। वह सदा अपने ही हित की पूर्ति में लगा रहता है तथा दूसरों के दुख-दर्द व हित के बारे में नहीं सोचता। अपने अधिकार की माँग करता है और कर्तव्य भूल जाता है।

(ग) मनुष्य का प्रथम सत्कर्तव्य यह है कि उसे अपने देश और जाति से उन्नत होना चाहिए, जिसने उसे पाला-पोसा है। अपने देश एवं जाति के उत्थान के लिए मनुष्य को अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

13. (क) यह गद्यांश 'चाँदी का जूता' नामक पाठ से लिया गया है।

(ख) रमा और सुरेश का परस्पर माता-पुत्र का संबंध था। रमा 'माँ' थी तथा सुरेश उसका बेटा था।

(ग) शादी का निर्मंत्रण पत्र न मिल पाने के कारण लेखक शादी में नहीं पहुँच पाया।

(घ) सुनीता ने मोहन को स्वयं धक्का दिया और मोहन से बोली, "सीधा खड़ा होना सीखो।" यह तो वही बात हुई कि उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

14. (क) डॉ० पूरन चंद टंडन जी ने बच्चों के लिए संदेश दिया है कि वे अपनी मानसिकता साधन-जीवी नहीं रखें, बल्कि उन्हें अपनी मानसिकता साधना-जीवी रखनी चाहिए। उन्हें अपनी मातृभाषा हिंदी के प्रति भावनात्मक लगाव भी रखना चाहिए।

(ख) पूर्वोत्तर भारत के राज्य हिमालय के पूर्वी छोर में स्थित है। यह समस्यत प्रदेश पहाड़ी है इसलिए यहाँ के घर मैदानों की तरह एक कतार में नहीं होते। दो पहाड़ों के बीच जो घाटी प्रदेश होती है वहाँ जनसंख्या का बसाव होता है। इसलिए एक घाटी से दूसरी घाटी तक पहुँचना दुभर होता है। इन लोगों के एक-दूसरे से कटे होने के कारण उनकी भाषा, उनकी पोशाक, उनके रहन-सहन में विविधता देखने को मिलती है।

(ग) ऊँचे पहाड़ों अथवा हिममंडित शिखरों पर चढ़ना पर्वतारोहण कहलाता है। ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ने के लिए रास्ता व्यक्ति को स्वयं बनाना पड़ता है। अतः इसकी अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं— निपुणता, कौशल, तत्परता, सजगता, धैर्य, साहस तथा उचित प्रशिक्षण।

(घ) सर जगदीशचंद्र बोस को सन् 1920 में रॉयल सोसाइटी का सदस्य चुना गया।

15. सर जगदीशचंद्र बोस ने जब कोलकाता के प्रेसिडेंसी कॉलेज में भौतिकी पढ़ाना प्रारंभ किया तो उन्हें पता चला कि अंग्रेजों की तुलना में उन्हें कम वेतन दिया जा रहा है, तो उन्होंने इस अन्यायपूर्ण रवैये का विरोध करते हुए तीन वर्ष तक बिना वेतन लिए अध्ययन और अध्यापन का कार्य पूरी ईमानदारी के साथ निभाया। उनके इस सत्याग्रह का अंग्रेजों पर प्रभाव पड़ा और उन्हें अंग्रेजों के समान वेतन दिया जाने लगा।

अथवा

वेंकटेश्वर राव दहेज के विरोधी थे। वे अपने बेटे की शादी में तो दहेज लेना नहीं चाहते थे, परंतु उन्हें अपनी पत्नी रमा के दबाव में आकर दहेज माँगना पड़ा। इसके फलस्वरूप उन्हें साठ हजार रुपये सहित चाँदी का बना 'ऐश-ट्रे', जो उलटे पैर के जूते की आकृति का था, मिला जिसको उन्होंने अपने थोथे आदर्शों का उपहास करने वाला अविस्मरणीय चिह्न कहा था।

खंड-‘घ’ (सृजनात्मक लेखन)

16. 205, जनकपुरी,

पश्चिमी दिल्ली।

नई दिल्ली।

दिनांक : 30.11.20××

सेवा में,

श्रीमान् चेयरमैन,

पश्चिमी दिल्ली, क्रिकेट अकादमी,

जनकपुरी, नई दिल्ली।

विषय : क्रिकेट प्रशिक्षण संबंधी जानकारी हेतु पत्र।

महोदय,

मैं आपकी अकादमी में क्रिकेट का प्रशिक्षण लेना चाहता हूँ। अकादमी में प्रवेश हेतु आवश्यक जानकारी मेरे उपरिलिखित पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें। मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

धन्यवाद!

रोहित।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

अथवा

36, जनकपुरी,

पश्चिमी दिल्ली।

नई दिल्ली।

दिनांक : 30.11.20××

सेवा में,

श्रीमान् महानिदेशक,

दिल्ली दूरदर्शन

नई दिल्ली।

विषय : विकलांग बालक की सहायता हेतु पत्र।

महोदय,

मेरे पड़ोस में सुशील कुमार नामक बालक रहता है। वह बहुत गरीब है, मगर सुर-सम्राट तानसेन के समान प्रतिभाशाली है। उस साधनविहीन बालक को दूरदर्शन द्वारा अपनी कला को लोगों तक पहुँचाने का अवसर देकर उसकी सहायता करने की कृपा करें।

धन्यवाद!

मोहित कुमार।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

17. संवाद

- शशांक – हैलो मित्र, क्या कर रहे हो?
- धुर्वेश – मैं सो रहा हूँ। आज रविवार है इसलिए मार्केट बंद है।
- शशांक – तो आ जाओ हमारे यहाँ गरमा-गरम पकौड़े खाते हैं।
- धुर्वेश – अच्छा, आता हूँ। वैसे तुम अभी क्या कर रहे हो?
- शशांक – मैं तो भाई हमेशा की तरह बिस्तर पर लेटा हुआ हूँ।
- धुर्वेश – अरे! तुम क्यों बिस्तर पर पड़े हो? तुम्हारा भी आज अवकाश है?
- शशांक – हाँ, भाई यही समझ लो। अपना तो समाज-सेवा का काम है। जब कोई बुलाने आ जाता है, तो जाना पड़ता है। वैसे हमें भी समाज में घूमना पड़ता है।
- धुर्वेश – तुम्हारा काम अच्छा है। आराम ही आराम है।
- शशांक – सो तो है। लोकप्रियता भी है, आदर-सम्मान भी है, मगर पैसा नहीं है। पैसा तो आप लोगों के पास है।
- धुर्वेश – क्या मित्र दुखी रहता हूँ। सुबह आठ बजे उठकर दुकान खोलना और रात को ग्यारह-बारह बजे घर को आना। थक हार कर आता हूँ और आते ही सो जाता हूँ।
- शशांक – अच्छा धनी व्यापारी बनने के लिए परिश्रम तो करना ही पड़ेगा।
(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

18.

30.11.20××।

सूचना

केंद्रीय विद्यालय, दिल्ली

मैं अपने विद्यालय के सभी सहपाठियों को सूचित करता हूँ कि मेरी कुछ चीज़ें- लंच बॉक्स, पानी की बोतल और हिंदी की किताब अर्धावकाश में विद्यालय में गुम हो गई हैं। जिसको भी मिले, वे प्रधानाचार्य के पास जमा कर दें या मुझे देने की कृपा करें।

धन्यवाद सहित।

आपका सहपाठी

दिनेश कुमार

आठवीं- 'अ'

अनुक्रमांक- 40

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

19. रंग-बिरंगे फूल हैं जिसमें,

वह माला है भारत देश।

एक ही हैं हम एक रहेंगे,

भिन्न भले अपना परिवेश।

(यह प्रतिदर्श उत्तर है। छात्रों के उत्तर इससे भिन्न हो सकते हैं।)

उत्तर

- | | |
|-----------------------|-------------------|
| 1. मौखिक | 2. 14 सितंबर |
| 3. पंजाबी भाषा | 4. ऑ |
| 5. क्ष, त्र, ज्ञ, श्र | 6. अंतःस्थ व्यंजन |
| 7. शृंगार | 8. तीन |
| 9. पाँच प्रकार की | 10. परि + आवरण |
| 11. भगवत् + गीता | 12. कबूतर |
| 13. तत्सम | 14. सिनेमाघर |
| 15. कुल | 16. दिवस |
| 17. कण | 18. पुष्प |
| 19. निराकार | 20. शाश्वत |
| 21. पाक्षिक | 22. उपसर्ग |
| 23. अत्याचार | 24. प्रत्यय |
| 25. तत्, ईन | |

योग्यता आधारित प्रश्न

गद्यांश – 1

- | | |
|-----------------------|--|
| (क) बाधक | (ख) वैध एवं अवैध दोनों आय-स्त्रोतों से |
| (ग) स्विस् बैंकों में | (घ) काले धन का |

गद्यांश – 2

- | | |
|-------------------------|----------------------------|
| (क) हिंसा को | (ख) वह शक्तिप्रिय होता गया |
| (ग) वैज्ञानिक प्रगति का | (घ) शांतिकाल में |

काव्यांश – 1

- | | |
|------------------|-------------------------------|
| (क) अपमानित | (ख) कवि के सच बोलने का |
| (ग) कोई दुर्घटना | (घ) स्वयं को ही लौटा हुआ पाना |

काव्यांश – 2

- | | |
|--------------|--------------------------------|
| (क) निर्झर | (ख) सुख व दुख |
| (ग) उसकी गति | (घ) जिस दिन उसकी गति रुक जाएगी |